ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले पुस्तकालय के प्रभावों का अध्ययन : इटावा जनपद के महाविद्यालयों के परिप्रेक्ष्य में

विषय पर

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान

में

मास्टर ऑफ फिलोस्फी

की

उपाधि हेतु

शोध प्रबंध

शोधार्थी

प्रीती

नामांकन संख्या– 1367/16

शोध पर्यवेक्षक

प्रो० शिल्पी वर्मा

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

(सूचना विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी विद्यापीठ)

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ।

(2018)

घोषणा पत्र

मैं **प्रीती** घोषणा करती हूं कि बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग में मास्टर ऑफ फिलोस्फी की उपाधि हेतु मेरे द्वारा **"ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले पुस्तकालय के प्रभावों का अध्ययन : इटावा जनपद के महाविद्यालयों के परिप्रेक्ष्य में"** विषय पर प्रस्तुत शोध कार्य मेरा मौलिक शोध कार्य है, जिसे मैंने परिश्रम पूर्वक पूर्ण किया है। शोध कार्य में दी विषय वस्तु पूर्व में किसी अन्य डिग्री अथवा अन्य किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं किया गया।

मैं यह भी जिम्मेदारी लेती हूं कि बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग में मेरे द्वारा जमा किया गया शोध कार्य मास्टर ऑफ फिलोस्फी (एम0फिल0) नियमावली 2015 में निर्धारित आवश्यकताओं को पूर्ण करता है तथा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग में मास्टर ऑफ फिलॉस्फी की उपाधि हेतु शोध कार्य जमा करने एवं मूल्यांकन के लिए उपयुक्त है।

यह भी प्रमाणित किया जाता है कि दिनांक 24–05–2018 को पूर्व–जमा (Pre Submission) प्रस्तुती के दौर डीआरसी के द्वारा दिए गए सभी सुझावों को मेरे शोध कार्य में समाविष्ट कर लिया गया है।

Preeti

दिनांक – 2-08-2018

स्थान – लखनऊ

(प्रीती)

शोध छात्रा

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **प्रीती** के द्वारा **"ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले पुस्तकालय के प्रभावों का अध्ययन : इटावा जनपद के महाविद्यालयों के परिप्रेक्ष्य में"** विषय पर प्रस्तुत शोध प्रबंध एक मूल शोध कार्य है एवं शोध का कोई भाग अथवा पूर्ण शोध किसी अन्य डिग्री या डिप्लोमा हेतु इस विश्वविद्यालय अथवा अन्य विश्वविद्यालय में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ में प्रस्तुत किया गया यह शोध कार्य मास्टर ऑफ फिलोस्फी (एम0फिल0) नियमावली 2015 में निर्धारित आवश्यकताओं को पूर्ण करता है तथा विश्वविद्यालय के पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग में मास्टर ऑफ फिलॉस्फी की उपाधि हेतु शोध कार्य जमा करने एवं मूल्यांकन के लिए उपयुक्त है।

विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित मानकों के अनुसार लघु शोध पूर्ण किया है। प्रस्तुत लघु शोध कार्य (सत्र 2016–18) पूर्णतः एक मौलिक अध्ययन है।

पूर्व–जमा (Pre Submission) प्रस्तुती के दौर डीआरसी के द्वारा दिए गए सभी सुझावों को परीक्षार्थी द्वारा समाविष्ट कर लिया गया है।

शिल्पी

शोध पर्यवेक्षक

दिनांक – 2/8/2018

स्थान – लखनऊ

महेन्द्र 2/8/2018

विभागाध्यक्ष

आभार

कृतज्ञता व्यक्त करना कोई परम्परा नहीं है, अपितु यह तो एक ऐसी स्वाभाविक अभिव्यक्ति है जो अनायास ही अन्तरात्मा से उद्‌भूत हो उठती है। ऐसा भी होता है जब कृतज्ञता या आभार जैसे शब्द कभी–कभी अपने स्वरूप में अत्यन्त संकुचित प्रतीत होने लगते हैं। बहुत से स्नेह, आत्मीयतापूर्ण सहयोग एवं प्रेरणाएं ऐसी होती हैं, जिनसे कभी उबरा नहीं जा सकता। इस शोध कार्य को करते समय मुझे भी ऐसी ही कृपा, अनुकम्पा, सद्‌भावना की गौरवातीत सुप्राप्ति हुई है। कृतज्ञता व आभार जैसे शब्द को 'अनन्त' या अपार कहने के बाद भी मुझे संतोष प्राप्त नहीं हो पा रहा है और इस आभार प्रदर्शन की इस प्रक्रिया से मैं अतृप्त हूं।

सर्वप्रथम मैं अपने पति श्री बृजेन्द्र कुमार वर्मा का आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने हमेशा मेरा साथ दिया और मैं यह अध्ययन पूर्ण कर पाई। मम्मी–पापा और सास ससुर मेरे लिए ईश्वर हैं, जिनका स्नेह और आशीर्वाद मेरे तमाम कठिन रास्तों को मखमल जैसा सुगम बना देता है। उनके आशीर्वाद से ही मुझे इनती शक्ति मिलती है, जिससे सारी बाधाओं को दूर कर मैं अपनी मंजिल प्राप्त कर लेती हूं।

मैं सम्माननीय शोध निर्देशक प्रो0 शिल्पी वर्मा मेम का नम्रतापूर्वक हार्दिक अभिवादन करती हूं, जिन्होंने अपने गम्भीर ज्ञान, अनुभव से अपनी चरम व्यस्तता के मध्य जो मुझे अनवरत मार्गदर्शन और दिशा–निर्देश दिया। इसके लिए मैं सदैव उनकी ऋणी रहूंगी। ऐसे गुरु की छत्रछाया में मुझे जो शोध पूर्ण करने का गौरव प्राप्त हुआ है, वह वास्तव में अमूल्य निधि है।

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो0 एम0पी0 सिंह सर का हृदय से आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने समय समय पर मुझे मानसिक शक्ति प्रदान की। विभागाध्यक्ष होने के साथ उनकी भूमिका एक अभिभावक की भी रही। जब जब मैं अपने को पीछे पाती, तब तब प्रो0 एम0पी0 सर ने मुझे हौसला दिया। उन्होंने हमेशा अध्ययन से संबंधित सुझाव एवं प्रोत्साहन दिया। अध्ययन को पूर्ण करने में सर की महत्वपूर्ण भूमिका है। मैं उनके योगदान की सदा आभारी रहूंगी।

मैं प्रो0 के0एल0 महावर, असिस्टेंट प्रो0 डा0 आर0के0 चौधरी, असिस्टेंट प्रो0 डा0 शरद कुमार सोनकर, असिस्टेंट प्रो0 विनीत कुमार, का भी आभार व्यक्त करती हूं, जिनके बहुमूल्य सुझावों ने सहायता की। मैं पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग के उन समस्त कर्मचारियों का भी आभार प्रकट करता हूं, जिन्होंने प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सहयोग प्रदान किया।

अध्ययन में चयनित समस्त महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों एवं समस्त पुस्तकालयाध्यक्षों को धन्यवाद देती हूं, जिन्होंने अपना बहुमूल्य समय देकर मेरे अध्ययन को पूर्ण करने में भरपूर सहयोग किया। साक्षात्कार के लिए निकाले गए समय की कीमत अपने शब्दों से बयां करना मेरे लिए नामुमकिन है। साक्षात्कार ने अध्ययन को और अधिक प्रमाणिक और मजबूत बनाया। विशेषकर मैं चौ0 चरण सिंह पीजी कॉलेज, हेवरा, इटावा के पुस्तकालय प्रभारी श्री विदुर सर का आभार प्रकट करती हूं, जिन्होंने हर कदम पर मदद की।

मैं अध्ययन में चयनित महाविद्यालयों की छात्राओं को कैसे भूल जाऊं जिनके कारण ही अध्ययन पूर्ण हो सका। मैं अपनी अंतरआत्मा से ग्रामीण छात्राओं को धन्यवाद देती हूं और उनका हृदय से आभार प्रकट करती हूं, जिन्होंने अपना समय दिया और अध्ययन को पूर्ण करने में सहयोग किया। अगर वे साथ न देती तो अध्ययन को पूर्ण करना असंभव था।

मैं अपने बड़े भाई श्री संदीप कुमार, श्री विनोद कुमार और छोटे भाई आकाश कुमार, अपने जेठ श्री देवेन्द्र कुमार वर्मा और देवर श्री जितेन्द्र कुमार वर्मा का भी हृदय पूर्वक आभार व्यक्त करना चाहूंगी, जिन्होंने इस शोध कार्य के महत्वपूर्ण क्षणों में मेरा साथ ही नहीं दिया, अपितु प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष सहयोग भी दिया।

मैं अपने सहपाठियों का भी आभार व्यक्त करती हूं, जिन्होंने समय–समय पर मुझे अपने बहुमूल्य सुझाव देकर मेरे अध्ययन को और अधिक मूल्यवान बनाया। चर्चा का एक–एक शब्द मुझे मानसिक बल देता रहा।

अंत में, मैं उन सभी व्यक्तियों का आभार प्रकट कर धन्यवाद देती हूं, जिन्होंने प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष रूप से इस अध्ययन को पूर्ण करने में सहयोग प्रदान किया।

प्रीती

नामांकन संख्या– 1367/16

एम0फिल0 (सत्र 2016–18)

प्रमाण पत्र ..... (i)

घोषणा पत्र ..... (ii)

आभारोक्ति ..... (iii)

विषय सूची

अध्याय **विषय** **पृष्ठ संख्या**

प्रथम अध्याय– परिचय **1–29**

1.1 प्रस्तावना 2

1.2 पुस्तकालयः एक परिचय 6

1.3 अध्ययन की समस्या 10

1.4 समस्या कथन 12

1.5 अध्ययन में प्रयुक्त मुख्य शब्द 13

1.6 अध्ययन का उद्देश्य 13

1.7 अध्ययन की परिकल्पनाएं 14

1.8 अध्ययन की सीमाएं 15

1.9 अध्ययन का क्षेत्र, इटावा का संक्षिप्त परिचय 16

1.10 शोध विधि एवं प्रकृति 20

1.11 अध्ययन का समग्र (जनसंख्या) 21

1.12 न्यादर्श एवं निदर्शन विधि 22

1.13 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण 25

1.14 आंकड़ों का संकलन 25

संदर्भ सूची 29

द्वितीय अध्याय– साहित्यिक समीक्षा **31–49**

2.1 प्रस्तावना 32

2.2 ग्रामीण विकास एवं साक्षारता अभियान 32

2.3 केरल का ब्रिटिश पुस्तकालय 33

2.4 अनंतपुर में ग्रामीण राजकीय पुस्तकालय 33

2.5 पंजाब में ग्रामीण राजकीय पुस्तकालय नेटवर्क 34

2.6 उत्तर प्रदेश में पुस्तकालय 34

2.7 गुजरात विश्वविद्यलयों में पुस्तकालय 35

2.8 मध्य प्रदेश में पुस्तकालय अधिनियम 35

2.9 डिब्रूगढ़ में महाविद्यालय पुस्तकालय का प्रभाव 36

2.10 आंध्र प्रदेश में ग्रामीण पुस्तकालय 36

2.11 गुवाहाटीः शहरी समुदाय और पुस्तकालय 37

2.12 तमिलनाडु में पुस्तकालय 38

2.13 अहमद नगर में पुस्तकालय की भागीदारी 38

2.14 असम में पुस्तकालय द्वारा ग्रामीण विकास 39

2.15 ग्रामीण विकास के लिए सूचना व्यवस्था 39

2.16 ग्रामीण विकास में महिलाएं 40

2.17 कर्नाटक विकास मॉडल में महिलाएं 40

2.18 आंध्र प्रदेश विकास मॉडल 41

2.19 केरल विकास मॉडल 42

2.20 ग्रामीण विकास के लिए शिक्षा 44

2.21 उ0प्र0 के समाज कल्याण विभाग की छात्रवृत्ति योजनाएं 45

संदर्भ सूची 49

तृतीय अध्याय–महाविद्यालयों एवं उनके पुस्तकालयों का अवलोकन 50–58

3.1 पुस्तकालयों की पृष्ठभूमि 51

3.2 शैक्षणिक पुस्तकालय 51

3.3 जनता महाविद्यालय, इटावा 51

3.4 कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा 53

3.5 पंचायत राज राजकीय महिला महाविद्यालय, इटावा 54

3.6 ठा0 राजेश सिंह महाविद्यालय, इटावा 55

3.7 चौधरी चरण सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हेंवरा, इटावा 56

संदर्भ सूची 58

चतुर्थ अध्याय– आंकड़ों का विश्लेषण 59–134

4.1 प्रस्तावना 60

4.2 आंकड़ों के विश्लेषण व व्याख्या का महत्व 60

4.3 विश्लेषण करने के लिए आंकड़ों का बंटवारा 62

4.4 आंकड़ों का सारणीयन 63

4.5 आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन और विश्लेषण 64

4.6 ग्रामीण स्नातकोत्तर एवं स्नातक छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का पृथक चित्रमय प्रदर्शन एवं विश्लेषण 101

4.7 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन एवं विश्लेषण 115

4.8 ग्रामीण स्नातक छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन और विश्लेषण 115

4.9 साक्षात्कार द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण 129

संदर्भ सूची 134

पंचम अध्याय– अध्ययन का निष्कर्ष 135–142

5.1 प्रस्तावना 136

5.2 उद्देश्यों की पूर्ति का परिक्षण 136

5.3 परिकल्पनाओं का परिक्षण 137

5.4 अध्ययन का निष्कर्ष 137

5.5 समस्याएं व बाधाएं 141

5.6 सुझाव 142

ग्रंथ सूची 143

Annexure 1 महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं द्वारा भरवाई गई प्रश्नावली का प्रारूप 146

Annexure 2 साक्षात्कार के लिए तैयार की गई प्रश्नावली का प्रारूप 149

Annexure 3 शोध छात्रा द्वारा एकत्रित किए आंकड़ों का सारणीयन 151

Annexure 4 चित्र तालिका 153

Annexure 5 शोध छात्रा द्वारा किए गए आंकड़ों के संकलन के दौरान ली गई तस्वीरें 155

प्रथम अध्याय

परिचय

(Introduction)

1.1 प्रस्तावना (Preface)

भारत देश एक ग्रामीण बहुल्य राष्ट्र है। ग्रामीण क्षेत्र ने देश को अलग ही पहचान दी है। अन्य देशों की तरह ही भारत को भी दो प्रकार के क्षेत्रों में बांटा जा सकता है, जिसमें एक को शहरी क्षेत्र और दूसरे को ग्रामीण क्षेत्र कहा जा सकता है, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं हो जाता कि दोनों को आपस में किसी प्रकार को कोई समावेश नहीं है। भारत के परिप्रेक्ष्य में यह जानना महत्वपूर्ण हो जाता है कि शहरी क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र अलग अलग हो सकते हैं, लेकिन आवश्यकताओं के कारण एक दूसरें से काफी आंतरिक रूप से आपस में जुड़े हुए हैं। इसके कई कारण हो सकते हैं, जिसमें एक सबसे महत्वपूर्ण कारण है विकास। भारत एक विकासशील देश है। विश्व में भारत एक ऐसे विकासशील देशों में गिना जाता है, जो तेजी से विश्वपटल पर उभर रहे हैं। भारत अन्य विकासशील देशों की अपेक्षा तेजी से विकास कर रहा है। पश्चिमी देश इस तेजी के कारण भारत को अपनी ओर आकर्षित करते रहते हैं। भारत के विकास में शहर के साथ साथ ग्रामीण क्षेत्र का भी महत्वपूर्ण योगदान है। जहां एक ओर शहर में औद्योगिकीकरण, आधुनिकीकरण, तकनीकी क्रांति देखी जा रही है और शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हो रहा है, वहीं ग्रामीण क्षेत्र भी शहर में हो रहे इस बदलाव से साकारात्मक रूप से प्रभावित हो रहा है। कृषि में किसान नई नई तकनीकी का उपयोग करने लगे हैं। शिक्षा का स्तर भी ऊंचा हुआ है। इसी के साथ स्वास्थ्य सेवाओं में भी पहले की अपेक्षा कुछ सुधार हुआ है। भारत के विकास में जितना योगदान पुरूषों का है, उतना ही योगदान महिलाओं का है। सिर्फ यह कहना गलत होगा कि राष्ट्र का विकास पुरूषों के अथक प्रयासों से हुआ है। राष्ट्र की आधी आबादी अर्थात महिलाओं ने भी कड़ी मेहनत की है, इस देश के विकास में। महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। इसमें राजनीति, अर्थव्यवस्था, अकादमिक, शिक्षा, सेवाक्षेत्र, तकनीकी, उद्योग आदि शामिल है। विश्व स्तर पर प्रकाशित होनी वाली सबसे शक्तिशाली महिलाओं में भारत की उपस्थिति भी प्रायः देखने को मिल जाती है। ऐसे में यह मानना ही पड़ेगा कि भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं की भागीदारी के बिना भारत समुचित विकास नहीं कर सकता। भारत में पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की जनसंख्या कम है। इसी के साथ पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में साक्षरता दर भी कम है। भारतीय समाज में पहले के समय में महिलाओं को पढ़ाया नहीं जाता था।

सावित्रीबाई फुले ने अथक प्रयासों से महिलाओं को पढ़ाया और समाज के विरोध में काम किया, और समाज को बताया कि किस प्रकार से महिलाओं की भागीदारी समाज के लिए जरूरी है। आजादी के बाद से ही महिला शिक्षा को बढ़ावा मिला। वर्तमान में भारत 21वीं सदी में है, लेकिन आज भी बेटियों को पढ़ाने के प्रति जागरूकता नहीं हैं। भारत सरकार विभिन्न योजनाएं बना रही है, ताकि बेटियों को पढ़ाया जाए और वे विद्यालयीन शिक्षा के साथ उच्च शिक्षा भी प्राप्त करें। आजादी के बाद से ही भारत ने शिक्षा के सुधार में प्रयोग शुरू कर दिए। बात चाहे राधाकृष्णन कमीशन की हो या मुदालियर आयोग की सभी में देश की शिक्षा के सुधार के संबंध में विभिन्न सुझाव दिए। समाज शास्त्रियों का मानना है कि अगर देश की शिक्षा को अच्छा बना दिया जाए तो राष्ट्र स्वतः शक्तिशाली बन जाता है। ऐसे में भारत सरकार ने भी शिक्षा के सुधार के लिए विभिन्न प्रयास करना शुरू कर दिए। विभिन्न सरकारों ने शिक्षा को अपने तरीके से सुधारने की कोशिश की। स्त्री–पुरूष में भी साक्षरता का अंतर हमेशा से रहा है। आज भी साक्षरता का अंतर है। हालांकि पिछले कुछ दशकों में इसमें सुधार आया है फिर भी आज तक यह आंकड़ा बराबरी पर नहीं पहुंच पाया। पहले के समय में स्त्री शिक्षा पर जोर नहीं दिया जाता था। पर जब साक्षारता के अंतर को देखा गया तो सरकार इस ओर भी गंभीर हुई कि महिलाओं की भागीदारी शिक्षा में जरूरी है। कहावत प्रसिद्ध है कि एक लड़की को पढ़ाने का अर्थ है एक परिवार को पढ़ाना। ऐसे यह ठान लिया गया कि कन्याओं की शिक्षा में भागीदारी सुनिश्चित की जाए। इसके लिए विभिन्न सरकारों ने कन्याओं के लिए अलग से विद्यालय और महाविद्यालयों का निर्माण किया ताकि वे बेझिझक पढ़ सके। उनके रहने की व्यक्तिगत व्यवस्था भी की जाने लगी, ताकि परिवार भी अपने बेटियों को स्कूल अथवा कॉलेज भेजने में सहज महसूस कर सकें। इस तरह का निर्णय काफी लाभप्रद रहा। छात्राओं की संख्या विद्यालयों और महाविद्यालयों में बढ़ने लगी। इसके अलावा लड़के के बाराबर लड़की को मानने और लड़कियों को कम न आंकने के कई योजनाओं का संचालन किया गया और लोगों को जागरूक किया गया।

हमने बहुत से उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया है, परंतु अभी भी बहुत कुछ पाना बाकी है। अभी तक अच्छी शिक्षा शहरों तक ही सीमित है। अच्छी शिक्षा के लिए शहर जाने की प्रवृत्ति पुरानी ही है। ग्रामीण क्षेत्र में संसाधनों के अभाव में छात्राएं शहरों में शिक्षा लेने के

लिए मजबूर हो जाते हैं। छात्राओं के साथ एक समस्या यह भी रहती है कि उन पर घरेलू कार्यों की जिम्मेवारी होती है अथवा डाल दी जाती है। ऐसे में कई बार छात्राएं शहर जा ही नहीं पाती। इस तरह या तो वे शहर में मुश्किल से दाखिला ले पाती हैं अथवा ग्रामीण क्षेत्र में विद्यालय या महाविद्यालय होने पर ही पढ़ पाती हैं।

महाविद्यालय की शिक्षा में तेजी से सुधार हुआ है। सरकारी संस्थानों के साथ निजी संस्थानों की उपलब्धता ने छात्राओं को शिक्षा ग्रहण करने के नए आयाम प्रस्तुत किए हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि शिक्षा के सुधार में मुख्य भूमिका पुस्तकालय ने निभाई है। आज के दौर में देखे तो किसी न किसी तरह से हर वर्ग की छात्राएं पुस्तकालय से प्रभावित है। छात्राएं अमीर परिवार से हो या गरीब, पुस्तकालय से किसी न किसी प्रकार से जुड़ी होती हैं। अगर हम निर्धन वर्ग में रह रहे लोगों की बात करें तो हमें पता चलेगा कि उनका भी पुस्तकालय से जुड़ाव है। केन्द्र और राज्य सरकारें शिक्षा का स्तर ऊंचा करने में और गरीबी को दूर करने व गरीबों को रोजगार के लिए सशक्त बनाने के लिए अथक प्रयास कर रही हैं। प्राथमिक शिक्षा पर ध्यान दें तो पता चलेगा कि केन्द्र सरकार और राज्य सरकारें प्राथमिक शिक्षा में छात्राओं को मुफ्त पुस्तकें उपलब्ध कराती हैं।

ऐसा इसलिए ताकि छात्राओं को पुस्तकें आसानी से उपलब्ध हो जाएं और उन्हें इसके लिए इधर–उधर न भटकना पड़े। उच्च शिक्षा में भी सुधार करते हुए सरकारी या गैर सरकारी विश्वविद्यालय या निजी कॉलेज में पुस्तकालय को डिजीटल बनाने पर ध्यान दिया जा रहा है। सूचना क्रांति ने देश को सूचना पहुंचाने का काम ही आसान नहीं किया गया बल्कि पुस्तकालय के लिए नया नजरिया प्रस्तुत किया है। पहले जहां पुस्तकालय भौतिक रूप बड़ा होता था, वो आज डिजीटल होने के चलते थोड़ी सी जगह में संचालित हो जाता है। जैसे एक कम्प्यूटर में ही हजारों पुस्तकों की 'ई' कॉपी संग्रहित की जा सकती है। ऐसे में डिजीटल लाइब्रेरी एक छोटे से कमरे में भी चल सकती है। इटावा में भी सरकारी, गैर सरकारी महाविद्यालय संचालित हैं। इतना ही नहीं शहर में कॉचिंग सेंटर भी संचालित किए जा रहे हैं। अब हर जगह पुस्तकालय बन रहे हैं। छात्राएं इसका लाभ ले रही हैं।

जब भी ग्रामीण क्षेत्रों में निर्धनता की बात की जाती है, हमारे ह्रदय में एक सद्भावना का भाव उत्पन्न हो जाता है। हम उनके प्रति अपनी संवेदना रखते हैं। कई बार ये बात सामने आई है कि अगर इन वर्गों पर या इन परिवारों पर भी ध्यान दिया जाए तो ये परिवार अपनी आजीविका के लिए किसी पर निर्भर नहीं रहेंगे। यहां अर्थशास्त्र के पंप प्रामिंग सिद्धांत (pump priming theory)[1] का उदाहरण दिया जा सकता है। लेकिन, विभिन्न योजनाओं के संचालित होने के बावजूद अकसर ऐसा हो नहीं पाता। इस संबंध में बात करें तो देश में पहली बार निर्धनता रेखा (Poverty Line)[2] की पहचान 1962 में की गई। इसमें बताया गया कि 1960–61 की कीमतों पर गांव में 16 रुपये और शहर में 20 रुपये से ज्यादा मासिक खर्च करने वाले निर्धन नहीं थे। समय के साथ–साथ कीमतों में परिवर्तन आता रहा और योजना आयोग द्वारा गठित कमेटी के सुझावों पर उसके बाद निर्धनता (गरीबी) रेखा को चिन्हित किया गया। प्रो0 सुरेश तेंदुलकर के नेतृत्व में गठित कमेटी ने अपनी रिपोर्ट 2009 में दी थी। हालांकि यहां कमेटी ने गरीबी रेखा के आधार बिंदुओं को संशोधित किया। यह तो निश्चित है कि ऐसा सिर्फ इसलिए किया गया ताकि हम निर्धनों को जान सकें। ग्रामीण क्षेत्रों में हमें निर्धन परिवार अधिक देखने को मिलते हैं।

आदि काल से मनुष्य अपने विचारों को नई पीढ़ी को देता आया है। अविष्कार, नई–नई कलाएं, नई–नई खोजें इस बात का प्रमाण है कि पुरानी पीढ़ी के किए कार्य में विकास की झलक मिलती है और यह सिलसिला लगातार से चला आ रहा है। नई पीढ़ी पुरानी पीढ़ी में अपनी नई तकनीकी जोड़ देते हैं। यही विकास चक्र कहलाता है। इसका सामान्य उदाहरण ये लिया जा सकता है कि मनुष्य ने पहिए की खोज की पर आज हम हवाई जहाज बना चुके हैं। अगर पुरानी पीढ़ी अपनी पहिए बनाने की कला को नई पीढ़ी को सौंप कर नहीं जाती तो शायद हम हवाई जहाज की कल्पना तक नहीं कर सकते थे। यही विचारों को प्रषित करने की कला संचार के विकास में भी काम आई। मनुष्य में अपने विचारों को प्रेषित करने की जबरदस्त प्रवृत्ति होती है। संचार के विभिन्न मॉडलों [3] से हमें यह बात समझ सकते हैं। इसीलिए मनुष्य आदिकाल से ही अपने को अभिव्यक्त करने के लिए मनुष्य विभिन्न कलाओं का प्रयोग करता रहा। गुफाओं में चित्रकारी, चट्टानों पर

[1] Pg.No.- 182, What Keynes Means, Anatol Murad, USA, United Printing Services, New Haven. 1964.
[2] Pg.No.- 13, Poverty in India, K.R. Gupta, Atlantic Publishers & Distributors (P) Ltd., New Delhi. 2008
[3] Communication models, Uma Narula, Atlantic Publishers & Distributors (P) Ltd, 2013.

छवियां बनाकर हथियार बनाकर आदि। मध्य प्रदेश में भीम बैठका[4] इसका सजीव उदाहरण है, जहां हमें गुफाओं में मनुष्यों द्वारा बनाएं गए रंगीन चित्रकारी मिलती है।

भारत में आधी आबादी से अधिक मध्यम वर्ग के नीचे जीवन यापन करने वालें परिवारों की संख्या रहती है। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (NFHS-2)[5], मुम्बई की रिपोर्ट के अनुसार पता चलता है कि भारत में कुल महिलाओं के 52 प्रतिशत से भी अधिक महिलाओं में एनिमिया बीमारी की शिकायत पाई गई है। ऐसे में यह स्पष्ट होता है कि इतनी बड़ी संख्या में गरीब महिलाएं अधिक हैं। इनके निदान के साथ जो सरकार कदम उठा रही है वह तो सराहनीय है ही, परंतु शिक्षा और पुस्तकालय के योगदान को भी नहीं भूलना चाहिए। 1993 में वियना में मानवाधिकार पर विश्व सम्मेलन[6] आयोजित किया गया था, जिसमें मजबूती से कहा गया कि महिलाओं के अधिकार मानवाधिकार ही हैं। इसी तरह 1994 में कैरो में जनसंख्या एवं विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन[7] में महिलाओं के स्वास्थ्य और प्रसूति स्वास्थ्य को उपयुक्त विकास के लिए महत्वपूर्ण माना।

1.2 पुस्तकालयः एक परिचय

मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है। इस जिज्ञासा के कारण मनुष्य के मन मे हमेशा किसी नई चीज को जानने की इच्छा उत्पन्न होती रहती है। यही कारण है कि वह कुछ न कुछ नई चीजों के प्रति आकर्षित होता रहा। यदि मनुष्य नई चीजों के प्रति आकर्षित न होता तो वह आविष्कार नहीं कर पाता। और हो सकता है कि वह आज भी आदिमानव ही रहता और हम सभ्यता का निर्माण नहीं कर पाते। मनुष्य ने विभिन्न प्रकार से ज्ञान को जाना और समझा। इसी के साथ मनुष्य ने उस ज्ञान को संग्रहित एवं सुरक्षित करने की कोशिश भी की। ऐसा इसलिए ताकि वह आने वाली पीढ़ी को वह ज्ञान स्थानांतरित कर सके। पहले मनुष्य ने आग की खोज की फिर लकड़ी से पहिए का आविष्कार किया। इस ज्ञान को वह अपने तक सीमित न करके अन्य मनुष्यों तक पहुंचाया। यह प्रक्रिया ज्ञान को संग्रहित और प्रसारित करने की है। मनुष्य ने अपने ज्ञान को कई तरीकों से सहेजने की

[4] अधिक जानकारी के लिए ये लिंक उपयोगी है– http://mp.gov.in/web/guest/tourism11#5
[5] NFHS- 2, 1998-99 (2000). National Family Health Survey, India.
[6] Page No. - 396, Communication for Development Reinventing Theory and Action, Kiran Prasad, vol-2, B.R. Publishing Corporation, New Delhi.
[7] Page No. - 396, Communication for Development Reinventing Theory and Action, Kiran Prasad, vol-2, B.R. Publishing Corporation, New Delhi.

कोशिश की। इसमें चित्र बनाना, मौखिक बताना, मूर्तियों का निर्माण करना अथवा पत्थरों पर गोदना आदि शामिल है। बाद में जैसे–जैसे मनुष्य ने समाज में रहना शुरू किया। भाषा का निर्माण किया। लिखना शुरू किया। इतिहास में मिस्त्र में पेड़ की छाल का उपयोग महत्वपूर्ण है। इतिहास में जाएं तो पता चलता है कि पेड़ की छाल से कागज का निर्माण किया गया और मनुष्यों ने उस पर ज्ञान को लिखना और प्रेषित करना शुरू किया।

भारत के परिप्रेक्ष्य में देखें तो गुरूकल का चलन था, जहां गुरू अपने शिष्य को मौखिक ज्ञान देता था और शिष्य उस ज्ञान को रट कर याद कर लेता था। समय के साथ साथ भारत में भी ज्ञान एवं सूचनाओं को ताम्रपत्र एवं भोजपत्र पर सुरक्षित रखा जाने लगा। शिष्य अपने गुरू के द्वारा दिए हुए ज्ञान को संग्रहित करने लगे अर्थात वे लिखकर सहेजने लगे। जैसे जैसे ज्ञान का क्षेत्र बढ़ता गया, वैसे वैसे उसे याद करना मात्र मुश्किल कार्य हो गया। यही कारण था कि मनुष्य ने इसे अपने मस्तिष्क के साथ अन्य जगहों पर भी संग्रहित करने लगा। फिर मनुष्य ने अपने ज्ञान को समाज तक पहुंचाने के लिये एवं समाज को शिक्षित करने के लिये। विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय खोले गये जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग शिक्षित हो सके, परन्तु ग्रामीण क्षेत्र ऐसे हैं, जिनके पास पढ़ने के लिये सुविधा नहीं है जैसे पुस्तक खरीदने के लिये पैसे नहीं होते, जिसके कारण वह पढ़ नहीं पाते। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों में भी पुस्तकालय का निर्माण किया, जिससे ग्रामीण क्षेंत्रों में रहने वाले पाठकों को पुस्तकें आसानी से मिल सके।

पुस्तकलय का अर्थ है पुस्तकों का स्थान या घर है, जहां पर पुस्तकों को संग्रहित कर रखा जाता है। पुस्तकालय दो शब्दों से मिलकर बना है– **पुस्तक+आलय**। इसमें **'आलय'** का अर्थ किसी स्थान या घर से है। (Library) पुस्तकालय का अंग्रेजी शब्द है लाइब्रेरी है जो कि लेटिन भाषा के **'लाइबर'** शब्द से बना है, जहां पर अनेक प्रकार की पुस्तकें, पत्र पत्रिकाएं, मानचित्र, हस्थलिखित ग्रन्थ, आदि सब संग्रहित होते हैं। पुस्तकालय वह नहीं है जहां पर पुस्तकों को व्यवसायिक तरीके से रखा जाता है और वहां पर जाकर कोइ भी व्यक्ति अपनी मर्जी से या अपनी मन चाही पुस्तक को तब तक नहीं पढ़ सकता जब तक उसके पास उस पुस्तक को खरीदने के लिये पर्याप्त मूल्य न हो। पुस्तकालय वह

है, जहां पर कोई भी व्यक्ति बिना किसी रोक–टोक के अपनी मन चाही पुस्तक, पत्र–पत्रिकायें, रोजगार आदि सब पढ़ सकता है।

पुस्तकालय के बारे में अधिक जाने तो हमें पता चलता है कि पुस्तकालय कई प्रकार के होते हैं। इसमें कुछ की जानकारी निम्नलिखित है–

- शैक्षणिक पुस्तकालय
- सार्वजनिक पुस्तकालय
- राष्ट्रीय पुस्तकालय
- बाल पुस्तकालय
- निजी पुस्तकालय
- विशिष्ट पुस्तकालय
- व्यवसायिक पुस्तकालय

शैक्षणिक पुस्तकालय – शैक्षणिक पुस्तकालय वे पुस्तकालय होते हैं, जो पाठ्यक्रम शिक्षा से संबंधित होते हैं। इस प्रकार के पुस्तकालय में सिर्फ शैक्षिक पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकें, जर्नल एवं शोध उपलब्ध होते हैं। इसके अलावा समाचार पत्र–पत्रिकाएं भी उपलब्ध होती हैं। पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की पूरी व्यवस्था होती है। यहां पर ऐसा वातावरण होता है कि यहां पाठक अधिक से अधिक मन लगाकर पढ़ सके। इसमें छात्र अपने पाठ्यक्रम से संबंधित अध्ययन एवं शोधकार्य पूरा करते हैं। शैक्षणिक पुस्तकालय अपने उद्देश्य, क्षेत्र एवं सेवाओं के आधार पर सार्वजनिक एवं विशिष्ट पुस्तकालयों से भिन्न होता है। शैक्षणिक समुदाय के लिए पुस्तकालय एक महत्वपूर्ण एवं आवश्यक एवं बौद्धिक संसाधन है, जो अपने सदस्यों के स्व–विकास में सहयोग करता है।[8] इस प्रकार के पुस्तकालय विद्यालय, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय में होते हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालय – सार्वजनिक पुस्तकालय वे होते हैं, जहां पर कोई भी व्यक्ति, चाहे वह पाठ्यक्रम से संबंधित हो या फिर व्यवसाय से संबंधित हो या फिर किसी भी प्रकार का

[8] पृष्ठ 8, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान एम0 लिब0 आई0 एस0 सी0 ज्ञान दर्शिका, डा0 बी0 के0 शर्मा, डा0 यू0 एस0 ठाकुर, वाई0 के0 प्रकाशन, संजय प्लेस, आगरा।

पाठक चाहे वह किसी भी उम्र का हो, अपने ज्ञान में वृद्धि कर सकता है। इस प्रकार के पुस्तकालय में किसी प्रकार का बंधन नहीं होता और सभी के लिए खुला होता है, इसीलिए इसे सार्वजनिक पुस्तकालय कहते हैं। यहां पर चाहे ग्रामीण क्षेत्र का पाठक हो या फिर शहर का पाठक हो, जा सकता है और ज्ञानार्जन कर सकता है।

राष्ट्रीय पुस्तकालय – इस प्रकार के पुस्तकालय वे होते हैं, जिनका उद्देश्य संपूर्ण राष्ट्र की सेवा करना होता है। इस प्रकार के पुस्तकालय में सभी प्रकार के पाठकों की आवश्यकता अनुसार पठन सामग्री उपलब्ध कराया जाता है। इसमें विद्यार्थियों अथवा पाठकों को इतिहास एवं साहित्य की सामग्री भी उलब्ध कराई जाती है। पुस्तकालय के जनक डा0 रंगनाथन के अनुसार, 'देश की संस्कृति, अध्ययन की सामग्री की सुरक्षा राष्ट्रीय पुस्तकालय का मुख्य कार्य है।' ब्रिटेन के राष्ट्रीय पुस्तकालय, ब्रिटिश म्यूजियम को 1709 ई0 में यह सुविधा प्रदान की गई थी।[9]

बाल पुस्तकालय – बाल पुस्तकालय वह पुस्तकालय वह होता है, जहां बच्चों से जुड़ी पुस्तकें, पत्र, पत्रिकाएं उपलब्ध होती हैं। जैसे, बाल कविताएं, कहानियां, चित्रकला संबंधी पुस्तकें, पर्यावरण, भगोल, इतिहास से संबंधित पुस्तकें जो उन्हें अपने देश के बारे में जानकारी देते हैं और बच्चे उन्हें पढ़कर सीखते हैं। 1885 में न्यूयार्क नगर में एक बाल पुस्तकालय की स्थापना की गई। बाद में सार्वनिक पुस्तकालयों में भी बाल विभाग का निर्माण किया गया।

निजी पुस्तकालय – इस प्रकार के पुस्तकालय वे पुस्तकालय होते हैं, जो स्वयं व्यक्ति से जुड़े होते हैं और जिनपर सिर्फ उनका स्वयं का अधिकार होता है। वे अपने कॅरियर से संबंधित, व्यवसाय से संबंधित अथवा अपने जीवन के कार्यों से संबंधित पुस्तकों को संग्रहित करते हैं। जैसे वकीलों का निजी पुस्तकालय, प्रोफेसर का अपना निजी पुस्तकालय, अधिकारियों को अपना निजी पुस्तकालय या फिर शोधार्थियों का अपना पुस्तकालय आदि निजी पुस्तकालय के उदाहरण हैं। इस तरह के पुस्तकालयों का एक लाभ यह होता है कि पाठक अपने पुस्तकालय का कभी भी उपयोग कर सकता है अथवा किसी पुस्तक को पढ़ सकता है।

---

[9] पृष्ठ 63, यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेटः पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान प्रश्न पत्र 2 एवं 3, मुकेश बोरा एवं अन्य, अरिहन्त प्रकाशन, नई दिल्ली।

विशिष्ट पुस्तकालय – इस प्रकार के पुस्तकालय वे होते हैं जो विशिष्ट पाठ्यक्रम या व्यवसाय से संबंधित होती हैं। जैसे विधि पुस्तकालय, चिकित्सा पुस्तकालय आदि। इस प्रकार के पुस्तकालयों में किसी विशिष्ट विभाग, कार्य या विषय से संबंधित से पुस्तकें आदि जानकारी उपलब्ध होती हैं।

व्यवसायिक पुस्तकालय – इस प्रकार के पुस्तकालय में व्यवसाय से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध होती हैं। इस प्रकार के पुस्तकालयों में किसी व्यवसायिक संस्था के कर्मचारियों की आवश्यकता अनुसार विशेष पठन सामग्री को उपलब्ध कराया जाता है। जैसे व्यवसाय से संबंधित डायरेक्टरीज, व्यवसायिक पत्रिकाएं, समय सारणियां, महत्वपूर्ण सरकारी प्रकाशन, मानचित्र, संदर्भ ग्रंथ, विधि साहित्य आदि।[10]

डिजीटल पुस्तकालय – डिजीटल पुस्तकालय द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग करके पाठकों को त्वरित रूप से डिजीटलीकृत सूचना का ज्ञान उपलब्ध कराया जाता है। डिजीटल पुस्तकालय न सिर्फ सूचना संग्रह के लिए, अपितु सूचना पुनः प्राप्ति के लिए भी सक्षम होती है। जानकारी के अुनसार यह पुस्तकालय 1960 के दशक से ही कार्यों एवं सूचना को प्राप्त करने हेतु कम्प्यूटर का प्रयोग शुरू हो गया था। जैसे –जैसे सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हुआ वैसे वैसे डिजीटल पुस्तकालय में भी बदलाव देखे जाने लगे। 1980 के दशक में सीडी रोम के आविष्कार ने डिजीटलीकरण के कार्यों को पंख प्रदान किया। यदि जानकारी ली जाए तो पता चलेगा कि ई– पब्लिकेशन, नेटवर्क एवं इंटरनेट, टेलीटेक्स्ट, इमेज प्रोसेसिंग आदि प्रौद्योगिकी के विकास ने इस डिजीटल पुस्तकालय को सहायता प्रदान की।

1.3 अध्ययन की समस्या (Problem of the Study)

उत्तर प्रदेश भारत संघ का महत्वपूर्ण राज्य है। भारत सरकार के निर्माण में उत्तर प्रदेश की हमेशा से अहम भूमिका रही है। इटावा उत्तर प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जनपद है। इटावा उत्तर प्रदेश के जिले के साथ शिक्षा का बहुत बड़ा शहर है। जैसा कि हम

[10] पृष्ठ 63, यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेटः पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान प्रश्न पत्र 2 एवं 3, मुकेश बोरा एवं अन्य, अरिहन्त प्रकाशन, नई दिल्ली।

जानते हैं कि शिक्षा में उत्तर प्रदेश में इटावा जनपद का चौथा स्थान है।[11] उत्तर प्रदेश में जनपद का अच्छा स्थान होना आस पास के जिलों के छात्रों को भी पढ़ने के लिए आकर्षित करता है।

इटावा जनपद में 78.4 प्रतिशत साक्षरता दर है, जिसमें कुल पुरूष साक्षरता दर 86. 1 प्रतिशत है व कुल महिला साक्षरता दर 69.6 प्रतिशत है।[12] आंकड़ों पर ध्यान दे ंतो पुरूष साक्षरता दर और महिला साक्षरता दर में 16.5 प्रतिशत का अंतर है। इसी प्रकार ग्रामीण क्षेत्र में साक्षारता स्तर में अंतर का पता लगाएं तो पता चलता है कि इटावा में ग्रामीण क्षेत्र की कुल साक्षरता दर 77.3 प्रतिशत है, जिसमें 86.0 प्रतिशत पुरूष हैं और 67. 2 प्रतिशत महिलाएं हैं। यहां पुरूष और महिला के बीच साक्षरता दर में 18.8 प्रतिशत का अंतर है।

जब महिला साक्षरता दर की विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों पता लगाते हैं तो भारी अंतर देखने को मिलता है। जनपद में कुल, ग्रामीण, शहरी साक्षरता दर क्रमशः 69.6, 67.2, 77.2 है। ग्रामीण (67.2) और शहर (77.2) में महिला साक्षरता दर में 10 प्रतिशत का भारी अंतर दिखाई देता है, जो शोध छात्रा को ग्रामीण छात्राओं पर अध्ययन करने के लिए प्रेरित करता है।

यहां राजकीय विद्यालयों के साथ निजी डिग्री एवं पीजी महाविद्यालय संचालित किए जा रहे हैं। इसका सीधा प्रभाव छात्राओं के शैक्षिक विकास पर पड़ रहा है। जैसे–जैसे महाविद्यालयों की संख्या बढ़ रही है, वैसे–वैसे पुस्तकालय छात्राओं के लिए महत्वपूर्ण होता जा रहा है। एक समय जो छात्रा महाविद्यालय के दूर होने के कारणवश पढ़ नहीं पाती थी वह आज आसानी से पास के कॉलेज तक जा पा रही है, चाहे वह निजी कॉलेज ही क्यों न हो। इसी के साथ पुस्तकालय से भी परिचय हो रहा है। यह पुस्तकालय से परिचय उन्हें नए नए आयाम एवं आकांक्षाओं को जाग्रत करते हैं।

---

[11] Pg-32, Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA)

[12] Pg-xi, Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA)

इटावा जिले में कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्नातक एवं स्नातकोत्तर महाविद्यालय संचालित किए जाते हैं। कानपुर से लगभग 65 स्नातक अथवा स्नातकोत्तर सरकारी/ एडेड/ निजी महाविद्यालय सम्बद्ध है। इतना ही नहीं अन्य विश्वविद्यालयों की सम्बद्धता के भी महाविद्यालय जिले में संचालित है। इसके अलावा उच्च शिक्षा के इंजीनियरिंग आदि के संस्थान भी जनपद में संचालित हैं, जो जनपद के छात्र–छात्राओं को शिक्षा प्रदान करते हैं।

विश्वविद्यालयों के साथ महाविद्यालयों में भी पुस्तकालय छात्राओं को आकर्षित कर रहा है। पुस्तकालयों का प्रभाव पड़ने का एक कारण यह भी हो सकता है कि अब पुस्तकालय डिजीटल हो रहे हैं। शोध छात्रा ने यह महसूस किया कि इटावा में तमाम सरकारी और निजी महाविद्यालयों में छात्राएं पढ़ रही हैं, परंतु यह अभी तक नहीं कहा जा सकता कि आखिरकार ग्रामीण छात्राओं पर पुस्तकालय का क्या प्रभाव पड़ रहा है? कैसे कहा जाए कि पुस्तकालय छात्राओं के लिए वरदान साबित हो रही है? विभिन्न प्रश्नों के उत्तर को प्राप्त करने और अपनी समस्या का समाधान करने के लिए छात्रा शोध करने के लिए प्रेरित है।

1.4 समस्या कथन (Statement of the Study)

यदि अध्ययन की समस्या को पूरी तरह से न समझा जाए तो उसका हल निकालना संभव नहीं हो पाता। इसीलिए अनुसंधान करने के लिए शोधार्थी को अपनी समस्या को समझना बहुत जरूरी होती है ताकि भविष्य में दिशा एवं निर्देश तय किए जा सकें और समस्या का समाधान हो सके। इसके साथ ही सबसे अधिक आवश्यक है कि शोधकर्ता अपनी समस्या को कथनबद्ध करे।

इसीलिए शोध छात्रा ने अपनी समस्या को कथनबद्ध किया है जो इस प्रकार है–

"ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं द्वारा उपयोग किए जाने वाले पुस्तकालय के प्रभावों का अध्ययन "

1.5 अध्ययन में प्रयुक्त मुख्य शब्द (Keyword)

शोध छात्रा ने अध्ययन में कुछ महत्वपूर्ण शब्दों का प्रयोग किया है जो अध्ययन में मुख्यशब्द हैं। शब्द इस प्रकार हैं–

ग्रामीण छात्रा– अध्ययन उत्तर प्रदेश के जनपद इटावा के ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाली छात्राओं पर आधारित है। ऐसी छात्रा जो ग्रामीण परिवेश में जीवन यापन कर रही है एवं महाविद्यालय में अध्ययनरत है, उन्हें शोध छात्रा ने ग्रामीण छात्रा माना है। इसके साथ ही जो छात्रा ग्रामीण परिवेश की है, लेकिन महाविद्यालय में पढ़ने के लिए शहर में हॉस्टल या किराये पर रह रही है, उन्हें शोध छात्रा ने ग्रामीण छात्रा माना ळें

ग्रामीण क्षेत्र – अध्ययन ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली छात्राओं पर आधारित है। ऐसा क्षेत्र जो शहर की तरह संसाधनों से परिपूर्ण न हो और जहां खेती होती है और किसानों की संख्या ज्यादा हो तथा सामाजिक, आर्थिक रूप से शहर की तरह विकसित न हो, उसे शोध छात्रा ने ग्रामीण क्षेत्र माना है।

महाविद्यालय– अध्ययन में ऐसे महाविद्यालयों को लिया गया जहां, स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित किए जाते हैं। शोध छात्रा ने महाविद्यालय शब्द का प्रयोग उन महाविद्यालयों के लिए किया है, जहां स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित हैं।

पुस्तकालय– शोध छात्रा ने अध्ययन में पुस्तकालय के प्रभाव को जानने की कोशिश की है। अध्ययन में पुस्तकालय से आशय महाविद्यालयों में संचालित पुस्तकालय से है। शोध छात्रा के अनुसार पुस्तकालय वह है, जहां पुस्तकों को संग्रहित एवं सुरक्षित करके इस प्रकार रखा जाए कि उसक समय समय पर सद्पयोग किया जा सके।

1.6 अध्ययन का उद्देश्य (Objective of the Study)

जब भी कोई अनुसंधानकर्ता अध्ययन के लिए प्रेरित होता है, वहां कोई न कोई उद्देश्य जरूर होता है। बिना उद्देश्य के अनुसंधान किया ही नहीं जा सकता। जब भी शोधकर्ता का किसी समस्या से परिचय होता है, तो शोधकर्ता उस समस्या के समाधान के लिए अग्रसर हो जाता है। शोधकर्ता समाधान के लिए कुछ उद्देश्य निर्धारित करता है। ये उद्देश्य समस्या और उसके समाधान से संबंधित होते हैं। उद्देश्य में शोधकर्ता बताता है कि समस्या का समाधान क्यों कर रहा है, वह क्या जानना चाहता है आदि। शोधकर्ता के उद्देश्य में कहीं न कहीं सामाजिक पक्ष जुड़ा होता है, ताकि जो वह समस्या का हल ढूंढ रहा है, वह समाज के काम आ सके। इसी प्रकार शोध छात्रा ने भी अपने समस्या के समाधान के कुछ उद्देश्य निर्धारित किए हैं।

शोध छात्रा द्वारा निर्धारित किए गए अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय से एकत्रित किए जाने वाली शैक्षिक सामग्री का अध्ययन।
2. ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय उपयोग करने वाले समय का पता लगाना।
3. ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालयों में कुल समय व्यतीत करने का अध्ययन।
4. ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय तक पहुंचने वाले यातायात संसाधनों का अध्ययन।

1.7 अध्ययन की परिकल्पनाएं (Hypotheses of the Study)

जैसा कि हम जानते हैं परिकल्पना हमें शोध में एक दिशा प्रदान करती है। परिकल्पना के बगैर भी हम शोध कर सकते हैं। परंतु इसके लिए हमें बहुत से प्रश्नों का स्वयं ही उत्तर खोजना पड़ता है। परिकल्पना हमें एक दिशा में जाने के लिए मदद करती है। इसलिए ऐसा कहा जा सकता है कि किसी अध्ययन के लिए परिकल्पना एक आधार के रूप में उपस्थित रहती है और जैसे आधार के बिना इमारत को खड़ा नहीं किया जा सकता, बिल्कुल उसी तरह से अध्ययन की परिकल्पना के बिना अध्ययन की दिशा तय करना कठिन होता है। हालांकि ऐसा नहीं है कि सभी शोध परिकल्पना के निर्माण से ही हुए। गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत, आर्कमडीज के सिद्धांत आदि बड़े आविष्कार बगैर

परिकल्पना के हुए। ये आविष्कार संयोगवश वैज्ञानकों में सूझ पैदा हो जाने के कारण हुए थे, परंतु मूल सिद्धांतों को विकसित करते समय परिकल्पनाओं का निर्माण अवश्य हुआ। विज्ञान में किसी कार्य का कारण एक हो सकता है किंतु सामाजिक विज्ञानों में एक ही व्यवहार के अनेक कारण हो सकते हैं ऐसे में सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के लिए परिकल्पना उस अध्ययन को सीमित और दिशा प्रदान कर देता है। शोध छात्रा ने भी समस्या के समाधान हेतु परिकल्पनाओं का निर्धारण किया है। शोध छात्रा द्वारा शोध की परिकल्पनाओं को घोषित स्वरूप (Declarative Form) में सूत्रबद्ध किया गया है।

प्रस्तुत अध्ययन निम्नलिखित परिकल्पनाओं पर आधारित है –

1. ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली छात्राओं के शैक्षिक विकास में पुस्तकालय की भूमिका है।
2- पुस्तकालय, छात्राओं की अकादमिक शिक्षा को प्रभावित कर रहा है।
3- ग्रामीण स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं पर पुस्तकालय का समान प्रभाव पड़ रहा है।

1.8 अध्ययन की सीमाएं (Limitation of Study)

शोध के लिए अतिआवश्यक होता है कि शोधार्थी अपने शोध की सीमाएं तय करे। ऐसा इसलिए किया जाता है कि अनुसंधान की प्रक्रिया को जब आगे बढ़ाया जाए तो कहीं भटकाव पैदा न हो सके। सीमाएं तय करती हैं कि अनुसंधान में किसी दिशा में कितना काम करना है। कई बार अध्ययन में यह देखने को मिलता है कि समस्या का हल ढूँढने के लिए अनुसंधानकर्ता आवश्यकता से अधिक और बिना उद्देश्य के प्रश्न पूछता रहता है, जिसका अनुसंधान से कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध ही नहीं होता। ऐसे में शोधार्थी द्वारा की जाने वाली मेहनत किसी काम की नहीं रह जाती। इसीलिए अध्ययन की सीमाएं निर्धारित करना आवश्यक हो जाता है। इसके साथ ही शोधार्थी के सामने किसी प्रकार का भटकाव नहीं आता। निर्धारित सीमा में ही काम पूरा करने के बाद अन्य कार्य में जुट जाता है। यदि अध्ययन में भटकाव आ जाए तो समस्या का समाधान कठिन कार्य हो जाता है। सीधे तौर पर कहा जाए तो अध्ययन की सीमाएं अध्ययन के लिए दिशा निर्देशक की तरह होती हैं, जो अध्ययन को निर्धारित सीमा में बांध देती है, ताकि समय की बर्बादी न हो, सटीक कार्य को ही पूर्ण किया जाए और समस्या का समाधान ढूंढा जा सके।

प्रस्तुत अध्ययन में भी शोध छात्रा ने अपने अध्ययन को सीमित किया है। अध्ययन की सीमाएं इस प्रकार हैं–

1. प्रस्तुत अध्ययन इटावा जिले तक ही सीमित है।
2. अध्ययन सिर्फ इटावा जिले में रह रही ग्रामीण छात्राओं तक ही सीमित हैं।
3. अध्ययन में सिर्फ उन्हीं महाविद्यालयों को ही शामिल किया गया, जहां स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित है।
4. अध्ययन में सिर्फ 5 महाविद्यालयों को शामिल किया गया है।
5. अध्ययन में विभिन्न महाविद्यालयों में पढ़ने वाली 200 छात्राओं का चयन किया गया, जिसमें 100 स्नातक एवं 100 स्नातकोत्तर की छात्राएं शामिल हैं।
6. अध्ययन में सिर्फ उन छात्राओं को शामिल किया गया जो ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती हैं और साथ ही पुस्तकालय का उपयोग करती हैं।
7. जो छात्रा ग्रामीण परिवेश की है, लेकिन पढ़ने के लिए शहर में हॉस्टल या किराए पर रह रही है, उसे अध्ययन में ग्रामीण छात्रा मानकर अध्ययन में शामिल किया गया है।
8. ऐसी कोई भी छात्रा जो शहर में जन्म से रह रही है या जिसका पालन पोषण शहर में हुआ है, ऐसी छात्रा को अध्ययन में शामिल नहीं किया गया।
9. ऐसी कोई भी छात्रा जो ग्रामीण परिवेश की है, लेकिन पुस्तकालय का उपयोग नहीं करती, उसे अध्ययन में शामिल नहीं किया गया।
10. ऐसी कोई भी छात्रा जो शहर की है, लेकिन पुस्तकालय का उपयोग करती है, उसे अध्ययन में शामिल नहीं किया गया।
11. अध्ययन में उस महाविद्यालय को शामिल नहीं किया जहां या तो सिर्फ स्नातक पाठ्यक्रम संचालित है या सिर्फ स्नातकोत्तर।
12. अध्ययन मे सिर्फ उन महाविद्यालयों को शामिल किया गया, जोकि छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध हैं और इटावा जनपद के अंतर्गत आते हैं।

1.9 अध्ययन का क्षेत्र (Area of Study)

इटावा का संक्षिप्त परिचय :–

अध्ययन क्षेत्र इटावा है। यह उत्तर प्रदेश का एक जिला (जनपद) है। यह उत्तर प्रदेश के पश्चिम ओर सीमा पर स्थित है, जिसके पश्चिम में मध्य पद्रेश की सीमा शुरू होती है। इटावा से लगे हुए जिले औरैया, मैनपुरी, कन्नौज, फिरोजाबाद और आगरा हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार इटावा की जनसंख्या 15,81,810 है, जिसमें पुरूष 845856 है तथा महिलाओं की संख्या 7,35,954 है।[13] जनपद की कुल साक्षरता दर 78.41 है। इसमें पुरूषों की 86.06 है तथा महिलाओं की 69.61 है। जिले में 65 से अधिक महाविद्यालय कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध हैं।[14] इसके अलावा अन्य विश्वविद्यालयों से सम्बद्ध कॉलेज या शिक्षा संस्थान संचालित किए जा रहे हैं। शोधछात्रा ने अपने अध्ययन में कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध महाविद्यालयों का चयन किया है। जनगणना के आंकड़ों के अनुसार उत्तर प्रदेश में इटावा जनसंख्या के मामले में 61वें स्थान पर है।

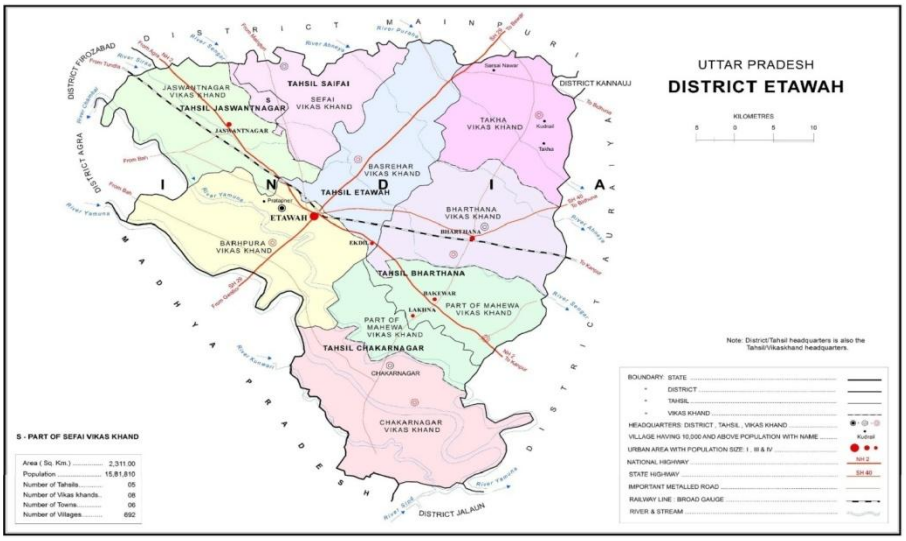

इटावा का मानचित्र[15]

निवास क्षेत्र :–

2011 कें आंकड़ों के अनुसार जनपद में कुल 692 गांव हैं, जिनमें 275627 परिवार निवास करते हैं। ग्रामीण जनसंख्या पर ध्यान दें तो पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्रों की जनसंख्या 1215511 है। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले पुरूषों की जनसंख्या 652740 हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों

[13] Source- http://censusindia.gov.in/
[14] Source- http://www.kanpuruniversity.org
[15] source- https://www.mapsofindia.com/maps/uttarpradesh/tehsil/etawah.html

में निवास करने वाली महिलाओं की जनसंख्या 562771 है। आंकड़ों के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक जनसंख्या निवास करती है। शहरों में कुल जनसंख्या मात्र 366299 है, जिसमें कुल पुरूषों जनसंख्या 193116 और महिलाओं की संख्या 173183 है। यदि इटावा की जनसंख्या को प्रतिशत में मापा जाए तो जनगणना के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में 76.8 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, जिसमें कुल पुरूष जनसंख्या 77.2 एवं महिला जनसंख्या 76.5 है। इसी प्रकार शहरों में 23.16 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है, जिसमें 22.8 पुरूष हैं और 23.5 महिलाएं हैं।

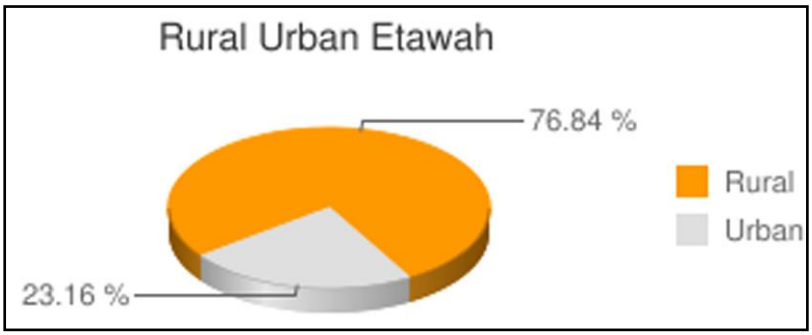

इटावा में ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र में रहने वाले निवासियों का अनुपात।[16]

लिंगानुपात :–

जनपद लिंगानुपात के मामले में काफी पीछे है। यहां लिंगानुपात 870 है जबकि उत्तर प्रदेश का लिंगानुपात 912 महिलाएं प्रति 1000 पुरूष हैं। इटावा में ग्रामीण क्षेत्रों में लिंगानुपात मात्र 862 है, शहरी क्षेत्र के अनुपात में कम है। उत्तर प्रदेश में इसका 60वां स्थान है।

शिक्षा :–

शिक्षा के मामले में इटावा अन्य कई जनपदों से आगे है। उत्तर प्रदेश में शिक्षा में इटावा का चौथा स्थान है।[17] जनपद में 78.4 प्रतिशत साक्षरता दर है, जबकि उत्तर प्रदेश की साक्षारता दर 67.7 प्रतिशत है।[18] जनपद में 78.4 प्रतिशत साक्षरता दर है,[19] जिसमें कुल

[16] Source- www.census2011.co.in/census/district/532-etawah.html
[17] Pg-13, Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA)
[18] Pg-13, Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA)

पुरूष साक्षरता दर 86.1 प्रतिशत है व कुल महिला साक्षरता दर 69.6 प्रतिशत है। इटावा में ग्रामीण क्षेत्र की कुल साक्षरता दर 77.3 प्रतिशत है, जिसमें 86.0 प्रतिशत पुरूष हैं और 67. 2 प्रतिशत महिलाएं हैं। शहर में कुल साक्षरता दर 82.0 प्रतिशत है, जिसमें पुरूष साक्षरता दर 86.3 है, जबकि महिलाओं की 77.2 है।

जनपद में 78.4 प्रतिशत साक्षरता दर है, जिसमें कुल पुरूष साक्षरता दर 86.1 प्रतिशत है व कुल महिला साक्षरता दर 69.6 प्रतिशत है।[20] आंकड़ों पर ध्यान दे ंतो पुरूष साक्षरता दर और महिला साक्षरता दर में 16.5 प्रतिशत का अंतर है।

यदि ग्रामीण क्षेत्र में यह अंतर का पता लगाएं तो पता चलता है कि इटावा में ग्रामीण क्षेत्र की कुल साक्षरता दर 77.3 प्रतिशत है, जिसमें 86.0 प्रतिशत पुरूष हैं और 67. 2 प्रतिशत महिलाएं हैं। यहां पुरूष और महिला के बीच साक्षरता दर में 18.8 प्रतिशत का अंतर है।

यदि शहर में पुरूष और महिला के बीच साक्षरता दर का अंतर पता लगाएं तो आंकड़ों से पता चलता है कि शहर में कुल साक्षरता दर 82.0 प्रतिशत है, जिसमें पुरूष साक्षरता दर 86.3 है, जबकि महिलाओं की 77.2 है। यहां पुरूष और महिला साक्षरता दर में अंतर 9.1 प्रतिशत है।

आंकड़ों पर ध्यान दे ंतो पुरूषों के साक्षरता दर कुल जनपद, ग्रामीण, शहर में क्रमशः 86.1, 86.0, 86.3 हर क्षेत्र में लगभग एक जैसी है। परंतु जब महिला साक्षरता दर की विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों पता लगाते हैं तो भारी अंतर देखने को मिलता है। जनपद में कुल, ग्रामीण, शहरी साक्षरता दर क्रमशः 69.6, 67.2, 77.2 है। ग्रामीण (67.2) और शहर (77.2) में महिला साक्षरता दर में 10 प्रतिशत का भारी अंतर दिखाई देता है, जो चिंतनीय स्थिति को दर्शाता है।

भाषा :– इटावा शहर में सर्वाधिक प्रचलित भाषा हिन्दी। इटावा शहर चूंकि आगरा के पास है। आगरा में संचार की की भाषा ब्रजबोली (आदर के साथ ब्रजभाषा कहा जाता है) है।

---

[19] Pg-xi, Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA)

[20] Pg-xi, Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA)

ब्रजबोली का क्षेत्र सिर्फ आगरा तक ही सीमित नहीं रहा। समय के साथ साथ इसका क्षेत्र भी बढ़ता गया और आज यह आगरा के साथ मथुरा, फिरोजाबाद, महामाया नगर, ऐटा, मैनपुरी, इटावा, कन्नौज, औरैया और फर्रूखाबाद तक ब्रजबोली का उपयोग किया जाता है। इस बोली का क्षेत्र उत्तर प्रदेश के अलावा राजस्थान के भरतपुर, हिण्डौनसिटी तक फैला हुआ है।[21] इस प्रकार इटावा में भी संचार की सबसे प्रचलित बोली ब्रजबोली ही है। हिन्दी भाषा से भी अधिक इसका प्रयोग किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र की बात करें तो सिर्फ ब्रजबोली का ही उपयोग किया जाता है। शहरी क्षेत्र में ब्रजबोली और हिन्दी भाषा दोनों का प्रयोग किया जाता है।

1.10 शोध विधि एवं प्रकृति (Method and Nature of Study)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह जिज्ञासु है और नए ज्ञान को प्राप्त करने में लगा हुआ है। मनुष्य कई तरह से ज्ञान की प्राप्ति करता है। समाज में रह रहे प्रचलित ज्ञान का अनुशरण करके, व्यक्तिक अनुभवों को अपनाकर, सत्ता द्वारा दिए गए ज्ञान को अपनाकर, समूह में नकल करके ज्ञान प्राप्त करता है।[22] परंतु जब मनुष्य नए ज्ञान की प्राप्ति करना चाहता है तब वह 'तर्क' (Logic) के आधार पर नए ज्ञान को प्राप्त करता है। मौलिक शोध (Fundamental Research) में तार्किक माध्यम से समस्या का समाधान करते हैं। इसी प्रकार शोध करने की दो विधियां होती हैं। पहला मात्रात्मक विधि (Quantitative Method) एवं दूसरा गुणात्मक विधि (Qualitative Method)।[23,24] मात्रात्मक विधि के अनुसार हम संख्याओं से संबंधित समस्या का समाधान करते हैं। यह विज्ञानों में प्रचलित है। गुणात्मक विधि का प्रयोग सामाजिक विज्ञानों में समस्याओं के समाधान के लिए किया जाता है। गुणात्मक विधि के दो प्रकार हैं। पहला निगमन विधि (Deductive Method) और

[21] https://hi.wikipedia.org/wiki/ब्रज भाषा

[22] पृष्ठ सं0– 2, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13

[23] Pg.No.- 36, Social Research Methods, Nicholas Walliman, SAGE Publication, New Delhi. 2006.

[24] Pg.No.- 8, Research Methodology, Dr.C. Rajendra Kumar, APH Publishing Corporation, New Delhi. 2010.

दूसरा आगमन विधि (Inductive Method)।[25] दोनों में तर्कों का प्रयोग कर निष्कर्ष निकालते हैं। तर्कों के आधार पर निगमन विधि (Deductive Method) में अध्ययन का क्रम सामान्य से विशिष्ट की ओर रहता है, जबकि आगमन विधि (Inductive Method) में अध्ययन का क्रम विशिष्ट से सामान्य की ओर रहता है।[26]

शोध छात्रा का अध्ययन मौलिक शोध (Fundamental Research) पर आधारित है, जिसमें गुणात्मक विधि अपनाकर तर्कों के आधार पर समस्या के समाधान के लिए निगमन विधि (Deductive Method) को अपनाया गया है।

1.11 अध्ययन का समग्र (Population of Study)

इटावा जनपद में कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्ध महाविद्यालयों में पढने वाली कुल ग्रामीण छात्राएं अध्ययन का समग्र हैं। इटावा जनपद में कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्ध कुल 65 महाविद्यालय संचालित हैं।[27] प्रत्येक महाविद्यालय में अलग–अलग पाठ्यक्रम संचालित हैं। इन्हीं पाठ्यक्रमों के कारण प्रत्येक महाविद्यालय में छात्र–छात्राओं की संख्या निर्धारित होती है।

इटावा जनपद में कानपुर विश्वविद्यालय द्वारा सम्बद्ध कुल 65 महाविद्यालयों में लगभग 52000 छात्र छात्राएं अध्ययनरत हैं, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र से आने वाली छात्राओं की संख्या निर्धारित करना कठिन है। प्रत्येक छात्रा के घर का पता महाविद्यालय द्वारा छात्राओं के अनुमति के बिना नहीं दिया गया, इसलिए ग्रामीण छात्राओं की कुल संख्या का पता लगाना मुश्किल है।

इसके अलावा कुछ ग्रामीण छात्राएं ऐसी हैं, जो महाविद्यालय में नामांकित तो हैं, लेकिन महाविद्यालय नहीं जाती, ऐसी छात्राओं की कुल संख्या का भी पता लगाना मुश्किल

[25] पृष्ठ सं0– 4, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13
[26] पृष्ठ सं0– 86, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन दिल्ली।
[27] Source- http://www.kanpuruniversity.org

था। इसलिए छात्रा ने निदर्शन विधि का उपयोग किया और समग्र में से 200 न्यादर्शों का चयन कर अध्ययन की समस्या का समाधान करने के लिए अग्रसर हुई।

1.12 न्यादर्श एवं निदर्शन विधि (Sampling)

1.12.1 न्यादर्श

समग्र में से कुछ इकाइयों को अध्ययन के लिए बानगी के रूप में चुनना निदर्शन (Sampling) कहलाता है।[28] इसके उदाहरण कुछ इस प्रकार हो सकते हैं। रसोई घर में गृहणी पतीले में पक रहे चावलों में कुछ चावल के दानों को निकालकर पता कर लेतीं हैं कि चावल पक गए कि नहीं। इसी प्रकार पैथेलॉजी में मरीज के रक्त की कुछ बूंदों को लेकर यह जांच कर लेता है कि मरीज के संपूर्ण रक्त में क्या बीमारी है। खरीददार बाजार में गेहूं, दाल खरीदने के लिए भरे हुए संपूर्ण बोरे की जांच करने के बजाएं एक मुट्ठी भरकर जांच कर लेता है और बोरा खरीद लेता है। ये सभी निदर्शन के उदाहरण हैं। कई बार समग्र का क्षेत्र इतना बड़ा होता है कि अध्ययन करना संभव नहीं होता, ऐसे में निदर्शन विधि उपयोगी होती है।[29] ''जब कभी किसी समग्र (इकाई, वस्तुओं या मनुष्यों का समूह) में किसी चर का विशिष्ट मान ज्ञात करने के लिए उसकी कुछेक इकाइयों को चुन लिया जाता है तो इस चुनने की क्रिया को निदर्शन (Sampling) कहते हैं, तथा चुनी हुई इकाइयों के समूह को न्यादर्श (Sample) कहते हैं।''[30]

न्यादर्श का लाभ यह होता है कि समय की बचत तो होती ही है साथ ही गहन अध्ययन करने के लिए समय भी मिल जाता है। इसी के साथ धन की बचत भी होती है।[31,32] सामाजिक शोध में निदर्शन दो प्रकार के होते हैं। पहला, सम्भाव्यता निदर्शन (Probability Sampling) और दूसरा, असम्भाव्यता निदर्शन (Non-Probability

---

[28] पृष्ठ सं0– 267, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन दिल्ली।
[29] Pg.No.- 75, Social Research Methods, Nicholas Walliman, SAGE Publication, New Delhi. 2006.
[30] पृष्ठ सं0– 285, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13
[31] पृष्ठ सं0– 61, अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में, एच0के0 कपिल, राखी प्रकाशन आगरा। 2012.
[32] पृष्ठ सं0– 287, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13

Sampling)। जब समग्र की किसी इकाई को न्यादर्श में सम्मिलित करने के लिए उसका चयन संयोग पर निर्भर करे तो उस चयन विधि को सम्भाव्यता निदर्शन (Probability Sampling) कहते हैं। इसमें इकाई को चुनने के समान अवसर और संभावना होती है। इसी प्रकार असंभाव्यता निदर्शन सम्भाव्यता निदर्शन के विपरीत होती है। इसमें सम्भावना एवं संयोग का कोई महत्व नहीं होता। इसीलिए इसे असम्भाव्यता निदर्शन (Non-Probability Sampling) कहते हैं। इसमें निदर्शन की इकाइयों का चयन अनुसंधानकर्ता की इच्छा पर निर्भर करता है।[33] कई बार सम्भाव्यता निदर्शन (Probability Sampling) में ऐसी कठिनाइयां उपस्थित हो जाती हैं, जिसके कारण उन विधियों का प्रयोग ही कर पाते। मानवीय सर्वेक्षणों में ऐसी स्थिति तब आती है जब चुना गया व्यक्ति मर गया होता है या कहीं दूर गया होता है अथवा सहयोग देने से इंकार कर देता है। ऐसी परिस्थिति में असम्भाव्यता निदर्शन (Non-Probability Sampling) इकाई चयन की प्रचलित पद्धति है।[34]

प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्रा द्वारा महाविद्यालयों का चयन करने के लिए सम्भाव्यता निदर्शन में का चयन किया गया, जबकि चयनित महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं के चयन के लिए असम्भाव्यता निदर्शन का चयन किया गया।

1.12.2 निदर्शन विधि (Sampling Method) :–

अभ्यंश निदर्शन में सर्वप्रथम समग्र को कई वर्गों में विभाजित किया जाता है। फिर प्रत्येक वर्ग में से चुनी जाने वाली इकाइयों की संख्या तय कर ली जाती है। इस निश्चित संख्या को ही अभ्यंश (Quota) कहते हैं। इसके बाद अनुसंधानकर्ता प्रत्येक वर्ग में से निर्धारित मात्रा में अपनी इच्छानुसार इकाइयों का चुनाव कर लेता है। चूंकि इस विधि में अध्ययनकर्ता को इकाइयों के चयन की स्वतंत्रता होती है, ऐसे में कोटा निदर्शन में चुनाव के समय पक्षपात की सम्भावना रहती है। परंतु प्रस्तुत अध्ययन में ऐसा होना संभव नहीं है, क्योंकि अध्ययन ग्रामीण छात्राओं से संबंधित है जो पहले से ही ग्रामीण क्षेत्र के और कम

[33] पृष्ठ सं0– 281, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन दिल्ली।
[34] पृष्ठ सं0– 296, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13

संसाधन में जीवन यापन करते हैं। इसके साथ ही इनकी संख्या औसत शिक्षित संख्या से कम है। ऐसे में ग्रामीण छात्राओं के चयन में पक्षपात की बात महत्वहीन हो जाती है।

शोध छात्रा ने सर्वप्रथम लॉटरी विधि द्वारा समग्र महाविद्यालयों में से 5 महाविद्यालयों का चयन किया गया। इसके बाद चयनित महाविद्यालयों में से न्यादर्शों को दो भागों में विभाजित किया गया। पहला भाग स्नातक छात्राओं का और दूसरा भाग स्नातकोत्तर छात्राओं का है। जनपद में 100 स्नातक छात्राओं से आंकड़ों का संकलन किया। इसी प्रकार 100 स्नातकोत्तर छात्राओं से आंकड़ों का संकलन किया।

इसका विवरण निम्न तालिका में इस प्रकार है–

कुल न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं का विवरण

चयनित महाविद्यालय का नाम	स्नातक	स्नातकोत्तर	कुल छात्राएं
1. पंचायत राज राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा, उ0प्र0।	20	20	40
2. कर्म क्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा	20	20	40
3. चौधरी चरण सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हेंवरा, सैफई, इटावा	20	20	40
4. जनता महाविद्यालय, बकेवर, इटावा	20	20	40
5. ठाकुर राजेश सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पचावली, इटावा	20	20	40
कुल	100	100	200

प्रत्येक महाविद्यालय से 20 स्नातक की एवं 20 स्नातकोत्तर की, कुल 40 ग्रामीण छात्राओं से प्रश्नावली भरवाई गई। यह विधि कुल पांचों महाविद्यालयों में अपनाई गई है और कुल

200 न्यादर्शों का चयन कर उनसे प्रश्नावली भरवाई गई और आंकड़ों का संकलन किया गया। आंकड़ों का संकलन उन छात्राओं से किया गया जो उपस्थित रहीं।

1.13 अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण (Tools)

अध्ययन में उपकरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जैसे एक मैकेनिक को एक इंजन या मशीन को ठीक करने के लिए अपने यंत्र–बॉक्स (Tool-Box) में से एक उपयुक्त यंत्र (Appropriate Tool) की जरूरत होती है, उसी तरह अनुसंधान के अंतर्गत किसी समस्या के समाधान के लिए एक शोधकर्ता को एक ऐसे उपकरण अथवा वैज्ञानिक प्रक्रिया का चयन करना पड़ता है, जिसके वह अपनी समस्या का समाधान कर सके।[35] शोध कर्ता के सामने यह समस्या आती है कि समस्या के समाधान के लिए आंकड़ों का संग्रहण किस प्रकार और किन उपकरणों के द्वारा करे।[36] उपकरण जितना विश्वसनीय होगा समाधान भी उतना ही सटीक और उचित होगा।

शोध छात्रा द्वारा अध्ययन की समस्या के समाधान के लिए दो उपकरणों का उपयोग कर आंकड़ों का संकलन किया गया है, जो इस प्रकार हैं–

1. **प्रश्नावली–** जो ग्रामीण छात्राओं महाविद्यालय में पुस्तकालय का उपयोग करती हैं, उनसे प्रश्नावली उपकरण के माध्यम से प्रश्न पूछकर आंकड़ों का संकलन किया गया।
2. **साक्षात्कार–** महाविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष से पुस्तकालय के संबंध में साक्षात्कार कर आंकड़ों का संकलन किया गया।

1.14 आंकड़ों का संकलन (Data Collection)

[35] पृष्ठ सं0– 222, अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में, एच0के0 कपिल, राखी प्रकाशन आगरा। 2012.
[36] पृष्ठ सं0– 233, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13

अध्ययन की समस्या के समाधान के लिए बनाई गई शोध प्रविधि में आंकड़ों का संकलन बहुत ही महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती है, जोकि समस्या का समाधान अपने अंदर छुपाए हुए होती है। समस्या के समाधान हेतु आवश्यक तथा तर्क–संगत आंकड़ों के संकलन की आवश्यकता होती है।[37] अध्ययन की समस्या के समाधान के लिए आंकड़ों के संकलन में जितनी सावधानी रखी जाएगी, प्राप्त निष्कर्ष उतना ही विश्वसनीय तथा वैध होगा।[38] सूचना/आंकड़ों के दो प्रकार होते हैं। पहला, प्राथमिक आंकड़े (Primary Data)[39] और दूसरा, द्वितीयक आंकड़े (Secondary Data)[40]। पी0वी0 यंग के अनुसार, ''प्राथमिक तथ्य सामग्री का तात्पर्य उन सूचनाओं व आंकड़ों से है जिनको पहली बार संकलित किया गया हो तथा जिनके संकलन का उत्तरदायित्व शोधकर्ता या सर्वेक्षणकर्ता का अपना है''।[41] प्राथमिक आंकड़ों के संकलन में शोध छात्रा स्वयं संलग्न रही।

प्राथमिक तथ्य[42] वे मौलिक सूचनाएं या आंकड़े होते हैं जो कि एक अनुसंधानकर्ता वास्तविक अध्ययन स्थल में जाकर विषय या समस्या से संबंधित जीवित व्यक्तियों से साक्षात्कार करके अथवा अनुसूची अथवा प्रश्नावली की सहायता से एकत्रित करता है अथवा प्रत्यक्ष निरीक्षण द्वारा प्राप्त करता है। इसी प्रकार द्वितीयक तथ्य (Secondary Data)[43] वे सूचनाएं और आंकड़े हैं जो कि अनुसंधानकर्ता को प्रकाशित व अप्रकाशित प्रलेखों (Documents), रिपोर्टों, सांख्यिकी, पाण्डुलिपि, पत्र, डायरी, टेप, वीडियो–ऑडियो कैसेट या इंटरनेट आदि से प्राप्त होते हैं।[44]

प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्रा द्वारा **प्राथमिक आंकड़ों** का संकलन किया गया। आंकड़ों का संकलन करने के लिए शोध छात्रा स्वयं संलग्न रही।

शोध छात्रा इटावा के महाविद्यालयों में स्वयं गई। महाविद्यालय में उपस्थित ग्रामीण छात्राओं को ढूंढा तथा उन ग्रामीण छात्राओं को अपना परिचय दिया। इसके साथ ही अध्ययन और प्रश्नावली के बारे में जानकारी दी और प्रश्नावली भरवाई। प्रश्नों के उत्तर

---

[37] पृष्ठ सं0– 220, अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में, एच0के0 कपिल, राखी प्रकाशन आगरा। 2012.
[38] पृष्ठ सं0– 300, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13
[39] Pg.No.- 87, Social Research Methods, Nicholas Walliman, SAGE Publication, New Delhi. 2006.
[40] Pg.No.- 84, Social Research Methods, Nicholas Walliman, SAGE Publication, New Delhi. 2006.
[41] पृष्ठ सं0– 138, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन दिल्ली।
[42] Pg.No.- 70, Research Methodology, Dr.C. Rajendra Kumar, APH Publishing Corporation, New Delhi. 2010.
[43] Pg.No.- 57, Research Methodology, Dr.C. Rajendra Kumar, APH Publishing Corporation, New Delhi. 2010.
[44] पृष्ठ सं0– 139, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन दिल्ली।

लेते समय शोध छात्रा द्वारा समय–समय पर सही जानकारी देने के लिए आग्रह किया गया, ताकि जो भी जानकारी दी जाए वह सत्य हो, जो समस्या के समाधान में मदद कर सके। शोध छात्रा जब भी किसी न्यादर्श ग्रामीण छात्रा के पास प्रश्नावली भरवाने गई, उस समय छात्रा को सामान्य निर्देश पढ़ने का आग्रह जरूर किया।

1.14.1 प्रश्नावली (Questionnaire) :–

प्रश्नावली सामाजिक अनुसंधान की समस्या से संबंधित आंकड़े एकत्रित करने की एक प्रविधि है।[45] प्रश्नावली आंकड़ों के संकलन हेतु एक प्रचलित उपकरण है।[46] प्रश्नावली भरवाते समय अध्ययनकर्ता स्वयं संलग्न भी हो सकता है जैसे अनुसूची में शोधकर्ता स्वयं उपस्थित होकर सूचनादाता से प्रश्न करता है।[47] हालांकि प्रश्नावली दूर दराज के क्षेत्रों में डाक, ईमेल आदि से भेजकर भी आंकड़ों का संकलन किया जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्रा ने स्वयं अध्ययन क्षेत्र में जाकर प्रश्नावली भरवाई। शोध छात्रा ने तीन पृष्ठों की प्रश्नावली (Questionnaire) तैयार की। प्रथम पृष्ठ पर शोध छात्रा एवं उसके अध्ययन का परिचय है, इसके अलावा सूचना देने वाले न्यादर्श ग्रामीण छात्रा की सामान्य जानकारी जिसमें नाम, आयु, पता, शिक्षा स्तर आदि शामिल है। द्वितीय पृष्ठ में प्रथम भाग है, जिसमें कुल 15 प्रश्न शामिल किए गए। तृतीय पृष्ठ में द्वितीय भाग है, जिसमें कुल 10 प्रश्न हैं। प्रश्नावली में कुल 25 प्रश्न शामिल किए गए।

प्रश्नावली भरवाने से पहले न्यादर्श छात्रा को सामान्य निर्देश पढ़ने का आग्रह किया। प्रथम पृष्ठ के सबसे नीचे सामान्य निर्देश दिए गए, जो सूचनादाता के लिए थे, ताकि प्रश्नों के उत्तर देने से पहले वह पढ़ ले।

ये सामान्य निर्देश इस प्रकार हैं–

1. इस प्रश्नावली में पूछे प्रश्न के उत्तर के लिये दिए गए विकल्प पर सही ☑ का चिह्न लगाना है।
2. इस प्रश्नावली का मुख्य उद्देश्य आपके द्वारा उपयोग किए जाने वाले पुस्तकालय का अध्ययन करना है ।

---

[45] पृष्ठ सं0– 206, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन दिल्ली।
[46] पृष्ठ सं0– 260, अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में, एच0के0 कपिल, राखी प्रकाशन आगरा। 2012.
[47] पृष्ठ सं0– 242, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13

3. इस प्रश्नावली में कोई भी प्रश्न 'सही' या 'गलत' नहीं है, सभी का अपना दृष्टिकोण होता है, इसलिए आप बेझिझक उत्तर दें।
4. हो सकता है कि कुछ प्रश्न आप पर लागू न हो, पर फिर भी स्वयं को उस परिस्थिति में रख कर उत्तर दें।
5. प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न में विकल्प है, परंतु अगर आप प्रश्न के किसी विकल्प से सहमत नहीं हैं तो अपना स्वयं का विकल्प दे सकते हैं।

जब न्यादर्श ग्रामीण छात्रा द्वारा सामान्य निर्देश पढ़ लिए जाते थे, तो प्रश्नावली भरने का कार्य शुरू कर दिया जाता था। प्रश्नावली ग्रामीण छात्रा अर्थात न्यादर्श द्वारा स्वयं ही भरा गया ।

संदर्भ सूची –

1. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 2.
2. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 4.
3. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ. सामाजिक शोध व सांख्यिकी. दिल्लीः विवेक प्रकाशन. पृ0– 86.
4. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ. सामाजिक शोध व सांख्यिकी. दिल्लीः विवेक प्रकाशन. पृ0– 267.
5. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 285.
6. कपिल, एच0 के0. (2012). अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में. आगराः राखी प्रकाशन आगरा. पृ0– 61
7. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 287.
8. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ. सामाजिक शोध व सांख्यिकी. दिल्लीः विवेक प्रकाशन. पृ0– 281.
9. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 296.
10. कपिल, एच0 के0. (2012). अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में. आगराः राखी प्रकाशन आगरा. पृ0– 222.
11. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 233.
12. कपिल, एच0 के0. (2012). अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में. आगराः राखी प्रकाशन आगरा. पृ0– 220.
13. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 300.
14. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ. सामाजिक शोध व सांख्यिकी. दिल्लीः विवेक प्रकाशन. पृ0– 138.
15. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ. सामाजिक शोध व सांख्यिकी. दिल्लीः विवेक प्रकाशन. पृ0– 139.
16. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ. सामाजिक शोध व सांख्यिकी. दिल्लीः विवेक प्रकाशन. पृ0– 206.
17. कपिल, एच0 के0. (2012). अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में. आगराः राखी प्रकाशन आगरा. पृ0– 260.
18. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 242.
19. शर्मा, डा0 बी0 के0., ठाकुर, डा0 यू0 एस0. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान एम0 लिब0 आई0 एस0 सी0 ज्ञान दर्शिका. आगराः वाई0 के0 प्रकाशन, संजय प्लेस. पृ0– 8.
20. बोरा, मुकेश. एवं अन्य. यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेटः पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान प्रश्न पत्र 2 एवं 3. नई दिल्ली. अरिहन्त प्रकाशन. पृ0– 63.
21. बोरा, मुकेश. एवं अन्य. यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेटः पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान प्रश्न पत्र 2 एवं 3. नई दिल्ली. अरिहन्त प्रकाशन. पृ0– 63.

22. Walliman, Nicholas. (2006). Social Research Methods. New Delhi: SAGE Publication. pp- 36.
23. Kumar, Dr. C. Rajendra. (2010). Research Methodology. New Delhi: APH Publishing. pp- 08.
24. Walliman, Nicholas. (2006). Social Research Methods. New Delhi: SAGE Publication. pp- 75.
25. Walliman, Nicholas. (2006). Social Research Methods. New Delhi: SAGE Publication. pp- 87.
26. Walliman, Nicholas. (2006). Social Research Methods. New Delhi: SAGE Publication. pp- 84.
27. Kumar, Dr. C. Rajendra. (2010). Research Methodology. New Delhi: APH Publishing. pp- 70.
28. Kumar, Dr. C. Rajendra. (2010). Research Methodology. New Delhi: APH Publishing. pp- 57.
29. Murad, Anatol. (1964). What Keynes Means. New Haven: USA, United Printing Services. pp- 182.

30. Gupta, K. R. (2008). Poverty in India, New Delhi: Atlantic Publishers & Distributors (P) Ltd. pp- 13.
31. Narula, Uma. (2013). Communication models, New Delhi: Atlantic Publishers & Distributors (P) Ltd.
32. Prasad, Kiran. Communication for Development Reinventing Theory and Action, vol-2, New Delhi: B.R. Publishing Corporation. pp- 396
33. Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA). pp- 32
34. Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA). pp- 13
35. Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA). pp- xi
36. NFHS- 2, 1998-99 (2000). National Family Health Survey, India.
37. https://hi.wikipedia.org/wiki/ब्रज भाषा
38. http://censusindia.gov.in/
39. http://www.kanpuruniversity.org
40. https://www.mapsofindia.com/maps/uttarpradesh/tehsil/etawah.html
41. www.census2011.co.in/census/district/532-etawah.html
42. http://www.kanpuruniversity.org
43. http://mp.gov.in/web/guest/tourism11#5

द्वितीय अध्याय

साहित्यिक समीक्षा

(Literature Review)

2.1 प्रस्तावना

एक समय था जब एक कोई संदर्भ ढूंढने के लिए न जाने कितनी पुस्तकें छाननी पड़ जाती थी। अब डिजीटल पुस्तकालय का जमाना है, जहां संदर्भ या किसी के द्वारा कही हुई बात को सिर्फ टाइप कर दीजिए, उससे जुड़ी हुई चीजें सब आपके स्क्रीन के सामने आ जाएंगी। इसके अलावा पुस्तकें, पत्र–पत्रिकाएं आदि विभिन्न माध्यमों द्वारा जाकारियां प्राप्त की जा सकती हैं। शोधकर्ता अपनी समस्या से संबंधित जानकारियां ढूंढता है और पता लगाता है कि क्या उसकी समस्या का समाधान मिल रहा है या नहीं। और यदि नहीं मिल रहा है तो उपलब्ध ज्ञान समस्या के समाधान में क्या मदद कर रहा है। प्रस्तुत अध्ययन की समस्या से संबंधित शोध छात्रा ने भी अध्ययन किया और समस्या के समाधान से संबंधित जानकारियों को इक्ट्ठा करने की कोशिश की। शोध छात्रा ने अध्ययन की समस्या से संबंधित जो जानकारियां प्राप्त की उनकी समीक्षा इस प्रकार है–

2.2 ग्रामीण विकास एवं साक्षारता अभियान

1999 में शोधार्थी के0पी0 सरस्वती नायडू ने ''ग्रामीण विकास एवं साक्षरता अभियान में पुस्तकालय की भूमिका''[48] विषय पर जे0एल0 सायनी के पर्यवेक्षण में अध्ययन को गुरू घासीदास विश्वविद्यालय से पूर्ण किया। अध्ययन में शोधार्थी ने पाया ग्रामीण परिवेश में उतनी प्रतिभाएं उभर कर सामने नहीं आती, जितनी कि शहर से निकलती हैं। आनुपातिक तौर पर ग्रामीण क्षेत्र से कम प्रतिभाएं निकलती हैं। उन्होंने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के विकास के बावजूद यह स्थिति है। उन्होंने अध्ययन में पाया कि सामाजिक कुरीतियों, भेदभाव, जागरूकता में कमी, अज्ञानता, आर्थिक विषमता आदि की वजह से ग्रामीण विकास में रूकावटें पैदा कर रही है। शोधार्थी ने अध्ययन में यह माना कि ग्रामीण विकास में पुस्तकों एवे पुस्तकालय की अहम भूमिका है। ग्रामीण क्षेत्र में पुस्तकालय की अत्यन्त सीमित और नाममात्र की सेवाएं पुस्तकालय के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सक्षम नहीं हैं। अध्ययन में शोधार्थी ने पाया कि ग्रामीण क्षेत्र में पंचायत विभाग द्वारा संचालित पुस्तकालयों की दशा अत्यंत दयनीय है। अधिकतर पुस्तकालयों में 25 से 50 तक ही पुस्तकें हैं। शोधार्थी ने पुस्तकालयों के विकास के लिए सरकार के हस्तक्षेप को महत्वपूर्ण माना। अध्ययन में ग्रामीण छात्राओं पर पुस्तकालय के प्रभाव का अध्ययन नहीं है।

[48] http://hdl.handle.net/10603/9463

2.3 केरल का ब्रिटिश पुस्तकालय

शोधार्थी टी0के0 सुब्रामोनी ने 2005 में "Impact of the British Library Thiruvananthapuram on the socio economic and educational development of the users"[49] विषय पर मनोरमा श्रीनाथ के पर्यवेक्षण में अध्ययन किया। अध्ययन गांधीग्राम ग्रामीण संस्थान से किया गया। अध्ययन में शोधार्थी ने पाया कि ब्रिटिश लाइब्रेरी में 75 प्रतिशत से अधिक उपयोगकर्ताओं की उम्र 18 से 35 के बीच है। शोधार्थी ने अध्ययन में पाया कि ब्रिटिश पुस्तकालय का 90 प्रतिशत उपयोगकर्ताओं पर प्रभाव पड़ रहा है। अध्ययन में पाया गया कि पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं में सिर्फ 25 प्रतिशत महिलाएं हैं। यह निष्कर्ष महत्वपूर्ण है। इससे हम यह समझ सकते हैं कि अधिकतर महिलाएं कम पुस्तकालय जा पाती हैं या यह भी कह सकते हैं कि पुस्तकालय का उपयोग नहीं कर पाती हैं। शोधार्थी ने अपने अध्ययन में पाया कि पुस्तकालय के प्रभाव के प्रति महिला उपयोगकर्ताओं के साकारात्मक प्रतिक्रियाएं हैं। इसका अर्थ यह निकाला जा सकता है कि छात्राएं पुस्तकालय के प्रति जागरूक हैं और पुस्तकालय का प्रभाव उन पर पड़ रहा है। शोधार्थी ने अध्ययन में यह भी पाया कि पुस्तकालय सामाजिक विकास में साकारात्मक भूमिका निभाता है। साथ ही यह भी कि उपयोगकर्ताओं के जीवन में ब्रिटिश पुस्तकालय उनके जीवन में धनात्मक और लाभप्रद प्रभाव डाल रहा है। अध्ययन में शोधार्थी ने यह भी पाया कि ब्रिटिश लाइब्रेरी उपयोगकर्ताओं की नौकरी में भी किसी प्रकार से सहायक है।

2.4 अनंतपुर में ग्रामीण राजकीय पुस्तकालय

–1993 के एक अध्ययन ''Rural public libraries in Anantapur district a study of library materials services and user practices''[50] कृष्णा देवराय विश्वविद्यालय के शोधार्थी पी.एस. सोम्याजुलु द्वारा पूरा किया गया। शोध पर्यवेक्षक पी0 मुरली धराडु रहे। अपने अध्ययन में उन्होंने बताया गया कि ग्रामीण क्षेत्र में पुस्तकालय का स्टेक्चर शहर से थोड़ा अलग है। पुस्तकालय के रखरखाव और संचालन, फर्नीचर और सुविधाओं पर अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि उपलब्ध सामग्री का पाठक कैसे लाभ उठाते हैं।

[49] http://hdl.handle.net/10603/50433
[50] http://hdl.handle.net/10603/85645

2.5 पंजाब में ग्रामीण राजकीय पुस्तकालय नेटवर्क

– शोधार्थी जगतार सिंह ने "Rural public library network in Punjab a study 1947 to 1980'' (Panjab University, 1984)[51] विषय पर श्री जगदीश एस0 शर्मा के पर्यवेक्षण में अध्ययन किया। श्री सिंह ने अपना अध्ययन वर्ष 1984 में पंजाब विश्वविद्यालय से पूरा किया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि पहले शहरों में पुस्तकालय खुल फिर ग्रामीण क्षेत्रों में खुले। उन्होंने यह जानकारी दी कि क्षेत्र में किस प्रकार से ग्रामीण पुस्तकालय का विकास हुआ। उन्होने बताया कि शुरूआत में सिर्फ शहरी क्षेत्र में ही पुस्तकालय की सेवाएं थी। ग्रामीण क्षेत्र में न के बराबर ही सुविधाएं पहुंची। अध्ययन में जानकारी दी कि शिक्षा सिर्फ स्कूलों या महाविद्यालयों तक ही सीमित नहीं रहती वह अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। ग्रामीण क्षेत्र में पुस्तकालय का विकास हमेशा से उपेक्षित रहा है।

2.6 उत्तर प्रदेश में पुस्तकालय

– शोधार्थी ज्योति मिश्रा ने "A Study of Conservation and Preservation Techniques followed in the Libraries of Uttar Pradesh''[52] विषय पर प्रो0 एन0आर0 सत्यनारायण के पर्यवेक्षण में अध्ययन किया। 2014 में उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से अपना अध्ययन पूरा किया। अध्ययन में उन्होंने पाया कि केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों की स्थिति राज्य विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से अच्छी है। इसके अलावा उन्होंन रखरखाव पर भी निष्कर्ष निकाले अलीगढ़ विश्वविद्यालय की स्थिति को अन्य से अच्छा बताया। उन्होंने अपने अध्ययन में लाइट व्यवस्था से लेकर खिड़कियों पर लगे पर्दों पर भी ध्यान दिया। इसके अलावा पुस्तकालय में रखी पुस्तकें, फर्नीचर को लगने वाले फन्गश, दीमक आदि की व्यवस्था पर भी अध्ययन किया और जानकारी प्राप्त की। इसमें पुस्तकालय से संबंधित गहन जानकारी मिलती है, जो उत्तर प्रदेश में संचालित हैं। लेकिन ग्रामीण संबंधी जानकारी नहीं मिलती।

[51] http://hdl.handle.net/10603/79884
[52] http://hdl.handle.net/10603/24241

2.7 गुजरात विश्वविद्यालयों में पुस्तकालय

– 2013 में एक अध्ययन "Automation in university libraries of Gujarat state An empirical study"[53] विषय पर हुआ, जो कि शोधकर्ता नरेन्द्र कुमार शर्मा ने प्रो0 मयंक जे0 त्रिवेदी के पर्यवेक्षण में सिंघानिया विश्वविद्यालय से पूरा किया। इस अध्ययन में शोधकर्ता ने पाया कि पुस्तकालय की व्यवस्था 1960 का दशक काफी अच्छा नहीं रहा। उन्होंने अध्ययन में पाया कि उपभोक्ता सही समय पर पुस्तकों को नहीं लौटा पाते। इसी के साथ मासिक रूप मिलने वाली सामग्री भी सही समय पर नहीं मिल पाती। ऐसे में पुस्तकालय की कार्यप्रणाली संतोषजनक ही है। अध्ययन में उन्होंने पाया कि अत्यधिक पाठ्यक्रमों के संचालन की वजह से पुस्तकालय की व्यवस्था प्रभावित हुई है। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन में पुस्तकालय स्टाफ की भूमिका को महत्वपूर्ण मानकर उनके योगदान को बताया।

2.8 मध्य प्रदेश में पुस्तकालय अधिनियम

– 1998 में एक अध्ययन ''भारतीय राज्यों के पुस्तकालय अधिनियम का अध्ययन : मध्य प्रदेश में पुस्तकालय अधिनियम की अनिवार्यता एवं भविष्य''[54] विषय पर हुआ जिसे शोधार्थी राम कीर्तन तिवारी ने ब्रिजेश तिवारी के पर्यवेक्षण में गुरू घासीदास विश्वविद्यालय से पूरा किया। अध्ययन 1998 में पूरा हुआ। उन्होंने पुस्तकालय को संस्कृति और सभ्यता दोनों माना है। इसके अलावा पुस्तकालय चाहे सरकारी हो या नहीं उसका महत्व कम नहीं हो जाता। पुस्तकालय अधिनियम की आवश्यकता को बताते हुए उन्होंने अध्ययन में पाया कि पुस्तकालय अधिनियम से पुस्तकालय एक संजाल व्यवस्था से जुड़ जाता है और उसका महत्व बढ़ जाता है। उन्होंने अध्ययन में पाया कि पुस्तकालय अधिनियम से जनता को सुअवसर मिलता है। समाज के सर्वांगीण विकास के लिए पुस्तकालय अधिनियम महत्वपूर्ण है। इससे पुस्तकालय की वित्त की व्यवस्था भी होने लगती है। अध्ययन में शोधकर्ता ने माना कि प्रदेश में एक केन्द्रीय पुस्तकालय होना ही चाहिए। साथ ही पुस्तकालय के कर्मचारियों को भी उपभोक्ताओं के प्रति सहायक रहना चाहिए, ताकि पुस्तकालय के महत्व को सफल किया जा सके। हालांकि ग्रामीण छात्राओं पर किसी प्रकार का अध्ययन नहीं

[53] http://hdl.handle.net/10603/69885
[54] http://hdl.handle.net/10603/12665

किया गया। और न ही इस अध्ययन में यह पता चलता है कि ग्रामीण छात्राओं पर पुस्तकालय का क्या प्रभाव पड़ रहा है।

2.9 डिब्रूगढ़ में महाविद्यालय पुस्तकालय का प्रभाव

2016 में शोधार्थी सदानंद नाथ द्वारा "College library effectiveness study with special reference to the tinsukia and dibrugarh district"[55] विषय पर किया गया, जोकि नरेन्द्र नाथ शर्मा के पर्यवेक्षण में गोवाहाटी विश्वविद्यालय से पूरा किया गया। अध्ययन में शोधार्थी ने माना कि पुस्तकालयों में महाविद्यालयों में पढ़ रहे छात्रों की अपेक्षा स्टाफ कम है। उनका मानना है कि छात्रों की संख्या के अनुकूल स्टाफ होना चाहिए। अध्ययन में उन्होंने पाया कि जिले में संचालित पुस्तकालयों का आपस में संबंध नहीं है। यदि पुस्तकालयों को आपस में जोड़ दिया जाए तो पुस्तकालयों को और अधिक विकसित किया जा सकता है और पुस्तकालय को और अधिक लाभप्रद बनाया जा सकता है। उन्होंने माना कि पुस्तकालयों के कर्मचारी एक दूसरे से जुड़ जाएं तो समय समय पर जरूरत के अनुसार पुस्तकालयों की आवश्यकता की पूर्ति आसानी से की जा सकती है। अध्ययन में उन्होंने पाया कि किसी भी पुस्तकालय के लिए उसका स्टाफ महत्वपूर्ण होता है। साथ ही यह भी माना कि पुस्तकालय स्वयं विकास नहीं करता, बल्कि स्टाफ की मेहनत से पुस्तकालय को विकसित किया जाता है। पुस्तकालय सेवा प्रदान करने में स्टाफ की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अध्ययन में शोधार्थी ने पाया कि जिले में पुस्तकालय बहुत अच्छी सेवा देने में सफल नहीं रहा, हालांकि छोटे स्तर पर सेवाएं दे रहा है। ग्रामीण छात्राओं के विकास में पुस्तकालय की क्या भूमिका है, इस संबंध में अध्ययन में कुछ नहीं बताया गया है।

2.10 आंध्र प्रदेश में ग्रामीण पुस्तकालय

2007 में एक अध्ययन "Design and development of multi type rural public library system in Andhra Pradesh India a case study"[56] विषय पर हुआ, जिसे शोधार्थी वाई0 वेंकटेशवरलु ने पी0 कामइया के पर्यवेक्षण में श्री कृष्णदेवाराय विश्वविद्यालय से पूरा किया। अध्ययन वर्ष

[55] http://hdl.handle.net/10603/165971
[56] http://hdl.handle.net/10603/85006

2007 में पूरा किया गया। अध्ययन में शोधार्थी ने पाया बहुत ही कम लोग हैं जो सरकारी योजनाओं की जानकारी रखते हैं। जानकारी रखने वाले लोगों का प्रतिशत कम है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में संचालित पुस्तकालयों की स्थिति जानने की कोशिश की। उन्होंने पुस्तकालय उपयोगकर्ताओं से भी आंकड़ों का संकलन किया और पता लगाया कि किस प्रकार की जानकारी वे पुस्तकालय से प्राप्त करते हैं। इसके अलावा कौन सी जानकारी वे अन्य माध्यमों से पाते हैं। अपने अध्ययन में शोधार्थी ने पाया कि पुस्तकालय के अलावा भी अन्य माध्यमों से जानकारियां प्राप्त की जाती हैं। पुस्तकालय की व्यवस्था अभी ग्रामीण क्षेत्र में विकसित नहीं है। अध्ययन में बताया कि 35 प्रतिशत ही लोग ऐसे हैं, जो संबंधित जानकारी के लिए राजकी पुस्तकालय का उपयोग करते हैं। इस प्रकार समझा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र में अभी भी पुस्तकालय के प्रति जागरूकता शहर जैसी नहीं है। ग्रामीण छात्राओं की क्या स्थिति है, इस संबंध में जानकारी नहीं है।

2.11 गुवाहाटीः शहरी समुदाय और पुस्तकालय

शोधकर्ता उत्पल शर्मा द्वारा 2011 में एक अध्ययन किया गया, जिसका विषय, ''Information needs and information seeking behaviour of urban community and its satisfaction by the public library system''[57] था, जो अलका बुरागोहाइन के पर्यवेक्षण में गुवाहाटी विश्वद्यिालय से 2011 में पूरा किया गया। अपने अध्ययन में जानने की कोशिश कि लोग सूचनाओं की कमी होने के कारण पुस्तकालय का उपयोग करते हैं या नहीं। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि शहरी लोगों के पास सूचनाओं के स्त्रोत अधिक होते हैं। ऐसे में वे पुस्तकालय सूचना प्राप्त करने के लिए व्यवहारिक तौर पर कम जाते हैं। जब शहरी लोगों के अन्य स्त्रोत फेल हो जाते हैं तभी वे पुस्तकालय सूचनाओं को प्राप्त करने पहुंचते हैं। इसके अलावा उन्हें अध्ययन में यह भी जानकारी मिली कि यदि लोग पुस्तकालय से वांछनीय सूचना प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं तो वे पुस्तकालय आना बंद कर देते हैं या कुछ समय के लिए नहीं आते। पुस्तकालय न आने से लोग कुछ न कुछ खोते हैं, जबकि पुस्तकालय आज के आधुनिक समय में और अधिक मजबूत हुआ है। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि पुस्तकालय स्टाफ में आपसी तालमैल की कमी होती है। जिसकी वजह

[57] http://hdl.handle.net/10603/50816

से क्षेत्रीय आवश्यकताओं जैसे भाषा अनुवाद आदि नहीं कर पाते और कई लोग इस वजह से पुस्तकालय का उपयोग नहीं कर पाते। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि गुवाहाटी क्षेत्र के पुस्तकालयों में अधिक योग्य स्टाफ की कमी है।

2.12 तमिलनाडु में पुस्तकालय

– 2010 में एक अध्ययन "Liaison in college libraries with special reference to aided colleges in Tamilnadu: a survey and recommendations"[58] विषय पर हुआ, जिसे **शोधार्थी जे0 मनालन** ने रानी बी0एस0 स्वरूप के पर्यवेक्षण में भारतदसन विश्वविद्यालय से पूरा किया। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि आमने सामने बात करने से प्रभाव जाता पड़ता है, ऐसे में पुस्तकालय की भूमिका अधिक है। अध्ययन में बताया गया है कि पुस्तकालय का अलग अलग वर्ग पर अलग अलग प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में पाया गया कि संपर्क सेवाएं अधिक प्रभावी है, प्रोफेशनल प्रक्रिया के औसत में। शोधार्थी ने अध्ययन में यह भी जाना कि शहरी क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र से आने वाले पुस्तकालय कार्यकर्ता ये महसूस करते हैं कि संपर्क सेवाएं अधिक महत्वपूर्ण हैं, जबकि अर्द्धशहरी क्षेत्र से आने वाले पुस्तकालय कार्यकर्ता ऐसा महसूस नहीं करते हैं। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि छात्रों के बीच संपर्क सेवाओं से सुअवसरों में बढ़त मिलती है और यह प्रभावी है।

2.13 अहमद नगर में पुस्तकालय की भागीदारी

– 2013 में एक अध्ययन "Performance evaluation and social cultural contribution of public libraries in south region Ahmednagar district (M.S.)"[59] विषय पर हुआ, जिसे **शोधार्थी राजकुमार घुले** ने विक्रम उत्तमराव के पर्यवेक्षण में श्रीजगदीशप्रसाद झबरमाल तिबरवाला विश्वविद्यालय से पूरा किया। अपने अध्ययन में उन्होंने जानने की कोशिश की कि महाराष्ट्र के जिले अहमद नगर के पुस्तकालयों में संस्कृति का क्या योगदान है और वे किस प्रकार का प्रदर्शन कर रहे हैं। अध्ययन में पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों के पुस्तकालयों की स्थिति अच्छी नहीं है। शहरों के मुकाबले ग्रामीण क्षेत्र के पुस्तकालय पिछड़े हैं। शहरी और ग्रामीण क्षेत्र

[58] http://hdl.handle.net/10603/5104
[59] http://hdl.handle.net/10603/13924

में बने पुस्तकालयों की बनावट और वहां उपलब्ध साधनों में भी अंतर है। शहरी पुस्तकालयों सुविधाएं अधिक हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्र में ऐसा कम है।

2.14 असम में पुस्तकालय द्वारा ग्रामीण विकास

– 2015 में एक अध्ययन "Prospects of coordinating sarba siksha abhijan and rural libraries for social development in Assam with special reference to kamrup district"[60] विषय पर हुआ, जिसे **शोधार्थी प्रशांत कुमार** ने नरेन्द्रनाथ शर्मा के पर्यवेक्षण में गोवाहाटी विश्वविद्यालय से पूरा किया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण क्षेत्रों का विकास तो हो रहा है लेकिन सूचना के विषय में विकास धीमा है। कमरूप जिले में पुस्तकालय की स्थिति संतुष्टिपूर्ण नहीं है। अधिकतर पुस्तकालय आर्थिक सहायता के लिए जूझ रहे हैं। हालांकि पुस्तकालय कर्मचारी विकास में पुस्तकालय की भूमिका को लेकर आशावादी हैं। शोधार्थी ने अध्ययन में बताया है कि ग्रामीण पुस्तकालय लोगों की शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण एजेंसी है। बिना ग्रामीण पुस्तकालयों के ग्रामीण शैक्षिक विकास के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। अध्ययन में पाया कि जिले में बहुत बड़ी संख्या आज भी विधिवत शिक्षा प्राप्त नहीं कर पा रही है। बच्चों के द्वारा स्कूल छोड़ने की प्रवृति लगातार से बनी हुई है। इसके साथ ही एक महत्वपूर्ण जानकारी अध्ययन में यह भी मिलती है कि अनौपचारिक शैक्षिक संस्थान तो खुल गए लेकिन उनके साथ पुस्तकालय नहीं खुले, जिससे लंबे समय बाद जो लाभ मिलना चाहिए वह नहीं मिल सका।

2.15 ग्रामीण विकास के लिए सूचना व्यवस्था

– शोधकर्ता के0ए0 राजू द्वारा 1999 में एक अध्ययन किया गया, जिसका विषय, ''Rural development information network RDIN a model integrated information system for the development community''[61] था, जो सी0आर0 करिसीडप्पा के पर्यवेक्षण में कर्नाटक विश्वद्यिालय से पूरा किया गया। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि ग्रामीण विकास के लिए क्षेत्र में सूचना सेवाओं के लिए एक आपसी भावना की आवश्यकता है। 90 संस्थानों

[60] http://hdl.handle.net/10603/127594

[61] http://hdl.handle.net/10603/96448

से प्रश्नावली भरवाकर अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अध्ययन में पाया कि 55 संस्थान ऐसे हैं जिनके पास बीस हजार से कम पुस्तकें उपलब्ध हैं। 21 संस्थानों का बजट एक लाख से कम है। अध्ययन में जिला ग्रामीण विकास एजेंसी का महत्व माना गया। ग्रामीण क्षेत्र के पुस्तकालयों के लिए उन्होंने सुझाव भी दिया कि उन्हें तकनीकी से पूर्ण किया जाना चाहिए ताकि विकास में उनका योगदान और अधिक हो।

2.16 ग्रामीण विकास में महिलाएं

शोधार्थी मोली जोसेफ द्वारा 1994 में एक अध्ययन किया गया, जिसका विषय, ''The level of women participation In rural development; a comparative study of governmental and non governmental organisations in kerala''[62] था, जो टी0 मेरी जोसेफ के पर्यवेक्षण में विज्ञान एंव तकनीकी कोचिन विश्वविद्यालय से पूरा किया गया। अपने अध्ययन में शोधार्थी ने पाया कि आधे से अधिक महिलाओं की विकास में भागीदार दर से खुश नहीं हैं। केरल का विकास अन्य राज्यों से अधिक है, लेकिन फिर भी विकास में महिलाओं की अपेक्षित भागीदारी नहीं है। सरकारी संस्थानों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की जा रही है। अपने अध्ययन में पाया कि अधिकतर महिलाएं घरेलू रोजगार से जुड़ी हैं। कई महिलाओं को योजनाओं का लाभ नहीं मिल रहा है, जैसा कि वे चाहती हैं। सुअवसरों को लेकर लाभार्थी संतुष्ट नहीं हैं। अधिकतर का मानना है कि उनकी भागीदारी विकास में बढ़ोतरी ला सकती है।

2.17 कर्नाटक विकास मॉडल में महिलाएं

कर्नाटक राजय में आजादी के बाद कोई खासा बदलाव देखने को नहीं मिला। विकास की बयार 1980 के दशक में देखने को मिली। बड़े स्तर पर विकास का सपना संजोय इस सरकार ने सर्वप्रथम 1980 में कर्नाटक द्वारा संविधान संशोधन किया गया। और कर्नाटक पहला राज्य बना जहां, पंचायती राज व्यवस्था को तीन स्तरों पर लागू किया – पहला गांव, दूसरा तालुक्क स्तर और तीसरा जिला स्तर। उनका मानना था कि स्थानीय सरकार को बराबरी का मौका देने से सकारात्मक प्रतिफल मिलेगा और स्थानीय लोग अपनी

[62] http://hdl.handle.net/10603/20961

समस्याएं बिना किसी परेशानी के अपने पास की सरकार को बता सकेगी। मूल्यांकन के दौरान यह बात निकल कर आई कि जो प्रयास सरकार ने किए थे, उसके परिणाम अपेक्षित आए और स्थानीय लोगों को लाभ पहुंचा। विकास में लगे हुए लोगों की संख्या बढ़ी और विकास गांव–गांव तक पहुंचने लगा। इसमें महिलाओं की भूमिका को भी स्वीकार किया गया। इसमें यह माना गया कि विकास के लिए महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। एक पुस्तक[63] में बताया गया कि ग्राम सभा की सूचानाओं की उपलब्धता व व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसमें पाया गया कि ग्राम पंचायत, प्रथागत ग्राम समिति (CVCs) लगातार ग्रामीण विकास के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। सामाजिक, आर्थिक, जाति, न्याय स्तर पर हो रहे ग्रामीण विकास में सूचना तंत्र की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। 1980 के दौरान कर्नाटक में पंचायती राज में विकास[64] की एक कड़ी और जुड़ी जब महिला पंचायत अध्यक्षों के लिए वर्कशॉप आयोजित किए जाने लगे, ताकि सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के लिए उन्हें जागरूक किया जा सके एवं किस प्रकार से अपने पद का स्वतंत्रतापूर्वक उपयोग कर सकें। महिलाओं का पक्ष रखते हुए लेखिका देवकी जैन[65] ने इस बात को रखा कि ज्यादातर नीतियां पुरूषों को ध्यान में रखकर बनाई जाती हैं, महिलाओं को कम।

2.18 आंध्र प्रदेश विकास मॉडल

आंध्र प्रदेश का विकास मॉडल एक रोचक कहानी की तरह है, जिसमें मीडिया की भूमिका पर्दे के पीछे से रही। आंध्र प्रदेश पिछले दो दशकों से 5.5 प्रतिशत की वार्षिक आर्थिक वृद्धि कर रहा है। यह ऐसा राज्य है जो सूचना तकनीकी (IT) का सबसे अधिक उपयोग करता है। प्रशासन के सुधार में सूचना तकनीकी की काफी मदद ली जाती है। जैसा कि हम सब जानते हैं कि आंध्र प्रदेश एक पिछड़ा राज्य है। आजादी के काफी बाद यह विकासशील हो पाया। 90 के दशक में यहां विकास की एक लहर चल पड़ी जिसने आंध्र

[63] Page No. - 143, Communication for Development Reinventing Theory and Action, Vol-1, Kiran Prasad, B.R. Publishing Corporation, New Delhi-110052. 2009.
[64] Page No. - 145, Communication for Development Reinventing Theory and Action, Vol-1, Kiran Prasad, B.R. Publishing Corporation, New Delhi-110052. 2009.
[65] Page No. – 691-696, To Be or Not To Be: Problems in Location Women in Public Policy, Economic and Political Weekly, 42(8), 2007.

प्रदेश के विकास मॉडल का रूप ले लिया। आंध्र प्रदेश ने एक और नई नीति/योजना[66] को चालू किया। इसमें महिलाओं को सक्षम बनाने के लिए प्रयास की रूप रेखा थी। यह योजना खासकर अनपढ़ और मजदूर महिलाओं के लिए चालू की गई। आंध्र प्रदेश में प्रत्येग गांव में 15–15 महिलाओं का ग्रुप बनाया जो 15000 का बिना सुरक्षा (Without security) के ऋण (Loan) देते थे। ऋण सरकार देती थी और ये महिलाएं निगरानी करती थीं। इस प्रयास ने महिलाओं को अपना स्वयं का रोजगार खोलने की कोशिश को अंजाम दे दिया। छोटे–छोटे सपनों को पूरा करने में यह लोन काफी कारगर साबित हुआ। जो महिलाएं स्वरोजगार चाहती थीं परंतु धनाभाव में ऐसा नहीं कर पा रही थीं, उनको खासा लाभ हुआ। वे महिलाएं आत्मनिर्भर भी हुईं। 1993 में ''महिला बचत'' (Women's Saving) आंदोलन चालू किया गया। इसमें लाखों महिलाओं ने भाग लिया और 1 रुपये प्रतिदिन से बचाया। योजना चलती रही। महिलाएं रुपयों की बचत करती रहीं। धीरे–धीरे बचत से करोड़ों इक्टठ्ठा हो गया। अध्ययन से पता चलता है कि 61.70 लाख महिलाओं ने 887.47 करोड़ रुपया बचाया (Save)। जो महिलाएं बचत करती थीं, उन्हें उनकी राशि पर ब्याज भी दिया जाता था।

2.19 केरल विकास मॉडल

मानव विकास के मामले में केरल पूरे भारत में सबसे आगे है। हालांकि आजादी के बाद से ही केरल अन्य राज्यों की तुलना में बेहतर था पंरतु यहां भी महिलाओं की स्थिति बद्तर थी। अशिक्षा का दौर था और दलितों–पिछड़ों की हालत अच्छी नहीं थी। केरल के बारे में अध्ययन करें तो हमें पता चलेगा कि केरल में 1957 में पहली बार क्रांतिकारी बदलाव[67] आया। 1957 में कम्यूनिस्ट सरकार को लोकतंत्र में चुना गया।

सरकार क्रांतिकारी भू–सुधार अध्यादेश लायी। इसमें जो भूमि कमजोर और कम उपजाऊ थी उसे उपजाऊ बनाया जाने लगा। जानकारी से पता चलता है कि उस समय के राजा शिक्षा पर विशेष जोर दिया करते थे। 1859 में ही महाराजा द्वारा कन्याओं के लिए स्कूल खुलवा दिया था। इसी दौरान क्रिश्चियन मिशनरी अंग्रेजी स्कूल भी खोले गए,

[66] Page No. - 150, Communication for Development Reinventing Theory and Action, Vol-1, Kiran Prasad, B.R. Publishing Corporation, New Delhi-110052. 2009.
[67] Page No. - 140, Communication for Development Reinventing Theory and Action, Vol-1, Kiran Prasad, B.R. Publishing Corporation, New Delhi-110052. 2009.

हालांकि इनका प्रमुख उद्देश्य धार्मिक प्रचार करना था। विकास में शैक्षिक संसाधनों जैसे पुस्तकालय का भी योगदान है। सन् 1989 में कोट्टम को पूर्णतः शिक्षित नगर (Municiple) घोषित किया। 4 फरवरी 1990 को एर्नाकूलम को देश का पहला शिक्षित जिला घोषित किया गया।[68]

इसी के साथ भारत में साक्षरता दर के मामले में भी केरल अन्य राज्यों की तुलना में सबसे आगे है। इतना ही नहीं मानव विकास में भी केरल पूरे देश में प्रथम स्थान पर है। कुछ विकास के मामलों में केरल का आकड़ा अमेरिका (U.S.A.) से भी अच्छा और कई में लगभग बराबरी पर है। यहां महिलाएं पढ़ी–लिखी और जागरूक हैं। ऐसे में वे अपने परिवार को भी शिक्षित और जागरूक बनाती हैं। कुछ किलोमीटर के दायरे में वहां डिस्पेंसरी हैं। ऐसे में छोटी–मोटी बिमारी का गंभीर बनने से पहले ही तुरंत उपचार कर लिया जाता है।

यही कारण है कि पूरे विश्व में डब्ल्यू0एच0ओ0 (WHO) और यूनिसेफ (UNICEF) द्वारा सिर्फ केरल को ''शिशु अनुकूल'' (Baby Friendly) घोषित किया है। इतना सब कुछ होने पर भी केरल का विकास मॉडल आलोचना से घिरा रहता है। क्योंकि यहां अन्य राज्यों की तुलना में वस्तुओं का उत्पादन कम है। इसके अलावा वहां मजदूरी का स्तर भी कम है।

यही कारण है कि केरल के एक तिहाई (⅓) लोग मजबूर होकर विदेशों में काम करने चले गए। आज भी इनके लिए रोजगार, मजदूरी में बढ़ोत्तरी की संभावनाएं नहीं हैं। इस बात भी अध्ययन किया जा सकता था कि जहां साक्षरता ज्यादा है तो वहां निश्चित तौर पर कम अनुभवी भी हों तो भी अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं। विकास के संबंध में लेखक जी0एन0एस0 राघवन ने लिखा है, ''विकास संचार की धारणा को तीन अलग–अलग स्त्रोत मिलकर संकीर्ण बना देते हैं। इसमें पहला है, पूंजीवाद और आर्थिक बाजार, जो विज्ञापन के रूप में लाभ कमाने पर आधारित है...।''[69]

---

[68] Report- Behavioural Sciences: A Status Study on Population Research in India, Vol-1, Pareek, Udai and Rao, New Delhi, Tata McGrow Hill.

[69] Page No. - 30, Development and Communication in India: Elitist Growth and Mass Deprivation, G.N.S. Raghavan, Gian Publishing House, New Delhi-02. 2005

2.20 ग्रामीण विकास के लिए शिक्षा

2.20.1 शिक्षा का महत्व

लेखक तुषास के0 सिन्हा ने अपनी पुस्तक "Education for Rural Development"[70] में बताया कि ग्रामण विकास में शिक्षा कितना महत्व रखती है। 2009 में Authorspress, Jawahar Park, Laxmi Nagar, New Delhi द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में विकास में शिक्षा के योगदान को बताया गया है। लेखक ने बताया कि स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा में बच्चों के शिक्षा छोड़ने की प्रवृति है। विभिन्न कारणों से बच्चे शिक्षा को छोड़ देते हैं। अपने अध्ययन में उन्होंने पाया कि कई बच्चे प्राथमिक स्तर पर ही स्कूल छोड़ देते हैं और कुछ माध्यमिक स्तर पर। ऐसे में यह एक समस्या है। यदि यही लगातार होता रहा तो हम ग्रामीण विकास की संकल्पना को सफल नहीं बना सकते। अध्ययन में उन्होंने बताया कि अधिकतर स्कूल की पढ़ाई छोड़े जाने में लड़कियों की संख्या अधिक है, जबकि लड़कों की संख्या कम है। देखने में आया है कि घर के कामों के कारण लड़कियों को स्कूल ही नहीं भेजा जाता। ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता और भेदभाव, अंधविश्वास जैसी समस्याओं के कारण लड़का लड़की में भेदभाव किया जाता है। परिवारों में शिक्षा का अभाव होने के कारण भी ग्रामीण परिवार अपने बच्चों को नहीं पढ़ाते। अध्ययन में बताया गया है कि ग्रामीण विकास करने के लिए शिक्षा मुख्य आधार है। ग्रामीण विकास करना है तो ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा की समुचित व्यवस्था भी करनी होगी और शिक्षा के लिए समुचित प्रसार भी। इसक साथ लोगों को शिक्षा के प्रति जागरूक भी करना होगा।

2.20.2 समुचित ग्रामीण विकास

– **लेखक डी0 पी0 नायर** ने अपनी पुस्तक "Education for Rural Development"[71] में बताया कि ग्रामण विकास में शिक्षा कितना महत्व रखती है। 2009 में शिप्रा प्रकाशन, पटपड़गंज, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक में बताया गया विकास के लिए शिक्षा सबसे

[70] Sinha, Tushar K., Education for Rural Development, Authorspress, Jawahar Park, Laxmi Nagar, New Delhi. 2009

[71] Nayar, D.P., Education for Rural Development, Shipra Publication, Patparganj, New Delhi. 2014

महत्वपूर्ण है। लेखक ने अपनी पुस्तक में प्राथमिक शिक्षा के साथ उच्च शिक्षा पर भी अपने आंकड़े प्रस्तुत किए। अध्ययन में औपचारिक एवं अनौपचारिक शिक्षा में भेद करते हुए बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा के प्रति जागरूकता नहीं होने के कारण समुचित ग्रामीण विकास नहीं हो पा रहा है। सरकारों के विभिन्न प्रयासों के बाद भी शिक्षा का महत्व गांवों तक नहीं पहुंच पा रहा है।

2.21उ0प्र0 के समाज कल्याण विभाग की छात्रवृत्ति योजनाएं

उत्तर प्रदेश सरकार के समाज कल्याण विभाग[72] द्वारा निर्धन एवं निर्बल छात्रों के लिए आर्थिक सहायता के लिए योजनाएं संचालित की जाती है। इससे ऐसे छात्र (छात्र–छात्राएं दोनों) जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं और अपने पाठ्यक्रम की फीस नही भर सकते हैं, उनके लिए सरकार आर्थिक सहायता कर फीस की पूर्ति करती है। यहां शोध छात्रा ने यह जानने की कोशिश की कि कौन–कौन सी योजनाएं ऐसी हैं, जो छात्राओं से जुड़ी हैं एवं जिन योजनाओं का छात्राओं को लाभ मिल रहा है। उत्तर प्रदेश की कई योजनाएं छात्राओं से जुड़ी हैं, यदि ये योजनाएं बंद कर दी जाएं तो हजारों छात्राओं की पढ़ाई रूक जाएगी। यदि ग्रामीण छात्राएं पढ़ पा रही हैं या फिर परिवार द्वारा पढ़ाई जा रही हैं, उनका एक कारण यह है कि परिवार को छात्राओं की फीस भरने की जरूरत नही है। ऐसे में परिवारों को बेटी की पढ़ाई बोझ नहीं लगती और छात्राओं को पढ़ने की स्वतंत्रता मिल जाती है। शोध छात्रा ने उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित कुछ योजनाओं की जानकारी प्राप्त की जो इस प्रकार हैं–

2.21.1 छात्रवृत्ति योजना

उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित छात्रवृत्ति योजना[73] ऐसे निर्बल छात्रों के शैक्षिक विकास के लिए दी जाती है जो स्कूलों में पढ़ते हैं। 1 से 10 तक के छात्रों को पूर्वदशम योजना के अंतर्गत छात्रवृत्ति दी जाती है। जबकि 10वीं से ऊपर कक्षाओं एवं पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत छात्रों के लिए दशमोत्तर छात्रवृत्ति योजना के अंतर्गत छात्रवृत्ति दी जाती है। इसमें छात्रों की फीस पूरी तरह से भरी जाती है। अनुसूचति जाति के छात्रों की फीस

[72] http://swd.up.nic.in
[73] http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%201.pdf

विद्यालयों/संस्थाओं को सीधे विभाग द्वारा शुल्क की प्रति पूर्ति किए जाने की योजना संचालित की जा रही है जो समय समय पर संशोधित होती रहती है।

2.21.2 उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित अस्वच्छ पेशा छात्रवृत्ति योजना

संचालित अस्वच्छ पेशा छात्रवृत्ति योजना[74] उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित है। इस योजना के अंतर्गत अस्वच्छ पेशे में लगे अभिभावकों के बच्चों को कक्षा 1 से 10 तक की कक्षाओं में अनिवार्य रूप से छात्रवृत्ति प्रदान किए जाने का प्रावधान है। इस हेतु आय–सीमा का कोई प्रतिबंध नहीं है।

2.21.3 डा0 अम्बेडकर जन्म शताब्दी फाउन्डेशन निधि से विशेष छात्रवृत्ति

उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित डा0 अम्बेडकर जन्म शताब्दी फाउन्डेशन निधि से विशेष छात्रवृत्ति[75] योजना उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित है। इस योजना के अंतर्गत हाई स्कूल व इण्टर की माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश की परीक्षा में सवोच्च अंक प्राप्त करने वाले अनुसूचित जाति/जनजाति के 100–100 छात्रों को छात्रवृत्ति दिये जाने की व्यवस्था है। हाईस्कूल परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने वाले अगले पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु रूपये 250/– मासिक दर से 10 माह हेतु कुल 2500 रूपये मिलते है। इसी प्रकार इण्टर परीक्षा में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने पर अगले पाठ्यक्रम में अध्ययन हेतु 350 रूपये मासिक दर से 10 माह कुल 3500 रूपये वार्षिक छात्रवृत्ति के रूप में प्रदार की जाती है।

2.21.4 मेरिट उच्चीकृत योजना

मेरिट उच्चीकृत योजना[76] शत प्रतिशत केन्द्र वित पोषित है जिसके अन्तर्गत अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों को कक्षा 9 से 12 तक विशेष कोचिंग प्रदान की जाती है। यह योजना प्रदेश के 6 राजकीय इण्टर कॉलेज (इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर, झांसी, मुरादाबाद, एवं आगरा) में संचालित है। मिली जानकारी में पता चला कि योजना के

[74] http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%201.pdf
[75] http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%201.pdf
[76] http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%2011.pdf

अंतर्गत कक्षा 9 व 10 में रेमेडियल कोचिंग तथा कक्षा 11 व 12 में व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में विशेष कोचिंग की व्यवस्था है।

2.21.5 औद्योगिक आस्थानों का संचालन

प्रदेश के अनुसूचित जातियों के कल्याण हेतु समाज कल्याण विभाग द्वारा राजकीय औद्योगिक आस्थानों का संचालन[77] हो रहा है। प्रदेश में अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को शहरी क्षेत्रों में उद्योग स्थापित करने हेतु विभाग द्वारा 9 जनपदों जोकि 1–रामपुर, 2–गाजीपुर, 3–फतहपुर, 4–हरदोई, 5–रानोपाली (फैजाबाद), 6– कालपी (जालौन), 7–मुजफ्फरनगर, 8–रामनगर (वाराणसी) एवं 9– बदायूं में औद्योगिक आस्थान संचालित हैं। जानकारी मिली कि आस्थानों में नवनिर्मित शेड सामान्य सुविधा केन्द्र तथा खुली भूमि पर एक हजार वर्ग गज के प्लाट उपलब्ध हैं, जो अनुसूचित जाति के उद्यमियों को अपने उद्योग संचालित करने के लिए कम किराये पर उलब्ध कराये जाते हैं। प्रतिशेड 25 रूपये प्रति माह किराये पर तथा भूखण्ड लीज डीड एवं शर्तों के अधीन दिए जाने का प्रावधान है।

2.21.6 राज्य स्तरीय सेवाओं हेतु परीक्षा पूर्व कोचिंग योजना

राज्य उच्च स्तरीय सेवाओं हेतु परीक्षा पूर्व कोचिंग केन्द्र योजना[78] उत्तर प्रदेश द्वारा संचालित है। अनुसूचितजाति/जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों को विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए छत्रपति शाहूजी महाराज शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, भागीदारी भवन, लखनऊ द्वारा कोचिंग की सुविधा प्रदान की जा रही है। इसी प्रकार अनुसूचति जाति, जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग की महिलाओं के लिए आदर्श पूर्व परीक्षा केन्द्र, अलीगंज लखनऊ एवं अनुसूचित जाति, जनजाति के छात्रों के लिए पी0सी0एस0 (जे0) कोचिंग केन्द्र, इलाहाबाद के माध्यम से कोचिंग सुविधा से लाभान्वित किया जा रहा है। इसी प्रकार गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले सामान्य वर्ग के अभिभावकों के आश्रित छात्रों को उत्कृष्ट श्रेणी की कोचिंग संस्थाओं के माध्यम से कोचिंग दिए जाने हेतु नई योजना संचालित की जा रही है।

---

[77] http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%2013.pdf
[78] http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%208.pdf

2.21.7 अनुसूचित जाति छात्रावास निर्माण योजना

अनुसूचित जाति छात्रावास निर्माण योजना[79] उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित की जाती है। प्रदेश में अनुसूचित जाति के छात्र–छात्राओं के आवासीय समस्या के दृष्टिगत कुल 252 छात्रावास स्वीकृत है, जिसमें 220 छात्रावास निर्मित हो चुके हैं, शेष के निर्माण संबंधी कार्यवाही प्रगति पर है। निर्मित छात्रावासों के सापेक्ष 168 छात्रावास संचालित है, जिनमें छात्रों के लिए 141 छात्रावास एवं छात्राओं के 27 छात्रावास है।, शेष छात्रावासों के संचालन के लिए वित्तीय एवं अन्य व्यवस्थाएं की जा रही हैं, जिसमें पहली योजना बालकों हेतु एक केन्द्र पुरोनिधानित योजना (50–50 प्रतिशत) है। वित्तीय वर्ष 2009–10 में इस हेतु 3.6216 करोड़ का बजट प्राविधान कराया गया। दूसरी योजना बालिकाओं के लिए 100 प्रतिशत भारत सरकार द्वारा संचालित की जा रही है जिसके लिए वित्तीय वर्ष 2009–10 में 3 करोड़ का बजट का प्रावधान था।

उपरोक्त अध्ययनों में पुस्तकालय से जुड़ी विभिन्न जानकारियां मिल रही है, लेकिन पुस्तकालय का ग्रामीण क्षेत्रों में रह रही छात्राओं पर क्या प्रभाव पड़ रहा है इसकी जानकारी नहीं है। इस प्रकार शोध छात्रा अपनी समस्या का निदान करने के लिए अध्ययन करने को प्रेरित है।

[79] http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%207.pdf

संदर्भ सूची –

1. Prasad, Kiran. (2009). Communication for Development Reinventing Theory and Action, vol-2, New Delhi: B.R. Publishing Corporation. pp- 143.
2. Prasad, Kiran. (2009). Communication for Development Reinventing Theory and Action, vol-2, New Delhi: B.R. Publishing Corporation. pp- 145.
3. To Be or Not To Be: Problems in Location Women in Public Policy, Economic and Political Weekly. 42(8). 2007. pp- 691-696.
4. Prasad, Kiran. (2009). Communication for Development Reinventing Theory and Action, vol-2, New Delhi: B.R. Publishing Corporation. pp- 150.
5. Prasad, Kiran. (2009). Communication for Development Reinventing Theory and Action, vol-2, New Delhi: B.R. Publishing Corporation. pp- 140.
6. Pareek., Udai and Rao. Behavioural Sciences: A Status Study on Population Research in India, Vol-1. New Delhi: Tata McGrow Hill.
7. Raghavan, G.N.S. (2005). Development and Communication in India: Elitist Growth and Mass Deprivation. New Delhi: Gian Publishing House. pp- 30.
8. Sinha, Tushar K. (2009). Education for Rural Development. New Delhi: Authorspress. Laxmi Nagar.
9. Nayar, D.P. (2014). Education for Rural Development. New Delhi: Shipra Publication.
10. http://hdl.handle.net/10603/9463
11. http://hdl.handle.net/10603/50433
12. http://hdl.handle.net/10603/85645
13. http://hdl.handle.net/10603/79884
14. http://hdl.handle.net/10603/24241
15. http://hdl.handle.net/10603/69885
16. http://hdl.handle.net/10603/12665
17. http://hdl.handle.net/10603/165971
18. http://hdl.handle.net/10603/85006
19. http://hdl.handle.net/10603/50816
20. http://hdl.handle.net/10603/5104
21. http://hdl.handle.net/10603/13924
22. http://hdl.handle.net/10603/127594
23. http://hdl.handle.net/10603/96448
24. http://hdl.handle.net/10603/20961
25. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/
26. http://swd.up.nic.in
27. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%201.pdf
28. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%2011.pdf
29. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%2013.pdf
30. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%208.pdf
31. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%207.pdf

तृतीय अध्याय

महाविद्यालयों एवं उनके पुस्तकालयों का अवलोकन

(Overview of Colleges and its Libraries)

3.1 पुस्तकालय की पृष्ठभूमि

इटावा[80] में छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध 65 महाविद्यालय संचालित हैं। इसमें शोधकर्ता द्वारा पांच महाविद्यालयों का चयन सम्भाव्यता निदर्शन के अंतर्गत लॉटरी विधि द्वारा किया था। इन महाविद्यालयों का अपना एक इतिहास है। जानकारी के अनुसार ऐसे महाविद्यालय का भी चयन हुआ है जो लगभग 60 साल पुराना है। वहीं दूसरी ओर एक महाविद्यालय ऐसा भी है जो अभी कुछ साल पहले ही अस्तित्व में आया है। इन चयनित महाविद्यालयों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है –

3.2 शैक्षणिक पुस्तकालय

शोध छात्रा का अध्ययन महाविद्यालयों में पढ़ रही छात्राओं से संबंधित है, जोकि पुस्तकालयों का उपयोग करती हैं। महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं द्वारा शैक्षणिक पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है। प्रस्तुत अध्ययन में भी ऐसे ही पुस्तकालयों से संबंधित जानकारियों को एकत्रित किया गया। शैक्षणिक पुस्तकालय वे होते हैं, जोकि शिक्षा से अथवा पाठ्यक्रम से संबंधित होते हैं। इन पुस्तकालयों में केवल पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तकें एवं जर्नल, पत्र–पत्रिकाएं आदि पठन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है।

3.3 जनता महाविद्यालय, इटावा

जनता महाविद्यालय[81], इटावा जिले का बहुत पुराना महाविद्यालय है। इस महाविद्यालय की स्थापना 1959 में इटावा जनपद के बकेबर मे की गई। इस महाविद्यालय को समाजसेवी स्व0 श्री देवेन्द्रमणी द्विवेदी द्वारा स्थापित किया गया था। जनता महाविद्यालय छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध है। यह महाविद्यालय बकेबर का सबसे बडा

[80] https://en.wikipedia.org/wiki/Etawah
[81] https://en.wikipedia.org/wiki/Janta_College_Bakewar,_Etawah

महाविद्यालय है यहां पर शहरी क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र के छात्र छात्राये शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। यहां लगभग 2200 छात्राएं अध्ययनरत हैं। महाविद्यालय में बी0एससी0, बी0कॉम0, एम0एससी0 और एम0कॉम0 पाठ्यक्रम संचालित हैं। जनता महाविद्यालय को नैक (NAAC) की तरफ से फरवरी 2016 में ''बी'' प्रमाणित किया गया है। महाविद्यालय 44.77 एकड़ में फैला हुआ है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, दिल्ली का एक केन्द्र भी जनता महाविद्यालय है।

जनता महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

3.3.1 पुस्तकालय का परिचय–

जनता कॉलेज का पुस्तकालय महाविद्यालय की तरह ही पुराने समय से बना हुआ है। 1959 में पुस्तकालय का निर्माण हुआ था। पुस्तकालय में 7 सदस्यों का स्टाफ है। पुस्तकालय में पुस्तकालय प्रभारी के साथ दो क्लर्क, एक कैटालोगर, तकनीकी सहायक, दो बुक लिफ्टर हैं। पुस्तकालय में छियालीस हजार पुस्तकें हैं। 100 से लेकर 125 उपयोगकर्ता दैनिक आ जाते हैं। यहां पर सर्कुलेशन सेक्शन, रेफरेंस सेक्शन, रिफ्रोग्राफी सेक्शन और जर्नल सेक्शन है।

3.4 कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा

कर्मक्षेत्र महाविद्यालय[82] इटावा जनपद का बहुत पुराना और बहुत जाना माना महाविद्यालय है। इसका निर्माण 1959 में हुआ था। इस महाविद्यालय को स्व0 लाला हजारी लाल वर्मा द्वारा संस्थापित किया गया था। यह महाविद्यालय छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध है। यह इटावा जनपद का शहरी महाविद्यालय है इस महाविद्यालय मे विज्ञान,कला,वाणिज्य संकायों में स्नातक एवं स्नाकोत्तर पाठ्यक्रमो की पठाई होती है। इस महाविद्यालय मे लगभग 7000 से अधिक छात्र–छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे है।

कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

3.4.1 पुस्तकालय का परिचय–

कर्मक्षेत्र महाविद्यालय के पुस्तकालय की स्थापना 1959 मे हुई थी इस पुस्तकालय मे सभी छात्र–छात्राओं को उनके पाठ्यक्रम से संबन्धित पुस्तके उपलब्ध कराई जाती है। यहां पच्चीस हजार से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। यहां 6 सेक्शन हैं, रेफरेंस सेक्शन, आदान–प्रदान सेक्शन और टेक्निकल सेक्शन हैं। यहां 7 कर्मचारियों का स्टाफ है, जिसमें एक बुक बैंक लिपिक, एक सामान्य पुस्तकालय लिपिक, सन्दर्भ विज्ञान विभाग लिपिक, एक पुस्तकालय विज्ञान लिपिक, एक वाचनालय लिपिक, एक पुस्तकालय लिपिक हैं।

[82] https://en.wikipedia.org/wiki/Karm_Kshetra_Post_Graduate_College

3.5 पंचायत राज राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा

पंचायतराज राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय[83] की स्थापना वर्ष 1991 में की गई थी। यह जनपद में एकमात्र राजकीय महाविद्यालय है जो सिर्फ छात्राओं के लिए है। महाविद्यालय में बी0ए0, बी0कॉम0 और एम0ए0 का कोर्स कराया जाता है। इटावा जिले में इसे पी0आर0 महिला कॉलेज, इटावा के नाम से भी जाना जाता है। यह महाविद्यालय छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर से सम्बद्ध है। यह सरकार के अधीन स्नातकोत्तर महाविद्यालय है। यहां लगभग 1500 छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। इटावा में यह शहरी क्षेत्र का महाविद्यालय कहलाता है। इस महाविद्यालय का पता, राजागंज, चौगुरजी नगर, इटावा है।

पंचायत राज राजकीय महिला महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

3.5.1 पुस्तकालय का परिचय–

पंचायत राज महिला महाविद्यालय[84] का पुस्तकालय 1991 में स्थापित हुआ। यहां जो पाठ्यक्रत संचालित हैं, उनसे संबंधित पुस्तकें उपलब्ध हैं। हालांकि यहां अधिक पुस्तकें उपलब्ध नहीं हैं। इसलिए कभी कभी छात्राओं को पुस्तकें प्राप्त नहीं हो पाती। पुस्तकालय

[83] https://en.wikipedia.org/wiki/Panchayat_Raj_Government_Mahila_College,_Etawah
[84] http://www.icbse.com/colleges/p-r-govt-mahila-college/6536/2

में इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध नहीं है। यहां सिर्फ पुस्तकों का प्रभाग है। इस पुस्तकालय में दो स्टाफ हैं। इसमें एक पुस्तकालय प्रभारी हैं और एक पुस्तकालय सहायक हैं।

3.6 ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय, इटावा

ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय[8586] की स्थापना 2012 मे की गई थी। यह महाविद्यालय पचावली रोड पर इटावा, उत्तर प्रदेश मे स्थित है। इस महाविद्यालय मे पाठ्यक्रम की शुरूआत स्नातक एवं स्नातकोत्तर से की गई थी इस महाविद्यालय मे लगभग 2000 से अधिक छात्र–छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे है

ठा0 राजेश सिंह महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

3.6.1 पुस्तकालय का परिचय–

ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय मे पुस्तकालय की स्थापना 2012 से हुई है इस पुस्तकालय मे सभी पाठ्यक्रम से संम्बन्धित पुस्तके उपलब्ध नही है जिसके कारण सभी छात्र–छात्राओं को उनके विषय से सम्बन्धित पुस्तके नही मिल पाती। इस पुस्तकालय को स्थापित हुये कुछ ही साल हुये है इसलिये इस पुस्तकालय में अभी पुस्तकों की संख्या और उसका संचालन ठीक नहीं है और स्टाफ भी दो हैं।

[85] http://www.trsgroup.co.in/index.php
[86] https://www.prokerala.com/education/th-rajesh-singh-mahavidhayalya-etawah-49743.html

3.7चौधरी चरण सिंह स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हेंवरा इटावा

चौंधरी चरण सिंह महाविद्यालय[87] इटावा जनपद के सैफई विकास खंड के हेंवरा गांव में स्थित हैं। इस महाविद्यालय को 1983 मे मुलायम सिंह यादव द्वारा स्थापित किया गया था इस महाविद्यालय कि शुरूआत एक मामूली इमारत मे स्नातक पाठ्यक्रम से की गई थी यह महाविद्यालय छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय,कानपुर से सम्बद्ध है। और 1996 मे बी.एड. पाठयक्रम की शुरूआत की गई थी फिर घीरे घीरे इस महाविद्यालय का विकास हुआ और अधिक से अधिक पाठ्यक्रम की शुरूआत हुई इस महाविद्यालय मे 2004 से स्नाकोत्तर पाठ्यक्रम की शुरूआत हुइ थी इस महाविद्यालय मे लगभग 8000 से अधिक छात्र छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

3.7.1 पुस्तकालय का परिचय–

चौंधरी चरण सिंह महाविद्यालय का पुस्तकालय 1983 मे स्थापित किया गया था । इस महाविद्यालय के पुस्तकालय का नाम केंद्रीय पुस्तकालय है इस पुस्तकालय में सभी पाठ्यक्रम से सम्बन्धित पुस्तकें एवं पत्र–पत्रिकाएं, अखबार आदि संचालित की गई है और

[87] https://en.wikipedia.org/wiki/Chaudhary_Charan_Singh_Post_Graduate_College

सभी पाठकों को उनके विषय से सम्बन्धित पुस्तकें उपलब्ध भी कराई जाती है इस पुस्तकालय मे 5 कर्मचारी है यहां पर एक पुस्तकालय प्रभारी,एक पुस्तकालय लिपिक एक पुस्तकालय सीनियर क्लर्क, एक पुस्तकालय बुक लिफ्टर और एक पुस्तकालय क्लर्क है। यहां छत्तीस हजार पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तकालय में 5 सेक्शन हैं जो कि इनफोरमेशन सेक्शन, टेक्नीकल सेक्शन, सर्कुलेशन सेक्शन, रेफरेंस सेक्शन, जनरल सेक्शन हैं।

संदर्भ सूची –

1. https://en.wikipedia.org/wiki/Etawah
2. http://www.trsgroup.co.in/index.php
3. https://www.prokerala.com/education/th-rajesh-singh-mahavidhayalya-etawah-49743.html
4. https://en.wikipedia.org/wiki/Karm_Kshetra_Post_Graduate_College
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Chaudhary_Charan_Singh_Post_Graduate_College
6. https://en.wikipedia.org/wiki/Panchayat_Raj_Government_Mahila_College,_Etawah
7. http://www.icbse.com/colleges/p-r-govt-mahila-college/6536/2
8. https://en.wikipedia.org/wiki/Janta_College_Bakewar,_Etawah

चतुर्थ अध्याय

आंकड़ों का विश्लेषण

(Alalysis of Data)

4.1 प्रस्तावना (Preface):–

शोध छात्रा ने पद्धति को निर्धारित करने के बाद आंकड़ों का संकलन किया। न्यादर्श छात्राओं की एक मुख्य सूची बनाई। इसके अलावा स्नातकोत्तर एवं स्नातक छात्राओं में आंकड़ों का विभाजन किया, ताकि आंकड़ों का गहनता से एवं स्पष्ट विश्लेषण किया जा सके।

4.2 आंकड़ों के विश्लेषण व व्याख्या का महत्व (Importance of Data Analysis and Explanation)

किसी भी अनुसंधान में आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या न हो तो अनुसंधान या शोध कार्य अपूर्ण तथा अधूरा माना जाएगा। पी0वी0 यंग ने वैज्ञानिक विश्लेषण को 'शोध का रचनात्मक पक्ष' (The creative aspect of research) कहा है। क्योंकि सामाजिक शोधकर्ता किसी भी चीज या घटना को स्वयंसिद्ध नहीं मान लेता है।[88] प्रत्येक शोध छात्र एवं छात्रा के लिए आवश्यक है कि वह आंकड़ों का सावधानी पूर्वक संकलन करें और ठीक से विश्लेषित करे। ऐसा इसलिए करना चाहिए ताकि की जाने वाली जांच में किसी प्रकार की लापरवाही न बरती जाए, क्योंकि इससे निष्कर्ष झूठे और अविश्वसनीय एवं संदेहपरक हो सकते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए शोध छात्रा ने भी अपने आंकड़ों को योजनाबद्ध (Systematic) तरीके से विश्लेषित किया है।

इस संबंध में प्रो0 विलकिंसन एवं भंडारकर का कहना है कि, ''Analysis of data involves a number of closely related operations that are performed with the purpose of summarizing the collected data and organizing these in such a manner that they will yield answer to the research questions or suggest hypothesis…..'' [89]

---

[88] पृष्ठ सं0– 366, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन दिल्ली।

[89] Pg.No.- 113, Research Methodology, Dr.C. Rajendra Kumar, APH Publishing Corporation, New Delhi. 2010.

उक्त कथन से स्पष्ट होता है कि आंकड़ों का विश्लेषण अध्ययन की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सामाजिक शोध में गुणात्मक आंकड़ों को सारणी में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, ताकि उनका विश्लेषण एवं विवेचन में विशिष्ट सुविधा उपलब्ध हो सके।[90]

प्रस्तुत अध्ययन में कुल 200 न्यादर्शों से प्रश्नावली के माध्यम से पूछे प्रश्नों के उत्तर संकलित किए गए। इसके बाद प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने के लिए सूचीबद्ध किया गया। सूची में प्रत्येक प्रश्न के प्रत्येक विकल्प बनाए एवं न्यादर्श छात्रा के द्वारा जो उत्तर दिया गया उसे सूची में लिखा गया। कुल न्यादर्शों द्वारा दिए गए प्रत्येक प्रश्न के उत्तर एक सूची में लिखे गए, जो यह विश्लेषित करने के लिए संतुष्टीपूर्ण है।[91] अध्ययन में शोध छात्रा ने यह भी विश्लेषण किया है कि पुस्तकालय किस प्रकार से छात्राओं के विकास में भूमिका निभा रहे हैं एवं पुस्तकालय का प्रभाव उन ग्रामीण छात्राओं पर क्या पड़ रहा है। यह भी जानने की कोशिश की गई कि पुस्तकालय से ग्रामीण छात्राओं का भविष्य किस प्रकार से लाभप्रद हो सकता है।

4.2.1 ग्रामीण छात्रा द्वारा पुस्तकालय उपयोग किए जाने से आशय

विभिन्न महाविद्यालयों में पुस्तकालय की सुविधा प्रदान की जाती है। ऐसे में छात्र–छात्राएं उसका उपयोग भी करते हैं। शोध छात्रा इस अध्ययन में यह जानने का भी प्रयास किया कि ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय जाती है तो उसका कारण क्या होता है और वह किस प्रकार से किसी पुस्तकालय का उपयोग करती है। यह भी पता करने की कोशिश की कि पुस्तकालय की उपयोगिता उद्देश्य के साथ आवश्यकता पर भी निर्भर करता है या नहीं।

यहां बताना जरूरी है कि उपयोगिता से क्या आशय है। शोध छात्रा ने यह माना कि ऐसी ग्रामीण छात्रा जो पुस्तकालय में पठन हेतु जाती है, तो इसका अर्थ यह माना जाएगा कि वह पुस्तकालय का उपयोग कर रही है। यदि कोई ग्रामीण छात्रा पुस्तकालय में बैठकर नहीं पढ़ती लेकिन ऐसी पुस्तकों को खोजने का काम करती है जिसकी उसे

---

[90] पृष्ठ सं0– 397, अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में, एच0के0 कपिल, राखी प्रकाशन आगरा। 2012.
[91] पृष्ठ सं0– 333, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13

आवश्यकता है, चाहे वह पुस्तक निर्गत कराए या नहीं तो यह माना जाएगा कि वह पुस्तकालय का उपयोग करती है। यदि कोई ग्रामीण छात्रा पुस्तकालय जाती है और किसी पुस्तक को पढ़ने के लिए पुस्तकालय अध्यक्ष द्वारा निर्गत करवाती है तो यह माना जाएगा कि वह पुस्तकालय का उपयोग करती है। यदि कोई ग्रामीण छात्रा अपने पाठ्यक्रम के अलावा अन्य पठन सामग्री पढ़ती है जो कि पुस्तकालय में उपलब्ध है तो यह माना जाएगा कि वह पुस्तकालय का उपयोग करती है। यदि कोई ग्रामीण छात्रा अपने घर से पाठ्य सामग्री लाती है लेकिन पढ़ने के लिए पुस्तकालय में जाती है एवं बैठकर पढ़ती है तो यह माना जाएगा कि वह पुस्तकालय का उपयोग करती है। यदि कोई ग्रामीण छात्रा अपने पुस्तकालय अध्यक्ष के पास जाकर किसी पुस्तक की पुस्तकालय में उपलब्धता हेतु मांगपत्र प्रस्तुत करती है, जोकि पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं है, जोकि उसने पुस्तकालय में जाकर खोजा होगा, इसलिए यह माना जाएगा कि वह पुस्तकालय का उपयोग करती है।

यदि कोई ग्रामीण छात्रा महाविद्यालय आती है परंतु अपने पुस्तकालय में न पढ़ने जाती है न ही पुस्तकें निर्गत कराने जाती है और न ही अपने करियर संबंधी जानकारी प्राप्त करने जाती है तो यह माना जाएगा कि वह पुस्तकालय का उपयोग नहीं करती है। जो ग्रामीण छात्रा सिर्फ पुस्तकालय में प्रवेश करती रहती है परंतु पुस्तकालय में संचालित किसी भी सेवा का लाभ नहीं लेती तो यह माना जाएगा कि वह पुस्तकालय का उपयोग नहीं करती है।

4.3 विश्लेषण करने के लिए आंकड़ों का बंटवारा

शोध छात्रा द्वारा आंकड़ों का विभिन्न स्थानों पर बंटवारा भी किया गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि कई आंकड़े ऐसे प्राप्त हुए हैं, जिनमें पुस्तकालय के प्रति स्नातकोत्तर की ग्रामीण छात्राओं की विचारधारा स्नातक की ग्रामीण छात्राओं की विचारधारा से अलग है। ऐसे में उनका विश्लेषण अलग से भी किया गया है, विभिन्न कोणों से जानकारी प्राप्त हो और गहन अध्ययन किया जा सके। इसलिए इन सबका प्रथक विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन में प्राप्त आंकड़ों को विश्लेषित करने के लिए तीन भागों में बांटा गया है, जो इस प्रकार हैं –

1. कुल न्यादर्शों द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण।
2. कुल स्नातक की ग्रामीण छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण।
3. कुल स्नातकोत्तर की ग्रामीण छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण।

उरोक्त तीनों भागों में विशिष्टता होने पर न्यादर्श की ग्रामीण उच्च शिक्षा, कॅरियर और ग्रामीण शैक्षिक विकास के बारे में भी विश्लेषण किया गया है।

4.4 आंकड़ों का सारणीयन (Tabulation of Data)

आंकड़ों के संकलन से प्राप्त तथ्य या सामग्री शुरू में अव्यवस्थित एवं बिखरी हुई होती है। ऐसे में निष्कर्ष निकालने के लिए उसे व्यवस्थित करना आवश्यक होता है। सामाजिक अनुसंधान में यह कार्य वर्गीकरण द्वारा किया जाता है।[92] आंकड़ों का सारणीयन (Tabulation) करने से उनका विश्लेषण करना आसान हो जाता है।[93] सारणीयन से ग्राफ, चार्ट बनाना भी आसान हो जाता है, जिससे आंकड़े स्पष्ट हो जाते हैं।[94] आंकड़ों को सारणीबद्ध (Tabular) करने के पश्चात आंकड़ों को प्रतिशत, माध्यों एवं पारस्परिक सह–संबंधों व सूचकांकों में परिवर्तित किया जा सकता है।[95] ऐसा इसलिए जरूरी है ताकि अपने अध्ययन में उठाए गए प्रश्नों के उचित उत्तरों को प्राप्त कर सके।[96] प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्रा द्वारा सूचनादाताओं और उनसे प्राप्त सूचनाओं को क्रमबद्ध करके एक सूची में तैयार किया। इससे प्रत्येक छात्रा के द्वारा दिए गए उत्तरों को एक साथ संकलित करना आसान हो गया। सारणी में प्रत्येक प्रश्न के उत्तरों के अतिरिक्त न्यादर्शों को विभिन्न भागों में बांटा है, जिससे आंकड़ों को दूसरी दिशा से विश्लेषण करना आसान हो गया। शोध छात्रा ने स्नातकोत्तर छात्राओं द्वारा दी गई सूचनाओं को पृथक किया। इसी तरह स्नातक छात्राओं द्वारा दी सूचनाओं को भी पृथक कर सारणीबद्ध (Tabular) किया।

---

[92] पृष्ठ सं0– 341, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, रवीन्द्र नाथ मुकर्जी, विवेक प्रकाशन दिल्ली।
[93] Pg.No.- 110, Social Research Methods, Nicholas Walliman, SAGE Publication, New Delhi. 2006.
[94] पृष्ठ सं0– 333, अनुसंधान परिचय, पारसनाथ राय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा। 2012–13
[95] पृष्ठ सं0– 399, अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में, एच0के0 कपिल, राखी प्रकाशन आगरा। 2012.
[96] Pg.No.- 115, Research Methodology, Dr.C. Rajendra Kumar, APH Publishing Corporation, New Delhi. 2010.

4.5 आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन और विश्लेषण (Diagrammatic Presentation and Analysis of Data)

शोध छात्रा द्वारा तैयार की गई प्रश्नावली के माध्यम से जो सूचनाएं प्राप्त हुईं, उनका चित्रमय प्रदर्शन और व्याख्यात्मक विश्लेषण इस प्रकार है–

4.5.1 ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय का उपयोग :–

शोध छात्रा द्वारा बनाई गई प्रश्नावली में पहला प्रश्न यही पूछा गया कि क्या आप पुस्तकालय जाती हैं? ऐसा इसलिए पूछा गया ताकि सिर्फ उन्हीं ग्रामीण छात्राओं का चयन किया जा सके जो पुस्तकालय का उपयोग करती है।

इसे सारणी द्वारा इस प्रकार समझा जा सकता है–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
200	हां	100
0	नहीं	0
200	कुल	100

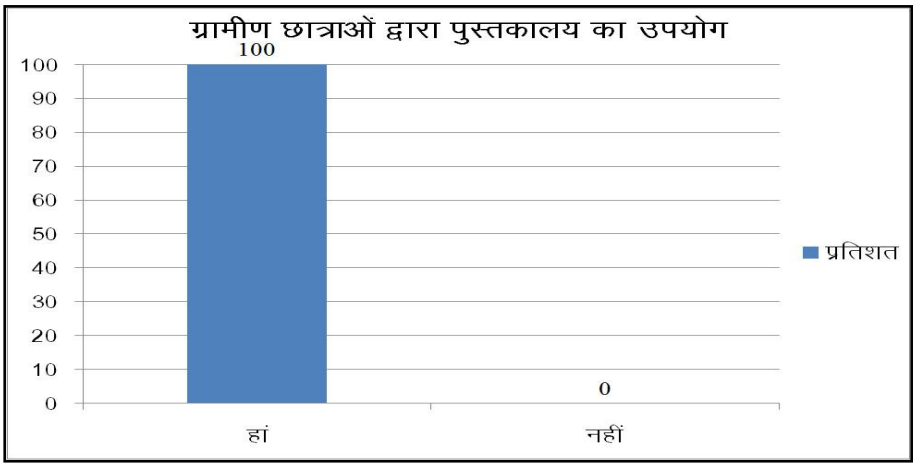

Figure 1- ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय का उपयोग

इसके साथ ही अन्य कारण यह है कि पुस्तकालय का प्रभाव का मापन तभी किया जा सकता है, जबकि वह छात्रा पुस्तकालय का उपयोग कर पा रही हो। ऐसे में यह जानना

जरूरी है कि जिन ग्रामीण छात्राओं से पुस्तकालय के संबंध में जो आंकड़े एकत्रित किए गए हैं, वे छात्राएं पुस्तकालय उपयोग भी करती हैं या नहीं। प्रस्तुत आंकड़ों के माध्यम से अध्ययन की पारदर्शिता को दर्शाते हैं। आंकड़ों के अनुसार जिन ग्रामीण छात्राओं का चयन किया गया उनमें प्रत्येक छात्रा पुस्तकालय का उपयोग करती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जो ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग करती हैं अथवा कर रही हैं वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पुस्तकालय द्वारा प्रभावित हो रही हैं अथवा होती हैं।

4.5.2 पुस्तकालय से मिलने वाली पाठ्य सामग्री :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के दूसरे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि क्या आपको पुस्तकालय से पाठ्यक्रम सम्बंधी पुस्तक/कें प्राप्त होती है/हैं? उत्तर में छात्राओं से जो जानकारी प्राप्त हुई, वह इस प्रकार है।

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
154	हां	77
46	नहीं	23
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

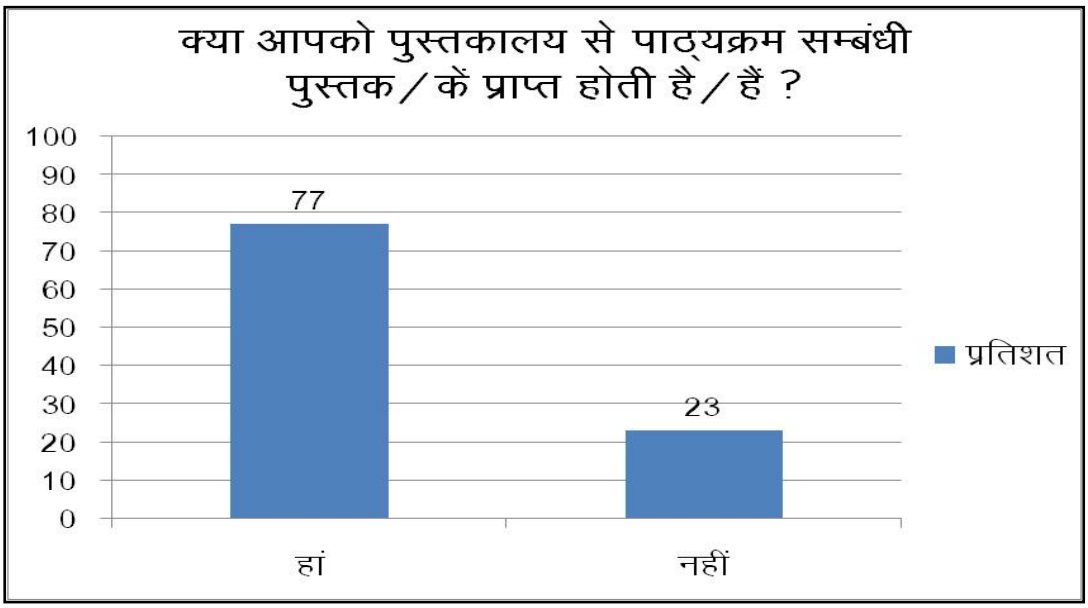

Figure 2 - पुस्तकालय से मिलने वाली पाठ्य सामग्री

शोध छात्रा द्वारा विश्लेषण करने पर पता चलता है कि कुल 200 छात्राओं में से 154 अर्थात 77 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं ऐसी हैं जिन्हें उनके पाठ्यक्रम के अनुसार पुस्तक या पुस्तकें प्राप्त हो जाती है/हैं। विश्लेषण करने पर से पता चलता है कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 46 अर्थात 23 प्रतिशत छात्राएं ऐसी हैं जिन्हें उनके पाठ्यक्रम संबंधी सामग्री प्राप्त नहीं होती। महाविद्यालय में विभिन्न पाठ्यक्रम संचालित होते हैं, ऐसे में कई विषयों की पुस्तकें उपलब्ध नहीं होती। विश्लेषण से पता चलता है कि जिन्हें पुस्तकें प्राप्त नहीं हो पाती उनके कई कारण हो सकते हैं। छात्राओं से प्रश्नावली भरवाते समय जो बातचीत हुई, उस दौरान जानकारी मिली कुछ छात्राओं को उनके विषय संबंधी पुस्तकें नहीं मिल पाती। अतः पुस्तकालय का उपयोग वे अन्य कारणों से करती हैं। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.3 पुस्तकालय कर्मचारियों द्वारा की जाने वाली मदद एवं सहयोग :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के तीसरे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि क्या पुस्तकालय कर्मचारी आपकी पुस्तक/कें ढूंढने में मदद या अन्य सहयोग करते हैं? उत्तर में छात्राओं से जो जानकारी प्राप्त हुई, वह इस प्रकार है।

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
123	हां	61.5
77	नहीं	38.5
200	कुल	100

शोध छात्रा द्वारा विश्लेषण करने पर पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 123 ग्रामीण छात्राएं अर्थात 61.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि पुस्तकालय कर्मचारी पुस्तकालय में उनकी पुस्तक ढूंढने में मदद भी करते हैं एवं सहयोग भी करते हैं। इसी प्रकार 77 अर्थात 38.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं ऐसी भी हैं, जोकि यह मानती हैं, कि पुस्तकालय कर्मचारी उनका सहयोग या मदद नहीं करते।

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

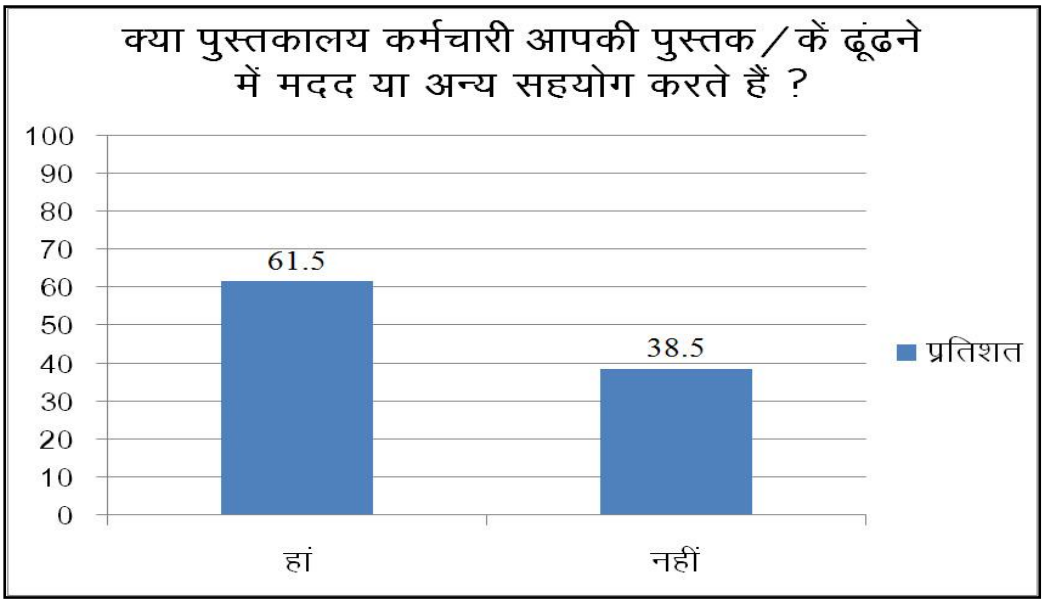

Figure 3 - पुस्तकालय कर्मचारियों द्वारा की जाने वाली मदद एवं सहयोग

यदि विश्लेषण को दूसरी दिशा से देखें तो को जानकारी मिलती है कि ऐसी छात्राएं जिनके पाठ्यक्रम संबंधी पुस्तकें ही उपलब्ध नहीं हैं, उनका पुस्तकालय कर्मचारी सहयोग नहीं कर सकते। अतः विश्लेषण में इस कथन को नकारात्मक नहीं लिया जा सकता। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.4 पुस्तकालय में भाषा संबंधी पुस्तकों की उपलब्धता :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के चौथे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि क्या आपके पुस्तकालय में आपकी भाषा से सम्बन्धित पुस्तक/कें मिलती है/हैं? इसके उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं।

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
125	हां	62.5
75	नहीं	37.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

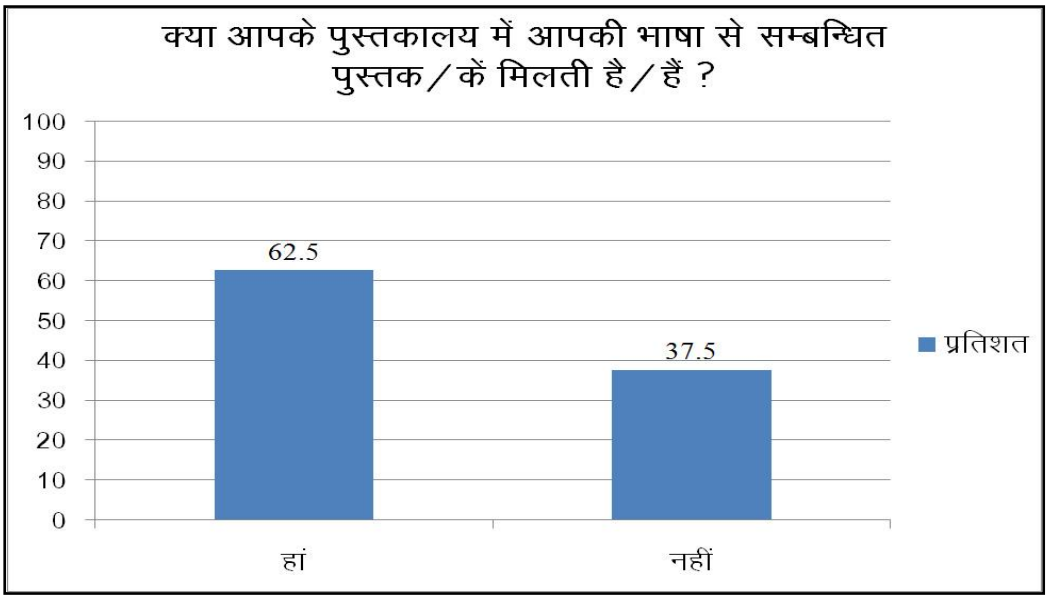

Figure 4- पुस्तकालय में भाषा संबंधी पुस्तकों की उपलब्धता

शोध छात्रा द्वारा विश्लेषण करने पर पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 125 ग्रामीण छात्राएं अर्थात 62.5 प्रतिशत ऐसी हैं, जो यह स्वीकार करती हैं कि उनकी भाषा में उन्हें पुस्तक या पुस्तकें प्राप्त हो जाती हैं। विश्लेषण से यह सिद्ध होता है कि जो छात्रा हिन्दी में पुस्तकें प्राप्त करना चाहती हैं, उन्हें हिन्दी में पुस्तकें प्राप्त हो जाती हैं। साथ ही जो छात्राएं अंग्रेजी में पुस्तकें प्राप्त करना चाहती हैं, उन्हें अंग्रेजी में पुस्तकें प्राप्त हो जाती हैं। इसके विपरीत प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर शोध छात्रा को यह भी पता चला कि 75 छात्राएं अर्थात 37.5 प्रतिशत छात्राओं का यह मानना है कि पुस्तकालय से उन्हें उनकी भाषा की पुस्तक/कें प्राप्त नहीं हो पाती। विश्लेषण में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जिन छात्राओं को उनकी भाषा में पुस्तकें प्राप्त नहीं हो पाती वे अन्य भाषाओं में पुस्तकें लेती हैं। ऐसे में यह कहना उचित होगा कि ऐसी छात्राओं को पढ़ने में सामान्यतः कठिनाई होती होगी। अध्ययन से यह पता चलता है कि जिन छात्राओं को पुस्तकालय से उनकी भाषा में पुस्तकें नहीं मिल पाती, वे अपनी भाषा में पुस्तकें लेने के लिए पुस्तक बाजार पर निर्भर होती होंगी। चूंकि छात्राएं ग्रामीण परिवेश से आती हैं। अधिकतर छात्राएं अपने पाठ्यक्रम की फीस भरने में अक्षम होती हैं। ऐसे में यदि ऐसी

छात्राओं को पुस्तकालय से उनकी भाषा में पुस्तकें नहीं मिल पाती, वे आर्थिक समस्या के कारण बाजार से भी अपनी भाषा में पुस्तकें नहीं ले सकती।

अध्ययन से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली छात्राओं के लिए पुस्तकालय बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो सकता है। और जिन छात्राओं को उनकी भाषा में पुस्तकें प्राप्त हो रही हैं, पुस्तकालय से उनका शैक्षिक विकास हो रहा है, वह भी बिना किसी अन्य खर्चे के। आंकड़ों के विश्लेषण से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकती है कि ग्रामीण छात्राओं की शैक्षिक विकास में पुस्तकालय की अहम भूमिका है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

भाषा से आशय – शोध छात्रा का भाषा से आशय हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित पुस्तकों से है।

4.5.5 शैक्षिक पाठ्यक्रम से अलग पुस्तकों का अध्ययन :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के पांचवे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि क्या आप पुस्तकालय में शैक्षिक पाठ्यक्रम से अलग पुस्तक/कें भी पढ़ती हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
79	हां	39.5
121	नहीं	60.5
200	कुल	100

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 79 अर्थात 39.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि वे पुस्तकालय में अपने पाठ्यक्रम से अलग पुस्तक या पुस्तकें भी पढ़ती हैं। इसमें मनोरंजन से संबंधित, कहानी, उपन्यास, कॅरियर से संबंधित, समसामयिकी घटनाएं संबंधी पत्र पत्रिकाएं आदि शामिल हैं।

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

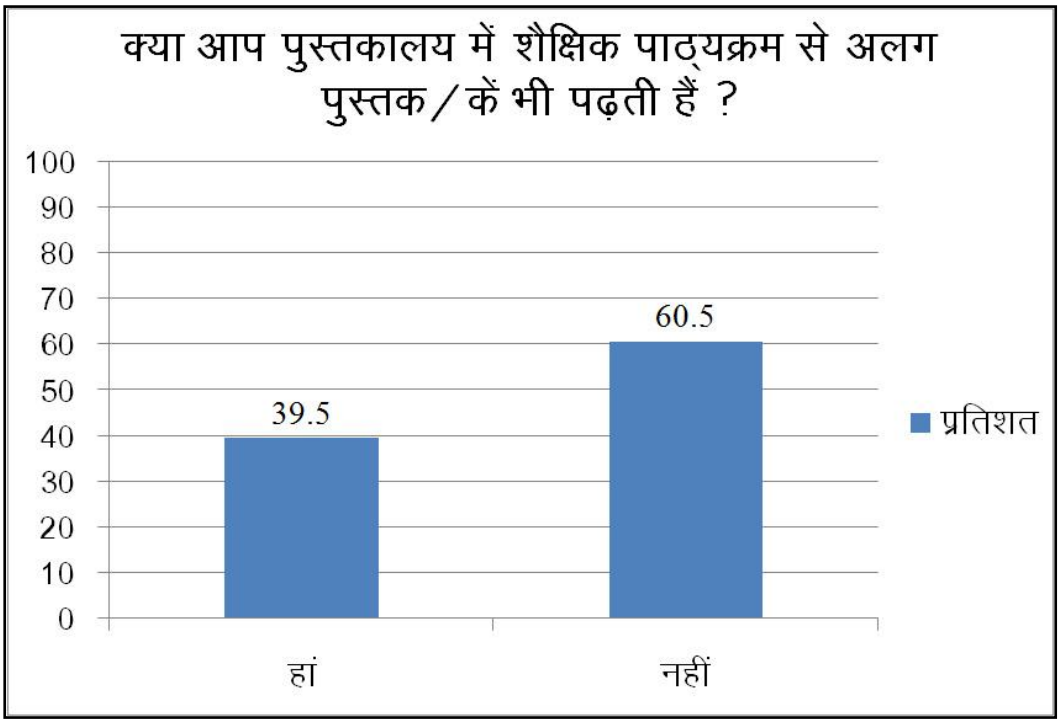

Figure 5 – शैक्षिक पाठ्यक्रम से अलग पुस्तकों का अध्ययन

आंकड़ों के विश्लेषण करने पर शोध छात्रा को यह भी पता चला कि 121 ग्रामीण छात्राएं अर्थात 60.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं ऐसी हैं, जो पुस्तकालय में शैक्षिक पाठ्यक्रम के अलावा अन्य कोई पुस्तक या पुस्तकें नहीं पढ़ती। आंकड़ों पर ध्यान दें तो पता चलेगा कि आधे से अधिक छात्राएं अपने पाठ्यक्रम की ही पुस्तकों का अध्ययन करती हैं। यह संख्या बड़ी है और यह दर्शाती है कि कहीं न कहीं छात्राओं का ध्यान पाठ्यक्रम के प्रति अधिक है। शोध छात्रा ने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण छात्राओं को निर्धारित समय ही मिलता है पुस्तकालय उपयोग करने के लिए। इसलिए वे सिर्फ ऐसी ही पुस्तकों का अवलोकन कर पाती हैं या ये कहे पढ़ती हैं, जो कि उनके पाठ्यक्रम से संबंधित है। अन्य पुस्तकों का वे अवलोकन या तो समय के अभाव में नहीं कर पाती या उनकी इच्छा नहीं होती। प्रश्नावली को भरवाते समय बातचीत में शोध छात्रा ने पाया कि कॉलेज में कक्षाएं सम्पन्न हो जाने के बाद उन्हें जल्द से जल्द घर जाना पड़ता है, जबकि वे पुस्तकालय का और अधिक उपयोग करना चाहती है। फिर भी वे आवश्यकता के अनुसार समय समय पर पुस्तकालय

का उपयोग करती रहती हैं। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.6 पुस्तकालय से ग्रामीण छात्राओं को पुस्तकें प्राप्त होना :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के छठे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि क्या आपको पुस्तकालय में पुस्तक आसानी से मिल (निर्गत हो) जाती हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
131	हां	65.5
69	नहीं	34.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

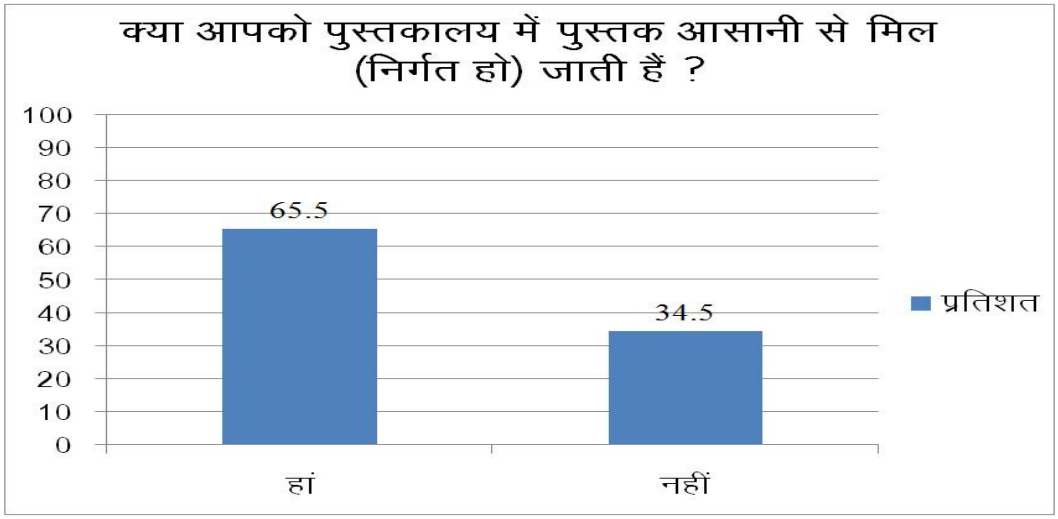

Figure 6 - **पुस्तकालय से ग्रामीण छात्राओं को पुस्तकें प्राप्त होना**

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 65.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि उन्हें पुस्तकालय से संबंधित पुस्तक आसानी से

मिल जाती है। इन छात्राओं की कुल संख्या 200 में से 131 है। अध्ययन में शोध छात्रा को पता चला कि पुस्तकालय में यदि कोई ऐसी पुस्तक उपलब्ध है, जिसकी आवश्यकता किसी छात्रा को है और वह छात्रा पुस्तकालय में जाती है तो उसे वह पुस्तक बिना किसी समस्या के मिल जाती है। उसे किसी प्रकार का विशेष प्रयास करना नहीं पड़ता। इस प्रकार शोध छात्रा उपलब्ध आंकड़ों के विश्लेषण से इस निष्कर्ष पर पहुंची की पुस्तकालय में पुस्तकें उपलब्ध होती हैं तो आधे से अधिक छात्राओं को आसानी से पुस्तकें प्राप्त हो जाती हैं। इसके विपरीत 69 ग्रामणी छात्राओं अर्थात 34.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि उन्हें पुस्तकालय से पुस्तकें आसानी से नहीं मिल पाती। अध्ययन में स्नातक एवं स्नातकोत्तर की छात्राओं से आंकड़ों का संकलन किया गया।

इसमें विभिन्न पाठ्यक्रमों की छात्राएं शामिल हैं। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि कुछ पाठ्यक्रम ऐसे हैं जिनकी संबंधित पुस्तकों की प्रतियां कम होती हैं और आए दिन पुस्तकें निर्गत की जाती है अथवा वापस जमा की जाती हैं। ऐसे में 34.5 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि उन्हें पुस्तकें आसानी से नहीं मिल पाती उन्हें बार बार ढूंढनी पड़ती है या संबंधित पुस्तक की पुस्तकालय में उलब्ध होने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है या किसी अन्य समस्या से सामना करना पड़ता है।

आसानी से पुस्तकों का निर्गत होना या मिलने से आशयः– यहां शोध छात्रा का पुस्तकालय से पुस्तकों का आसानी से निर्गत होने या मिलने का आशय यह है कि छात्रा अपने पाठ्यक्रम से संबंधित पुस्तक/कें निर्गत कराने जाती है और पुस्तकालय में संबंधित पुस्तक उपलब्ध भी है, जो छात्रा को बिना किसी समस्या के उपलब्ध करा दी जाती है या निर्गत कर दी जाती है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.7 ग्रामीण छात्राओं के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के सातवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि क्या आपके पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
148	हां	74
52	नहीं	26
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

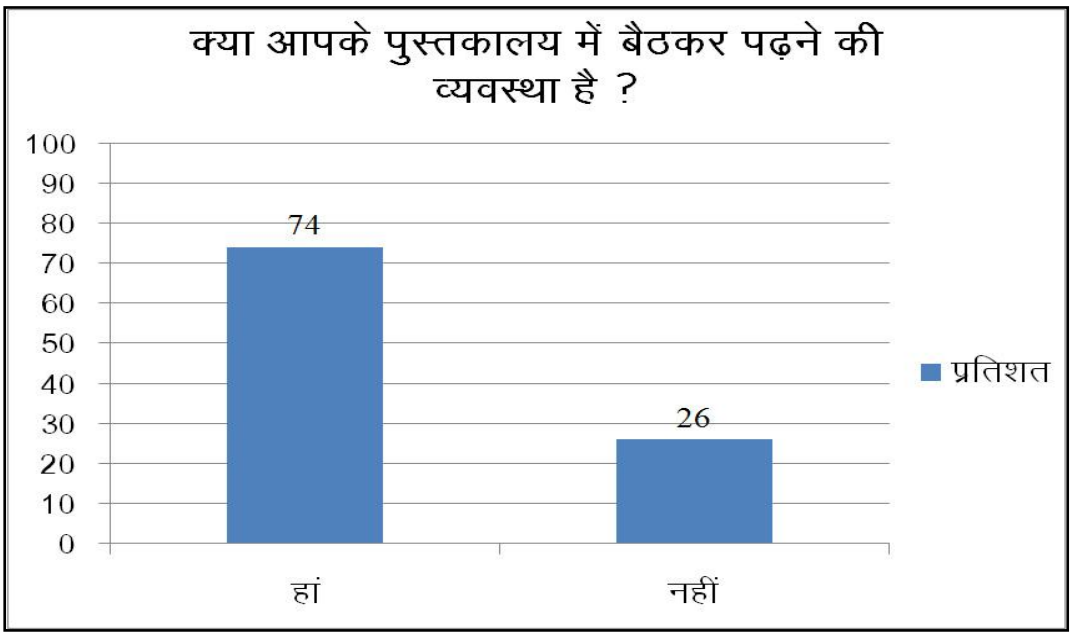

Figure 7 - ग्रामीण छात्राओं के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 148 अर्थात 74 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि उनके पुस्तकालय में बैठने की व्यवस्था है। विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पुस्तकालय में बैठने की व्यवस्था है और छात्राएं वहां बैठकर पढ़ सकने में सक्षम हैं अथवा पुस्तकालय में बैठकर पढ़ती हैं। प्राप्त आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि 26 प्रतिशत अर्थात 52 ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि उनके पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था नहीं है। विश्लेषण से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि पुस्तकालय में या तो फर्नीचर ही नहीं है अथवा छात्राओं के बैठने के लिए फर्नीचर आदि तो है परंतु उनकी संख्या कम है, जिसके कारण सभी छात्राओं को बैठकर पढ़ने का अवसर नहीं मिल पाता। शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर भी पहुंचती है कि जिन 26 प्रतिशत छात्राओं का मानना यह है कि उनके पुस्तकालय में बैठने की उचित

व्यवस्था नहीं है, उनके द्वारा आवश्यकता पड़ने पर ही पुस्तकालय का उपयोग किया जाता है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.8 महाविद्यालय में पुस्तकालय के प्रति दृष्टिकोण :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के आठवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि आपके नजरिये से क्या हर महाविद्यालय में पुस्तकालय होना चाहिए? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
197	हां	98.5
03	नहीं	1.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

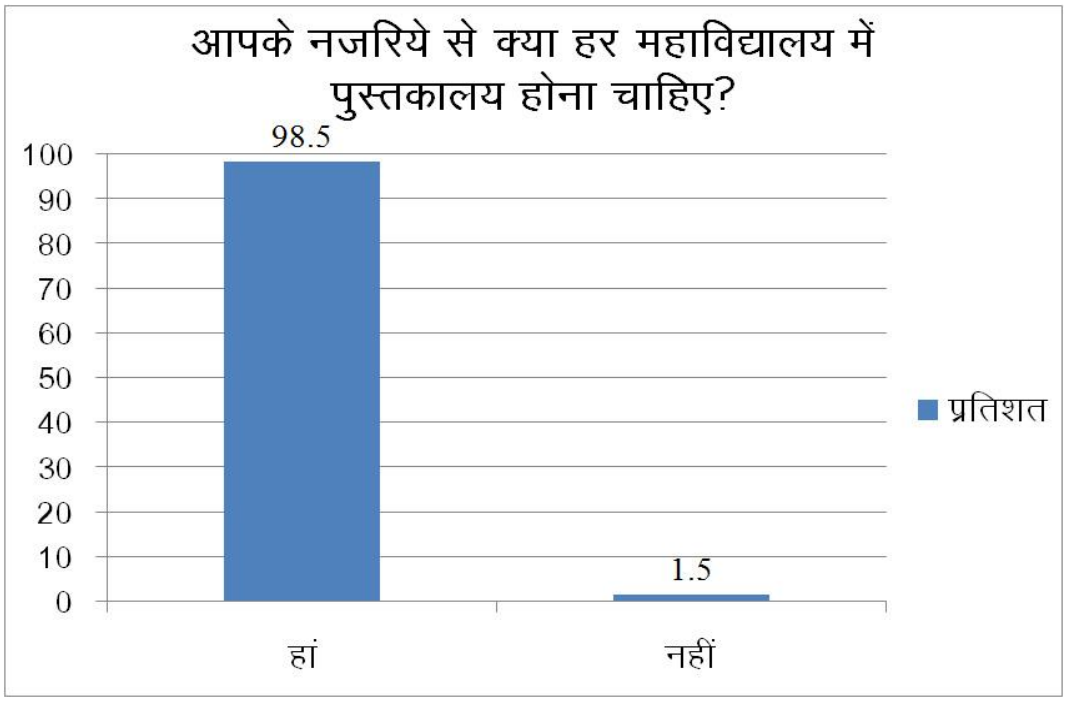

Figure 8 - महाविद्यालय में पुस्तकालय के प्रति दृष्टिकोण

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 197 ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि महाविद्यालय मे पुस्तकालय होना चाहिये। इनका प्रतिशत 98.5 है। शोध छात्रा ने विश्लेषण में पाया कि ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय जाती हैं और उन्हें पुस्तकालय का महत्व एवं आवश्यकता का ज्ञान है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि पुस्तकालय का प्रभाव छात्राओं पर पड़ रहा है और ग्रामीण छात्राएं विभिन्न प्रकार से पुस्तकालय द्वारा प्रभावित हो रही हैं जो उनका शैक्षिक विकास कर रहा है। कुल 200 छात्राओं में से मात्र तीन छात्राओं ने अर्थात 1.5 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि महाविद्यालय में पुस्तकालय नहीं होना चाहिए। अध्ययन से पता चलता है कि ये वे छात्राएं हैं जोकि की पुस्तकालय की आवश्यकता तो समझती हैं, परंतु उनकी आवश्यकताएं उनके अनुसार पूरी नहीं हो पाती। अध्ययन में यह भी जानकारी मिलती है कि ग्रामीण छात्राओं को समय पर घर पहुंचना होता है और वे महाविद्यालय में कक्षाएं पूर्ण होने के बाद पुस्तकालय में उचित समय नहीं दे पातीं, ऐसे में वे विचार करती हैं कि पुस्तकालय महाविद्यालय में न होकर किसी अन्यत्र स्थान पर होना चाहिए, जिसे वे अपने अनुसार उपयोग कर सकें। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.9 घरेलू कार्यों के बीच ग्रामीण छात्राओं का अध्ययन :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के नोवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि जब आप घर पर अध्ययन करती हैं, तो घर के कामों की वजह से अध्ययन में परेशानी आती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
121	हां	60.5
79	नहीं	39.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

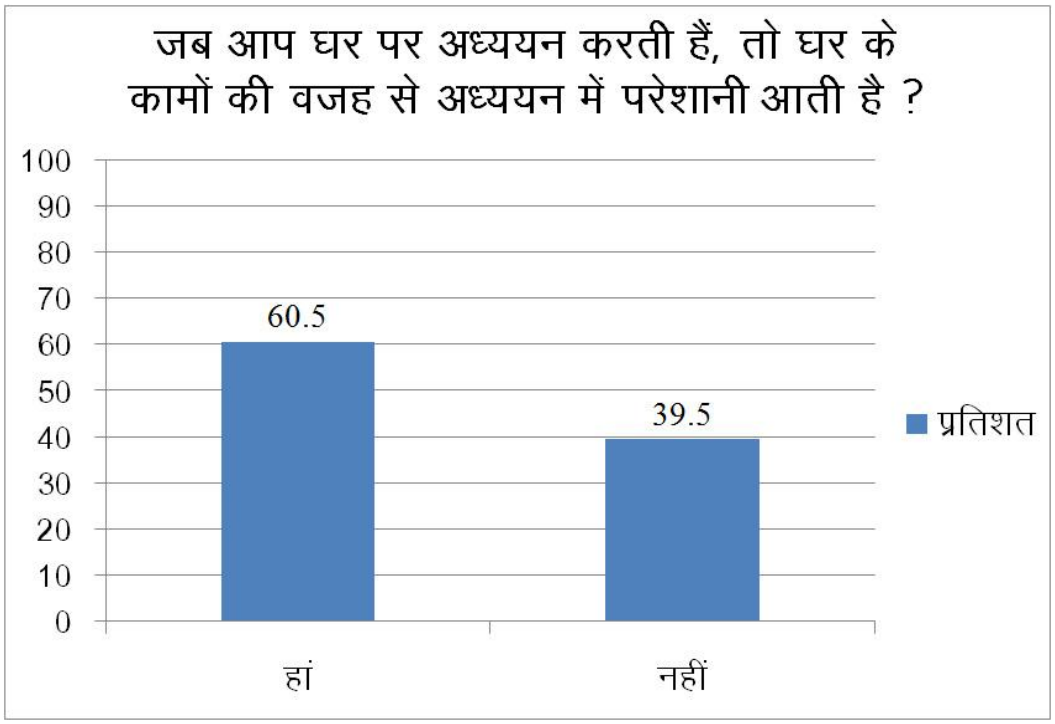

Figure 9 - घरेलू कार्यों के साथ ग्रामीण छात्राओं का अध्ययन

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 121 अर्थात 60.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि घर के कार्यों के कारण उनके अध्ययन में अवरोध उत्पन्न होता है। अध्ययन से पता चलता है कि ग्रामीण छात्राओं को घर के दैनिक कार्य भी करने होते हैं और साथ में अपना अध्ययन भी करना होता है। ऐसे में जब छात्राएं अध्ययन करती हैं तो घर के कामों के कारण उनका अध्ययन कुछ समय के लिए रूक जाता है अवरूद्ध और जब वे वापस अध्ययन करने जुटती हैं तो उन्हें फिर से अपने अध्ययन को आगे बढ़ाने के लिए अतिरिक्त समय देना होता है। आंकड़ों को विश्लेषित करने पर यह जानकारी मिलती है कि 79 अर्थात 39.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं ऐसी भी हैं, जिन्हें घरेलू कार्यों के कारण अध्ययन में किसी भी प्रकार की समस्या नहीं आती। 39.5 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि वे घर के काम तो करती हैं, लेकिन उनके अध्ययन में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न नहीं होता। अध्ययन से पता चलता है कि 79 छात्राएं अपने अध्ययन को उस समय के आस पास नहीं करती जिस समय में उनका घरेलू कार्य निर्धारित होता है। इस प्रकार की छात्राएं अपनो समय पहले से ही निर्धारित करके रखते हैं, ताकि जब वे अध्ययन करना शुरू करें तो उन्हें कोई घर का काम न करना पड़े। वे घर के सभी कार्यों को पूर्ण करने के बाद ही अध्ययन करना शुरू करते हैं। शोध छात्रा

विश्लेषण से इस निष्कर्ष पह पहुंचती है कि कुछ छात्राएं देर रात में अध्ययन करती हैं या जल्दी सुबह उठकर ताकि जब तक घर के काम करने का समय हो तब तक वे अपना अध्ययन कार्य पूर्ण कर लें। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

घरेलू कार्यों या घर के कामों से आशय– शोध छात्रा का ग्रामीण छात्राओं द्वारा किए जाने वाले घरेलू कार्यों या घरा के कामों से आशय घर में भोजन तैयार करना, बर्तन साफ करना, घर की साफ–सफाई रखना, कपड़े धोना, बाजार करना शामिल है।

4.5.10 पुस्तकालय में अध्ययन के दौरान होने वाली परेशानी :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के दसवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि जब आप पुस्तकालय में अध्ययन करती हैं, तो अध्ययन में कोई परेशानी आती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
45	हां	22.5
155	नहीं	77.5
200	कुल	100

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 45 ग्रामीण छात्राओं अर्थात 22.5 प्रतिशत का कहना है कि पुस्तकालय में अध्ययन के दौरान उन्हें परेशानी होती है। इन आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चला कि महाविद्यालयों में पुस्तकालय की स्थिति विश्लविद्यालयों जैसी नहीं होती। चाहे बात पुस्तकों की उपलब्धता की हो या उनके रख रखाव की। साथ ही फर्नीचर भी तुलनात्मक रूप से बहुत कम और सिर्फ प्राथमिक उद्देश्य की पूर्ति करने मात्र होती है। अध्ययन से पता चलता है कि 22.5 प्रतिशत छात्राएं मानती है कि पुस्तकालय में पढ़ते समय उन्हें परेशानी होती है।

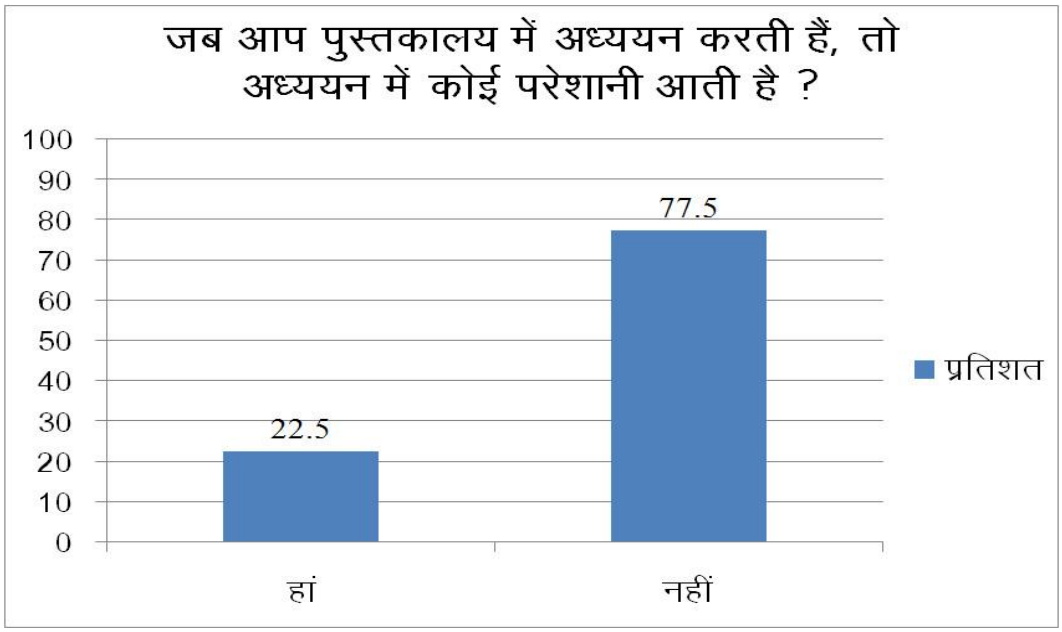

Figure 10 - पुस्तकालय में अध्ययन के दौरान होने वाली परेशानी

इसमें पर्याप्त फर्नीचर न होने की वजह से बैठकर न पढ़ पाने की समस्या हो सकती है। साथ ही पुस्तकों का रखरखाव भी ऐसा माना जा सकता है कि उचित स्थान पर पुस्तकें न रखी मिलती हो। यह भी संभावना हो सकती है कि पुस्तकालय में भीड़ बढ़ जाने के कारण छात्राएं अध्ययन में एकाग्र न हो पाती हों। दूसरी तरफ 200 में से 155 अर्थात 77.5 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि पुस्तकालय में पढ़ते समय उन्हें किसी प्रकार की समस्या नहीं आती। विश्लेषण करने पर पता चलता है कि छात्राएं पुस्तकालय जाती हैं, नियत स्थान पर बैठकर पढ़ती हैं। साथ ही पुस्तकों को ढूंढने में किसी प्रकार की समस्या नहीं आती। न्यादर्श में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों की छात्राओं को शामिल किया गया है। इसलिए अधिकतर छात्राएं ऐसी हैं जिनकी पुस्तकें पुस्तकालय में आसानी से उपलब्ध हैं। ऐसे में उन्हें पुस्तकालय में अध्ययन करते समय किसी प्रकार की समस्या या परेशानी नहीं आती। इन आंकड़ों के विश्लेषण से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि महाविद्यालयों के पुस्तकालय में पुस्तकें एवं रखरखाव एवं फर्नीचर की उपलब्धता से छात्राएं पुस्तकालय का भरपूर उपयोग करती हैं। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.11 घर में अध्ययन करने का प्रभाव :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के ग्याहरवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि क्या घर पर पढ़ाई करने से अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
142	हां	71
58	नहीं	29
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

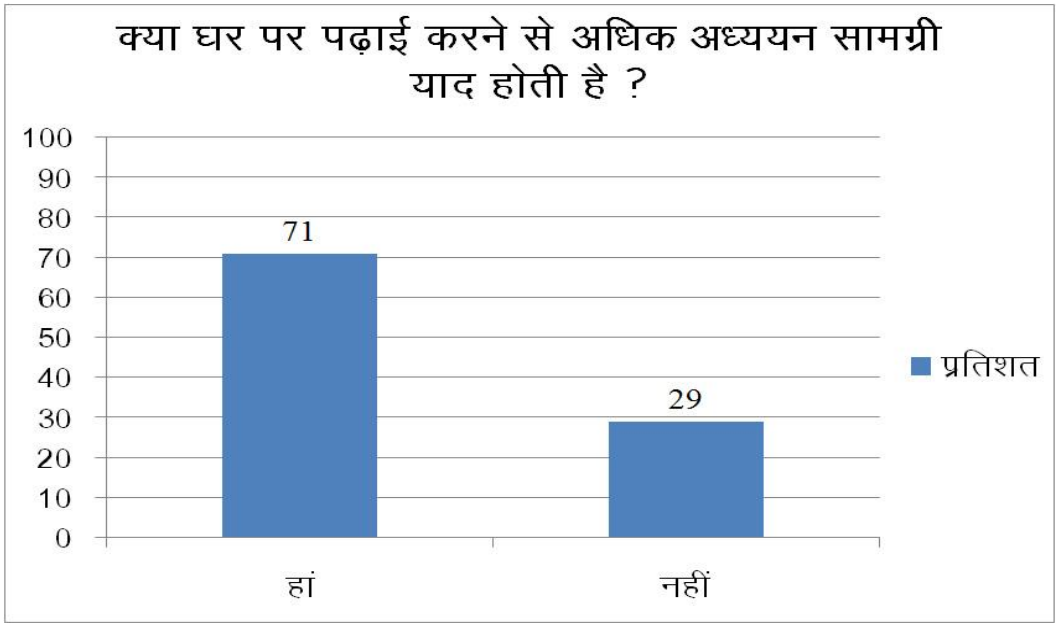

Figure 11 - घर में अध्ययन करने का प्रभाव

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 142 अर्थात 71 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि जब वे घर पर अध्ययन करती है तो अधिक अध्ययन सामग्री याद हो जाती है। विश्लेषण से पता चलता है कि छात्राएं ग्रामीण परिवेश की हैं। उनका अधिक समय घर के अंदर ही व्यतीत होती है, ऐसे में उनका घर के प्रति अधिक लगाव होता है। ऐसे में कहा जा सकता है कि छात्राओं को घर पर अध्ययन करने से अधिक याद होता है। इसके विपरीत 58 अर्थात 29 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि घर पर अध्ययन करने से उन्हें याद नहीं होता। विश्लेषण में पता चलता है कि जिन छात्राओं को घर के कामों की वजह से अध्ययन में परेशानी होती है, उन छात्राओं को याद

घर पर याद नहीं होता। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.12 पुस्तकालय में अध्ययन करने का प्रभाव :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के बारहवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि क्या पुस्तकालय मे पढ़ाई करने से अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
69	हां	34.5
131	नहीं	65.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

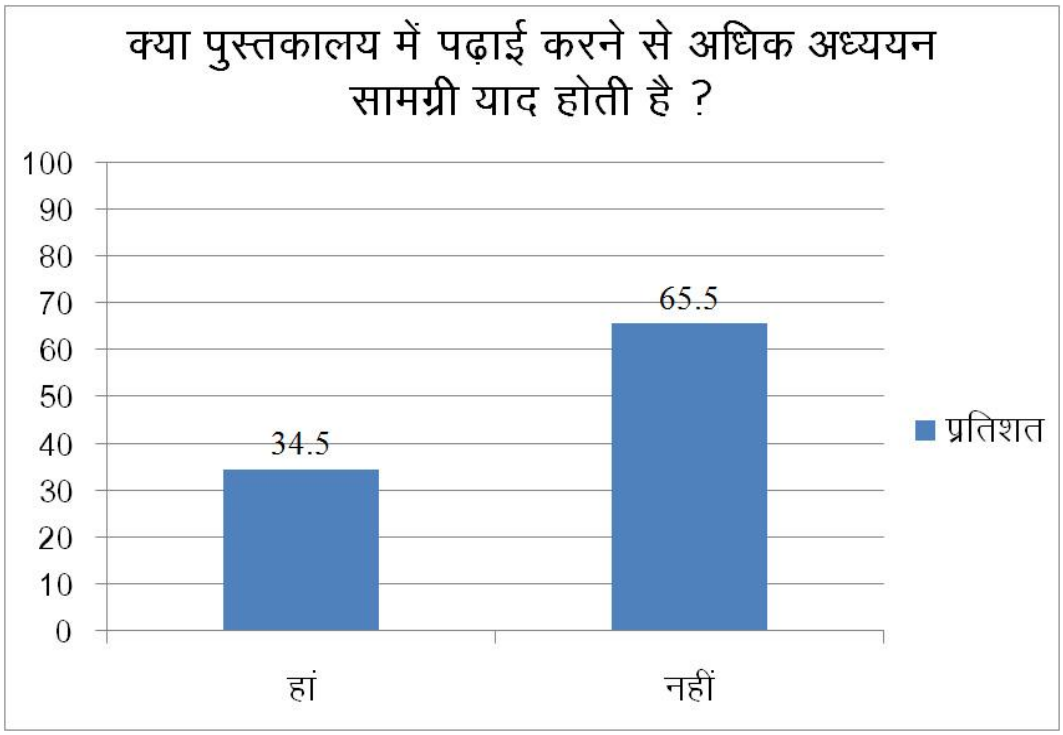

Figure 12 - पुस्तकालय में अध्ययन करने का प्रभाव

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 69 अर्थात 34.5 प्रतिशत छात्राओं ने कहा कि जब वे पुस्तकालय में पढ़ाई करने से अध्ययन सामग्री याद हो जाती है। इसके विपरीत 65.5 प्रतिशत अर्थात 200 में से 131 छात्राओं का कहना है कि जब वे पुस्तकालय में पढ़ाई करती हैं तो उन्हें अध्ययन सामग्री याद नहीं होती। शोध छात्रा को अध्ययन से पता चलता है कि छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग तो करती हैं, लेकिन जैसा घर पर रहकर अध्ययन सामग्री याद कर लेती हैं, वैसा पुस्तकालय में रहकर याद नहीं कर पाती। विश्लेषण से इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है कि छात्राएं अभी घर से जैसा अपनत्व अथवा संतोष पुस्तकालय में प्राप्त नहीं कर पाती, इसलिए अधिकतर छात्राओं को घर पर याद होता है, पुस्तकालय में नहीं। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.13 घर के पास पुस्तकालय के संबंध में विचार :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के तेरहवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि यदि कोई पुस्तकालय आपके घर/गावं के पास हो तो डिग्री लेने के बाद नौकरी के लिए वहां अध्ययन करेंगी ? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
186	हां	93
14	नहीं	7
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

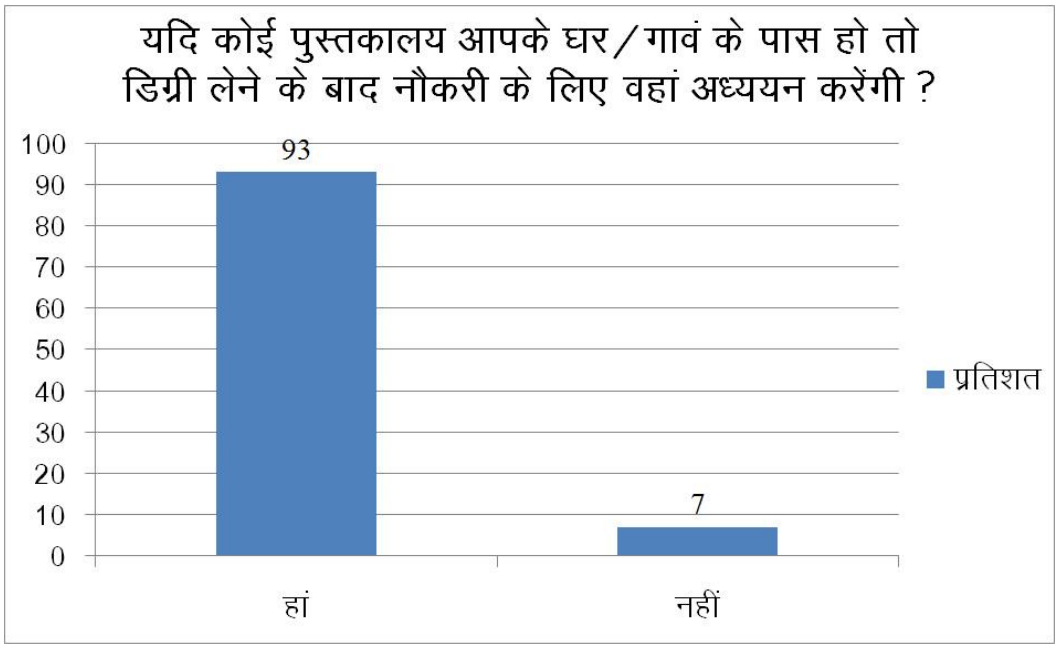

Figure 13 - घर के पास पुस्तकालय के संबंध में विचार

शोध छात्रा ने इस प्रश्न में पुस्तकालय के महत्व को जानने की कोशिश की। शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 186 अर्थात 93 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि यदि काई पुस्तकालय उनके घर/गांव के पास हो तो छात्राएं डिग्री लेने के बाद अपने कॅरियर को आगे बढ़ाने के लिए अथवा नौकरी के लिए उस पुस्तकालय में पढ़ने जरूर जाएंगी अथवा कह सकते हैं कि उस पुस्तकालय का उपयोग जरूर करेंगी। यह महत्वपूर्ण आंकड़े हैं, जो बहुत से निष्कर्ष हमारे सामने प्रस्तुत करता है। इन आंकड़ों से साफ स्पष्ट होता है कि ग्रामीण छात्राओं के मस्तिष्क में पुस्तकालय के प्रति जागरूकता भी है और जिज्ञासा भी। ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय के महत्व को समझती भी हैं। आंकड़ों के विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि पुस्तकालय का प्रभाव इन छात्राओं पर पड़ रहा है। दूसरी ओर 14 ग्रामीण छात्राएं अर्थात 7 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं ऐसी हैं जिनका मानना है कि वे डिग्री लेने के बाद यदि घर/गांव के पास पुस्तकालय हो तो वे नौकरी के लिए अध्ययन नहीं करेंगी। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.14 पुस्तकालय के लाभदायक होने पर विचार :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के चौदहवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल

200) से पूछा गया कि क्या आपको लगता है कि पुस्तकालय लाभदायक है ? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
200	हां	100
0	नहीं	0
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

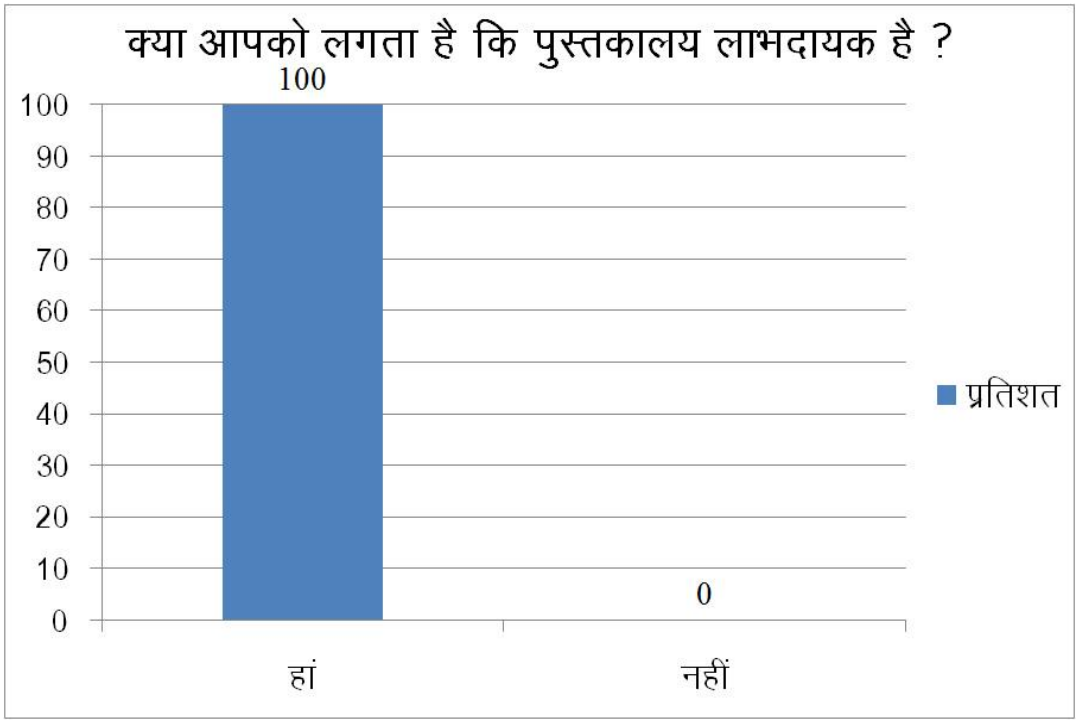

Figure 14 - पुस्तकालय के लाभदायक होने पर विचार

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से सभी 200 अर्थात 100 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं ने माना कि पुस्तकालय लाभदायक होता है। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि छात्राएं पुस्तकालय के महत्व को समझती हैं। छात्राओं में पुस्तकालय के प्रति जागरूकता है। वे मानती हैं कि महाविद्यालय के साथ पुस्तकालय की भी आवश्यकता है। कॅरियर में पुस्तकालय की अहम भूमिका होती

है। इस प्रश्न में किसी भी ग्रामीण छात्रा ने यह नहीं कहा कि पुस्तकालय लाभदायक नहीं है। अर्थात पुस्तकालय लाभदायक नहीं है, ऐसो कहने वाली छात्राओं का प्रतिशत शून्य है। इन आंकड़ों से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंच सकती है कि ग्रामीण छात्राओं पर पुस्तकालय का प्रभाव पढ़ रहा है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.15 ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय के प्रति प्रेरित करना :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के पंद्रहवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि जो छात्राएं पुस्तकालय नहीं जाती, उन्हें आप पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करती हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
184	हां	92
16	नहीं	8
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

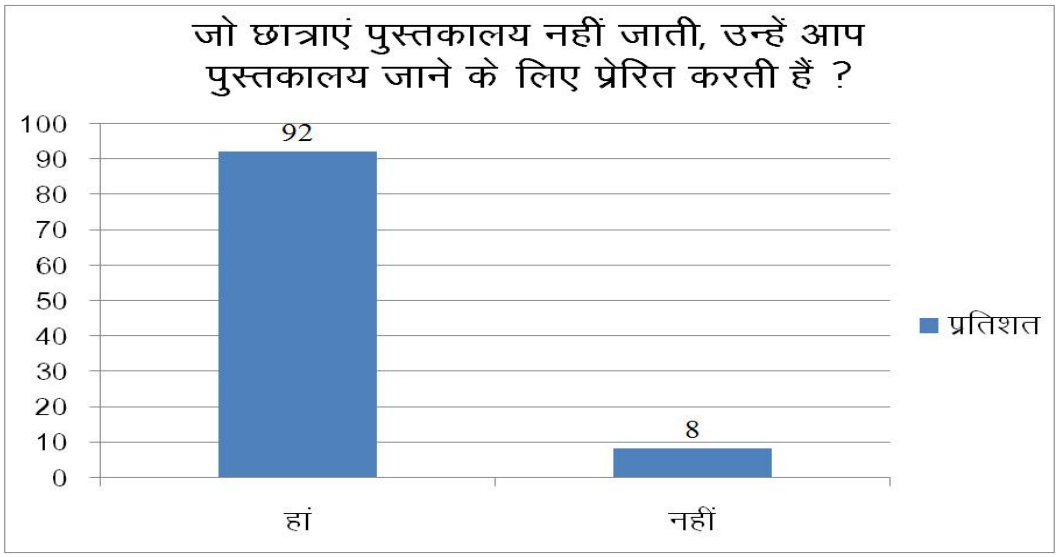

Figure 15 - ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय के प्रति प्रेरित करना

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 184 अर्थात 92 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं ने यह कहा कि जो छात्राएं पुस्तकालय नहीं जाती उन्हें पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करती हैं। ये वे छात्राएं हैं, उनसे संबंधित है या तो सहेली, जानकार हैं या जिनसे वे बातचीत करती हैं और जो पुस्तकालय नहीं जाती या उनका उपयोग नहीं करती। ऐसी छात्राएं या ग्रामीण परिवेश की हो सकती हैं या शहरी क्षेत्र में निवास करने वाली। इसके विपरीत 200 में से 16 अर्थात 8 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है जो छात्राएं पुस्तकालय नहीं जाती, उन्हें पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित नहीं करती। विश्लेषण से पता चलता है कि ऐसा इसलिए हो सकता कि जिन छात्राओं को स्वयं पुस्तकालय में अध्ययन करने में समस्या आती है, वे अन्य को भी पुस्तकालय जाने की सलाह या प्रेरित नहीं करती। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.16 महाविद्यालय या पुस्तकालय जाने का संसाधन :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के सालहवें प्रश्न या द्वितीय भाग के पहले प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि आप पुस्तकालय कैसे जाती हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
32	साइकिल से	16
104	ऑटो / बस से	52
49	पैदल	24.5
15	अन्य	7.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

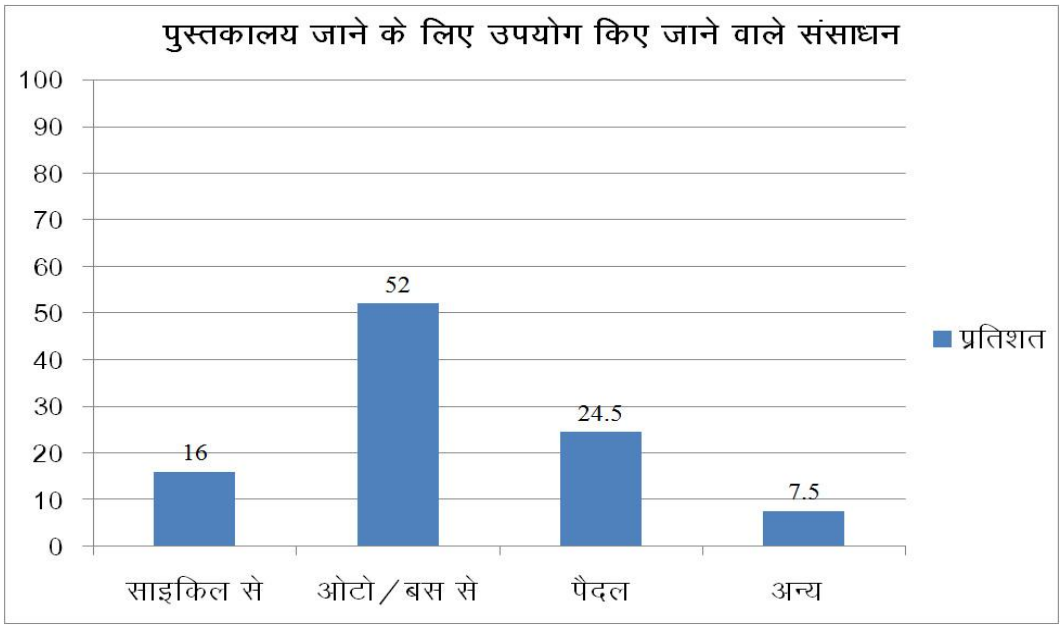

Figure 16 - महाविद्यालय या पुस्तकालय जाने का संसाधन

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 32 अर्थात 16 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय या महाविद्यालय साइकिल से जाती हैं। जबकि 200 में 104 अर्थात 52 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं ऑटो या बस के माध्यम से पुस्तकालय आती हैं। 49 छात्राओं अर्थात 24.5 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि वे पुस्तकालय या महाविद्यालय पैदल आती है। इसका अर्थ यह निकाला जा सकता है कि 24.5 प्रतिशत छात्राएं किसी प्रकार का संसाधन उपयोग नहीं करती और पैदल ही महाविद्यालय या पुस्तकालय आ जाती हैं। 200 में 15 अर्थात 7.5 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि वे अन्य संसाधन से पुस्तकालय तक पहुंचती हैं। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि पुस्तकालय पहुंचने के लिए सर्वाधिक छात्राएं ऑटो या बस का उपयोग करती हैं। दूसरे स्थान पर छात्राओं ने पैदल का विकल्प चुना। जबकि सबसे कम उपयोग 'अन्य' माध्यमों का किया जाता है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

'अन्य संसाधन' से आशय – यहां शोध छात्रा का अन्य संसाधन से आशय मोटर साईकिल (बाइक) से है , जो भाई या पिता या अन्य पारिवारिक सदस्य द्वारा चलाई जाती है।

4.5.17 पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के सत्रहवें प्रश्न या द्वितीय भाग के दूसरे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि आप पुस्तकालय में कितना समय व्यतीत करती हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
60	30 मिनट या उससे कम	30
70	1 घंटा लगभग	35
46	2 घंटे या अधिक	23
0	पुस्तकालय नहीं जाते	0
24	अन्य	12
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

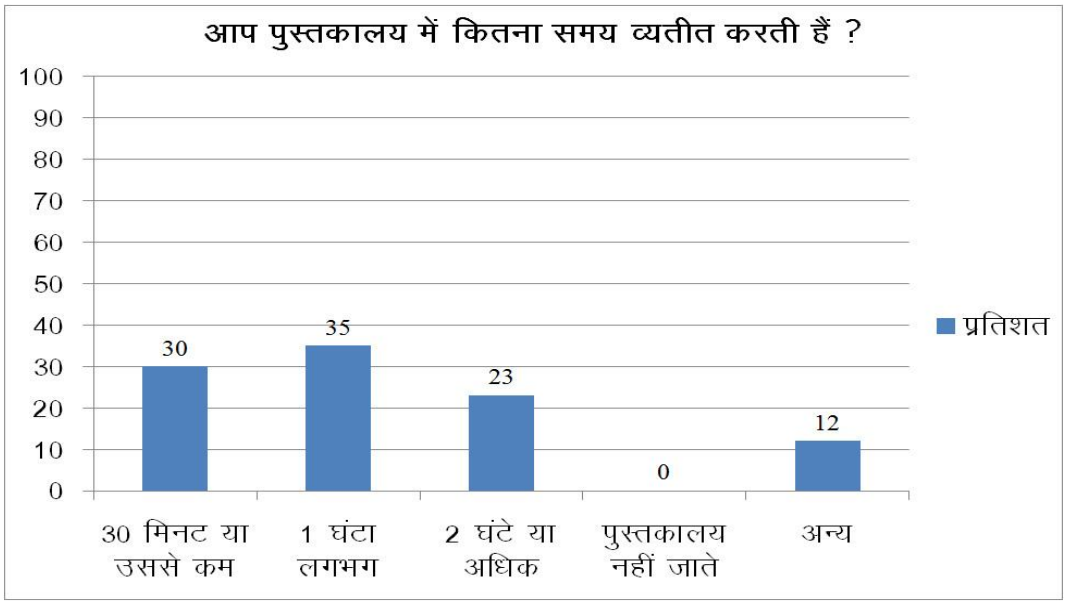

Figure 17 - पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 60 अर्थात 30 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि वे 30 मिनट या उससे कम समय के लिए पुस्तकालय का उपयोग करती हैं या ये कहें कि पुस्तकालय में समय व्यतीत करती हैं। इसके अलावा 200 में से 70 अर्थात 35 प्रतिशत छात्राएं ऐसी हैं, जो 1 घंटा के आस पास पुस्तकालय में समय व्यतीत करती हैं। जबकि 200 में से 46 छात्राएं अर्थात 23 प्रतिशत छात्राएं 2 घंटे या उससे अधिक समय तक पुस्तकालय में समय व्यतीत करती हैं। जबकि किसी भी छात्रा ने यह नहीं कहा कि वह पुस्तकालय नहीं जाती। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक छात्रा पुस्तकालय का उपयोग करती है। हालांकि 200 में मात्र 24 अर्थात 12 प्रतिशत छात्राएं ऐसी हैं जिनका मानना है कि वे पुस्तकालय जाती है और पुस्तक या पुस्तकें निर्गत करवा कर वापस आ जाती हैं। वहां बैठकर नहीं पढ़ती। इसका आशय यह हुआ कि वे पुस्तकालय का उपयोग तो कर रही हैं। परंतु अधिक समय व्यतीत नहीं करतीं। आंकड़ों का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि सर्वाधिक समय व्यतीत करने वाली मात्र 23 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं हैं। इनमें कुछ छात्राएं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम की हैं और विज्ञान संकाय की भी। सबसे कम पुस्तकालय में समय वे छात्राएं व्यतीत करती हैं, जो सिर्फ पुस्तकें निर्गत कराने या वापस करने जाती हैं। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.18 पुस्तकालय में पढ़ी जाने वाली पाठ्य सामग्री :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के अठारहवें प्रश्न या द्वितीय भाग के तीसरे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि आप पुस्तकालय में किस प्रकार की पाठ्य सामग्री पढ़ती हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
1	मनोरंजन से संबंधित	0.5
180	शैक्षिक पाठ्यक्रम से संबंधित	90
5	रोजगार से संबंधित	2.5
14	अन्य	7
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

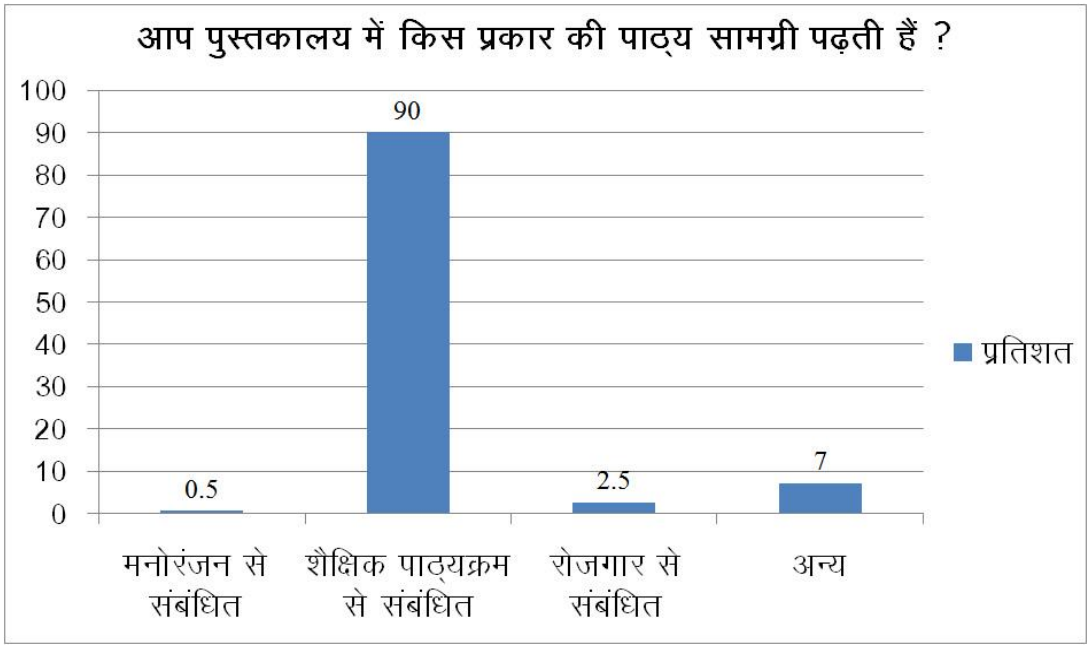

Figure 18 - पुस्तकालय में पढ़ी जाने वाली पाठ्य सामग्री

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से सिर्फ 1 छात्रा अर्थात 0.5 प्रतिशत ऐसी है जो मनोरंजन से संबंधित पाठन पुस्तकालय में करती है। जबकि दूसरी ओर 200 में 180 अर्थात 90 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं ऐसी हैं, जो पुस्तकालय में शैक्षिक पाठ्यक्रम से संबंधित अध्ययन करती हैं। इसमें पाठ्यक्रम संबंधी सूचनाओं को एकत्रित करना नोट्स बनाना और पुस्तकों को पढ़ना आदि शामिल है। दूसरी तरफ 200 में से 5 अर्थात 2.5 प्रतिशत छात्राएं ऐसी हैं जो पुस्तकालय में रोजगार से संबंधित अध्ययन करने जाती हैं। 200 में से 14 अर्थात 7 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं ऐसी हैं जो पुस्तकालय में अन्य सामग्री जैसे पत्र, पत्रिकाएं, उपन्यास, कहानी आदि शैक्षिक सामग्री पढ़ती हैं। आंकड़ों का विश्लेषण करें तों सर्वाधिक छात्राओं द्वारा पुस्तकालय में शैक्षिक पाठ्यक्रम संबंधी अध्ययन किया जाता है। सबसे कम मनोरंजन के लिए अध्ययन किया जाता है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

अन्य से आशय – यहां शोध छात्रा का 'अन्य' से आशय ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय में पत्र, पत्रिकाएं, उपन्यास, कहानी आदि को पढ़ने से है।

4.5.19 पुस्तकालय से मिलने वाली पाठ्य सामग्री की समयसीमा

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के उन्नीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के चौथे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि आपको पुस्तकालय से कितने दिन के लिये पाठ्य सामग्री मिलती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
46	1 सप्ताह से कम	23
92	1 सप्ताह के लिए	46.5
28	2 सप्ताह के लिए	14
22	1 महीना या उससे अधिक	11
11	अन्य	5.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

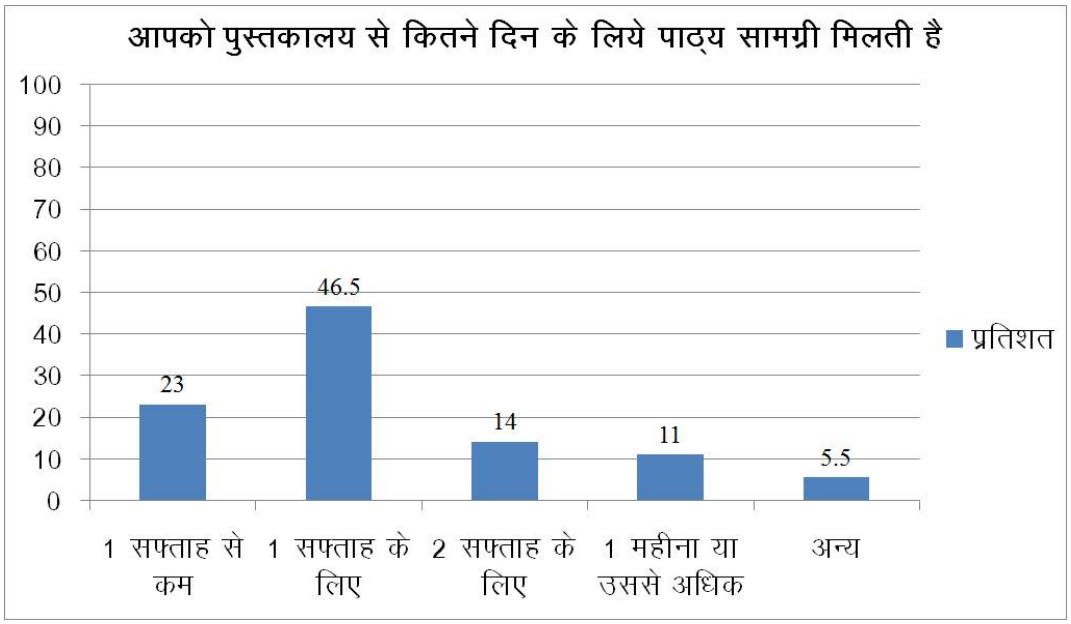

Figure 19 - पुस्तकालय से मिलने वाली पाठ्य सामग्री की समयसीमा

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 46 अर्थात 23 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि उन्हें पुस्तकालय से 1 सप्ताह से कम समय के लिए पाठ्य सामग्री मिलती है। दूसरी तरफ 200 में से 92 अर्थात 46.5 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि उन्हें पुस्तकालय से एक सप्ताह के लिए पाठ्य सामग्री मिलती है। जबकि 200 में से 28 अर्थात 14 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि उन्हें 2 सप्ताह के लिए पाठ्य सामग्री मिलती है। आंकड़ों में यह जानकारी भी मिलती है कि 200 में 22 ग्रामीण छात्राओं अर्थात 11 प्रतिशत का कहना है कि उन्हें एक महीना या उससे अधिक समय के लिए पाठ्य सामग्री मिलती है। जबकि 200 में से 11 छात्राओं अर्थात 5.5 प्रतिशत का कहना है कि उन्हें पूरे समय के लिए पाठ्य सामग्री मिलती है। अर्थात जब मुख्य परीक्षा होती है, तब वे पाठ्य सामग्री वापस करती हैं। कुछ पुस्तकालय के कुछ पाठ्यक्रमों में ऐसी व्यवस्था अपनाई गई है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

अन्य से आशय – शोध छात्रा का 'अन्य' से आशय ऐसी व्यवस्था से है जो किसी पुस्तकालय में किसी विशेष पाठ्यक्रम के लिए लम्बे समय के लिए पुस्तकों का वितरण किया जाता है और जब परीक्षा होती है तब पुस्तकें वापस ले ली जाती हैं।

4.5.20 पुस्तकालय से मिलने वाली पाठ्य सामग्री की संख्या :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के बीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के पांचवे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि आप पुस्तकालय से सप्ताह में कितनी पुस्तक/कें निर्गत करा सकते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
69	केवल एक पुस्तक	34.5
116	केवल दो पुस्तकें	58
0	तीन पुस्तकें	0
4	चार या उससे अधिक	2

11	अन्य	5.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

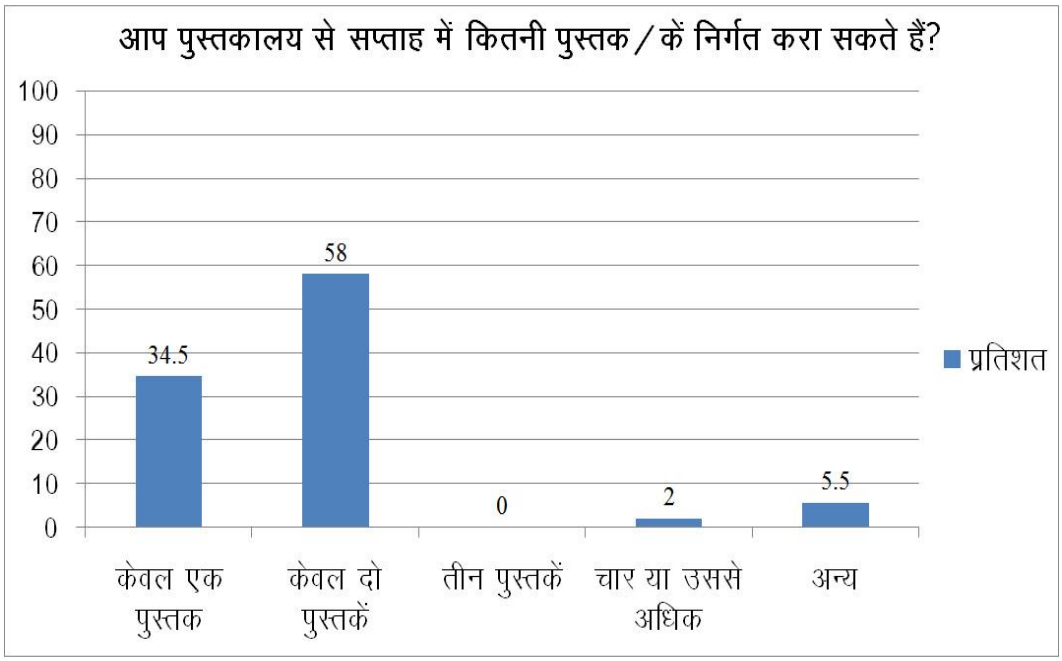

Figure 20 - पुस्तकालय से मिलने वाली पाठ्य सामग्री की संख्या

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 69 अर्थात 34.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि पुस्तकालय से सप्ताह में सिर्फ एक पुस्तक ही मिलती है। जबकि दूसरी ओर 200 में सं 115 अर्थात 57.5 ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि वे पुस्तकालय से सप्ताह में दो पुस्तकें निर्गत करा सकती हैं। इससे अधिक पुस्तकें उन्हें नहीं मिलेगी। इसके लिए छात्राओं के अगले सप्ताह तक के लिए प्रतीक्षा करनी होगी और जब निर्गत पुस्तकें वापस कर दी जाएंगी फिर अन्य दो पुस्तकें मिल सकती है। आंकड़ों से पता चलता है। पुस्तकालय से तीन पुस्तकें किसी को नहीं मिलती। इसका अर्थ यह हुआ कि किसी भी पुस्तकालय में तीन पुस्तकों के मिलने का नियम नहीं है। आंकड़ों से पता चलता है कि 4 छात्राएं अर्थात मात्र दो प्रतिशत ऐसी छात्राएं हैं जो कि मानती हैं कि उन्हें पुस्तकालय से 4 से अधिक पुस्तकें निर्गत हो जाती है। जब इन छात्राओं शोध छात्रा बातचीत की तो पता चला कि किसी विशेष पाठ्यक्रम या विषय के

लिए 4 पुस्तकें मिल जाती हैं। इसके अलावा 200 में 11 अर्थात 5.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं ने अन्य का विकल्प चुना है। शोध छात्रा ने इस विकल्प के चयन करने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि कुछ पुस्तकें जो छात्राएं चाहती हैं, वे पुस्तकालय में उपलब्ध ही नहीं होती, इसलिए उन्हें मिलती ही नहीं। महाविद्यालय में पुस्तकों की उपलब्धता कम है। इसलिए छात्राओं ने अन्य का विकल्प चुना, जिसमें पुस्तकें निर्गत होने का विकल्प नही है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

अन्य से आशय – शोध छात्रा का 'अन्य' से आशय पुस्तकालय में पुस्तकें उपलब्ध न होने के कारण निर्गत न हो पाने से है।

4.5.21 स्वाध्याय के लिए पसंदीदा स्थान :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के इक्कीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के छठवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि स्वाध्याय के लिए आपको कहां पढ़ना अधिक पसंद है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
88	पुस्तकालय में	44
101	घर में	50.5
8	बगीचे में	4
3	अन्य किसी स्थान पर	1.5
200	कुल	100

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 88 अर्थात 44 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि स्वाध्याय के लिए वे पुस्तकालय में पढ़ना पसंद करती हैं। जबकि 200 में से 101 अर्थात 50.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि उन्हें स्वाध्याय के लिए घर पर पढ़ना पसंद है। जबकि 200 में 8 अर्थात 4 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि उन्हें बगीचे में पढ़ना पसंद है।

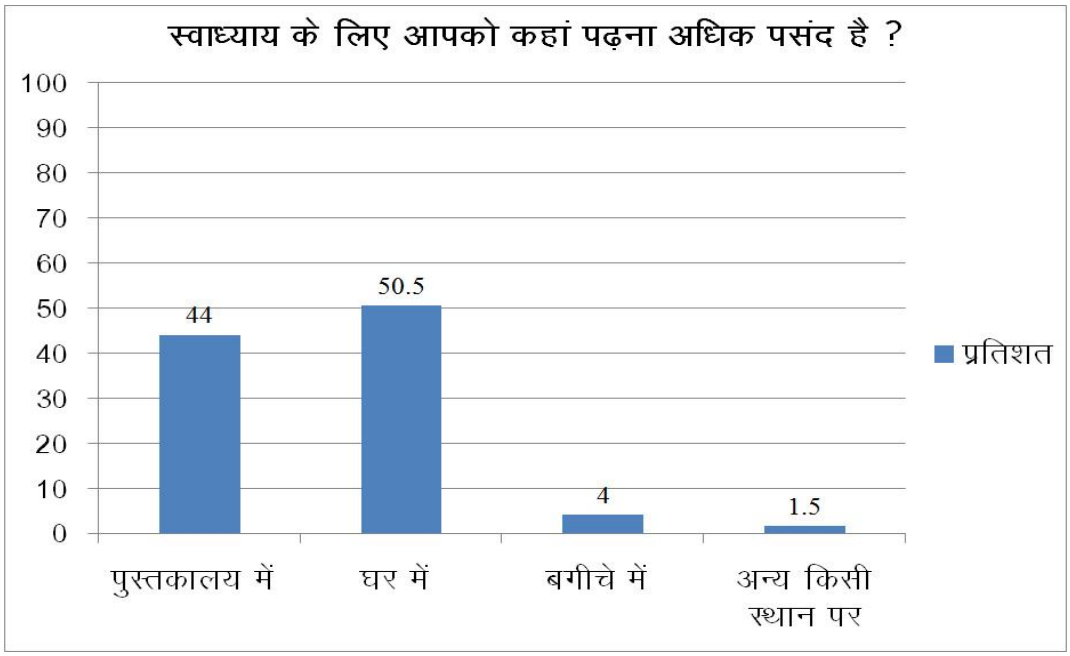

Figure 21 - स्वाध्याय के लिए पसंदीदा स्थान

अन्य स्थानों पर 1.5 प्रतिशत अर्थात 3 छात्राओं को पढ़ना पसंद है। आंकड़ों के अनुसार सर्वाधिक पसंद किया जाने वाला स्थान घर हैं, जहां छात्राएं स्वाध्याय करती हैं। दूसरे स्थान पर पुस्तकालय को पसंद किया जाता है। हालांकि सबसे कम पसंद किया जाने वाला स्थान 'अन्य' है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

अन्य से आशय – शोध छात्रा का 'अन्य' से आशय ऐसा कोई भी स्थान है जो एकांत हो और पढ़ने के अनुकूल हो।

4.5.22 छात्राओं द्वारा किसी विशेष पुस्तक के संदर्भ में निर्णय :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के बाइसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के सातवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि यदि कोई विशेष पुस्तक लेनी हो तो आप क्या करते हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
84	पुस्तकालयाध्यक्ष को बताते हैं	42
29	अपने शिक्षक को बताते हैं	14.5
5	अपने विभागाध्यक्ष को बताते हैं	2.5
82	बताते नहीं, स्वयं बाजार से खरीद लेते हैं	41
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

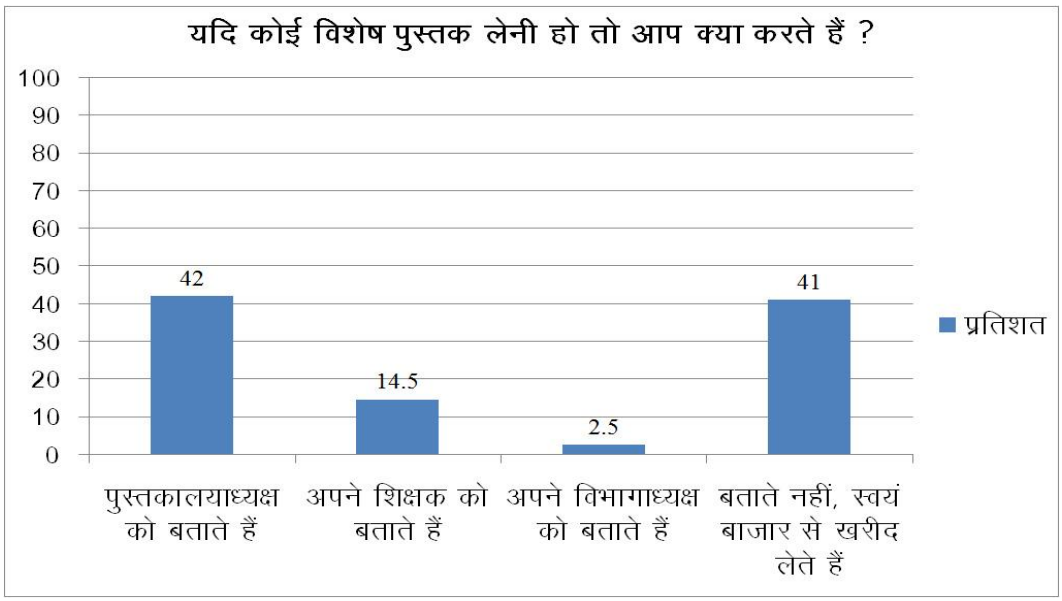

Figure 22 - छात्राओं द्वारा किसी विशेष पुस्तक के संदर्भ में निर्णय

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 84 अर्थात 42 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि यदि कोई विशेष पुस्तक लेनी हो तो वे पुस्तकालयाध्यक्ष को बताती हैं। जबकि 200 में से 29 अर्थात 14.5 प्रतिशत छात्राओं का कहना है कि वे विशेष पुस्तक लेने के लिए अपने शिक्षक को बताती हैं। 2.5 प्रतिशत अर्थात 5 छात्राओं का कहना है कि जब कोई विशेष पुस्तक लेनी होती है तो वे अपने विभागाध्यक्ष को बताती हैं। दूसरी ओर 200 में से 82 अर्थात 41 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि जब कोई विशेष पुस्तक लेनी होती है तो वे किसी को कुछ नहीं बताती,

न शिक्षक को और न ही पुस्तकालयाध्यक्ष को और न ही विभागाध्यक्ष को, बल्कि स्वयं बाजार से खरीद लेती हैं। ये वे छात्राएं हैं जिन्हें अपने विषय से संबंधित वह विशेष पुस्तक नहीं मिल पाती तो पुस्तकालय में आने के इंतजार में न रहकर बाजार से ले लेती हैं। ऐसी छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग तो करती हैं, लेकिन सभी सुविधाएं न मिल पाने के कारण पुस्तकों के संबंध में स्वयं निर्णय ले लेती हैं और बाजार से खरीद लेती हैं। शोध छात्रा ने बातचीत में पाया कि बाजार से खरीदी जाने वाली पुस्तक के बारे में वे अपने शिक्षकों एवं सहपाठियों से चर्चा जरूर करती हैं, ताकि अन्य साथी भी पुस्तक का लाभ ले सकें। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह भी पता चलता है कि अभी भी छात्राएं पूरी तरह से महाविद्यालयों के कर्मचारियों से बेझिझक नहीं मिल पाती या अपनी बात नहीं कह पाती। यही कारण है कि 41 प्रतिशत ग्रामीण छात्राएं स्वयं बाजार जाकर संबंधित पुस्तक खरीद लेती हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष को भी सूचना देने वाली छात्राओं का प्रतिशत 50 से कम अर्थात मात्र 42 प्रतिशत है। शोध छात्रा आंकड़ों के विश्लेषण पर इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि छात्राएं पुस्तकालय की आवश्यकता के लिए सजग हैं और इसीलिए पुस्ताकालयाध्यक्ष को सूचना देती हैं ताकि यदि कोई पुस्तक विशेष है तो सभी को पढ़ने के लिए पुस्तकालय में हो और सबको लाभ मिल सके। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.23 पुस्तकालय जाने के लिए मिलने वाली प्रेरणा :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के तैईसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के आठवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि पुस्तकालय जाने के लिए आपको कौन अधिक प्रेरित करते है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
14	पुस्तकालयाध्यक्ष	7
121	आपके विषय के शिक्षक	60.5
51	माता–पिता या रिश्तेदार	25.5
14	अन्य	7
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

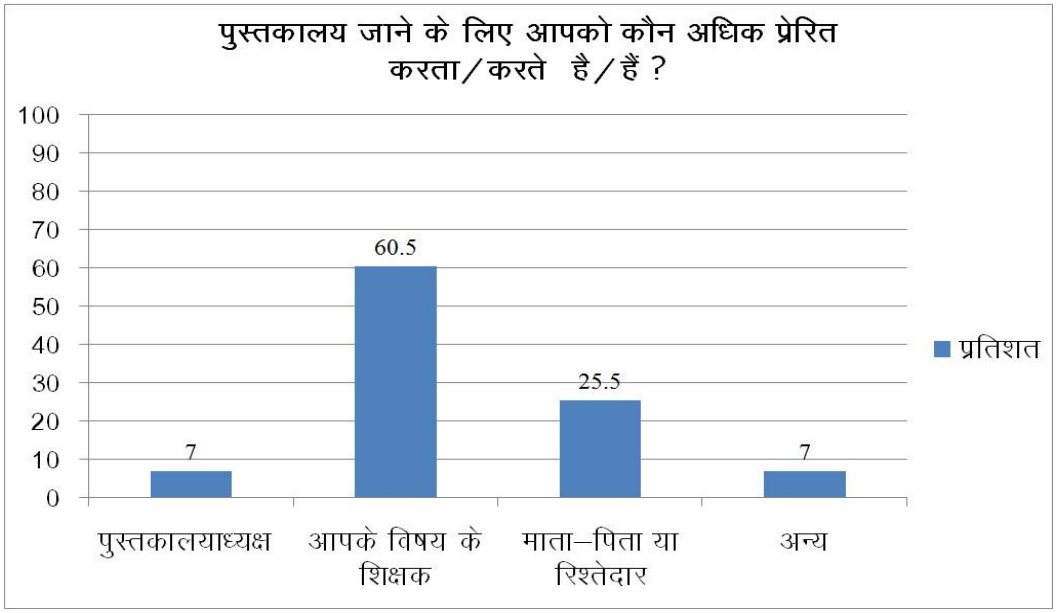

Figure 23 - पुस्तकालय जाने के लिए मिलने वाली प्रेरणा

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 14 अर्थात 7 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि उन्हें पुस्तकालयाध्यक्ष प्रेरित करते हैं कि छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग करें। जबकि दूसरी ओर 60.5 प्रतिशत अर्थात 121 ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि विषय के शिक्षक पुस्तकालय जाने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं। यह महत्वर्पूण आंकड़ा है कि शिक्षक छात्राओं को पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करते हैं। दूसरी ओर कुछ छात्राओं ने यह भी माना कि माता पिता या रिश्तेदार पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करते हैं, ऐसी छात्राओं का प्रतिशत 25.5 अर्थात 200 में से 51 हैं। इसके विपरीत 7 प्रतिशत अर्थात 14 छात्राओं का मानना है कि उन्हें अन्य जैसे, सहपाठी, सहेली आदि प्रेरित करते हैं पुस्तकालय जाने के लिए। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पुस्तकालय जाने के लिए ग्रामीण छात्राओं को सर्वाधिक प्रेरणा उनके शिक्षकों के द्वारा दी जाती है। दूसरी स्थान पर माता–पिता या रिश्तेदार हैं जो छात्राओं को पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करते हैं। हालांकि सबसे कम प्रेरणा पुस्तकालय अध्यक्ष एवं अन्य जैसे मित्र, सहपाठी आदि से मिलती है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

अन्य से आशय – शोध छात्रा का यहां 'अन्य' से आशय सहपाठी छात्रा, सहेली या वरिष्ठ पाठ्यक्रम छात्रा से है।

4.5.24 पुस्तकालय जाने से सर्वाधिक मिलने वाला लाभ :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के चौबीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के नौवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि पुस्तकालय जाने से सबसे अधिक क्या लाभ मिला? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
39	पाठ्यक्रम सामग्री आसानी से मिलने लगी	19.5
88	पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक सामग्री जैसे पत्रिकाएं, उपन्यास, कॅरियर पुस्तकें आदि पढ़ने की भी इच्छा जागृत हुई	44
38	पहले के मुकाबले अब अधिक पढ़ने का मन करता है	19
35	कोई लाभ नहीं मिला	17.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

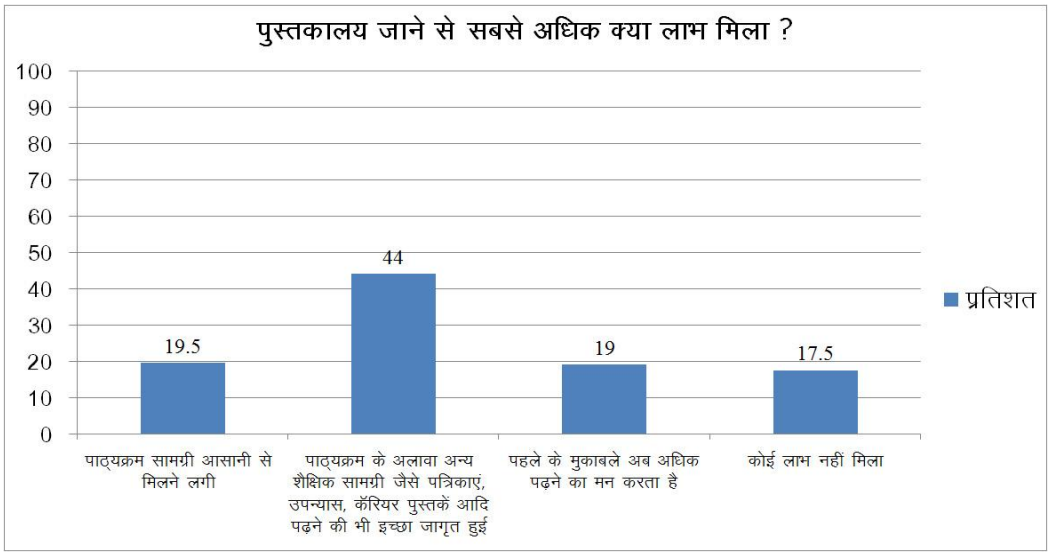

Figure 24 - पुस्तकालय जाने से सर्वाधिक मिलने वाला लाभ

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 39 अर्थात 19.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि पुस्तकालय जाने से उन्हें लाभ यह मिला कि पाठ्यक्रम संबंधी सामग्री आसानी से मिलने लगी। जबकि 200 में से 88 अर्थात 44 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि पुस्तकालय जाने से उन्हें यह लाभ मिला कि वे पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक जैसे पत्रिकाएं, उपन्यास कॅरियर पुस्तकें आदि पढ़ने की भी इच्छा जागृत हुई। अर्थात छात्राएं वे भी पढ़ने लगी जो उनके पाठ्यक्रम में नहीं है। यह एक महत्वपूर्ण विश्लेषण है। दूसरी ओर 200 में से 38 अर्थात 19 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि पुस्तकालय जाने से यह लाभ हुआ कि पहले जितना मन पढ़ने का करता था, पहले के मुकाबले अब अधिक पढ़ने का मन करता है। हालांकि 35 ग्रामीण छात्राओं अर्थात 17.5 प्रतिशत का कहना यह भी है कि उन्हें पुस्तकालय जाने से कोई लाभ नहीं मिला। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पुस्तकालय जाने का सर्वाधिक लाभ यह हुआ कि छात्राओं को पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक सामग्री भी पढ़ने की इच्छा हुई। दूसरे स्थान पर 19.5 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि पाठ्यक्रम सामग्री मिलने लगी। हालांकि सबसे कम प्रतिशत 17.5 प्रतिशत है, जिसमें छात्राएं मानती हैं कि कोई लाभ नहीं हुआ। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.5.25 पुस्तकालय में पसंद की जाने वाली व्यवस्था :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के पच्चीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के अंतिम दसवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि आपके महाविद्यालय के पुस्तकालय में आपको क्या पसंद है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
93	पुस्तकों की उपलब्धता, संख्या और उनका रख–रखाव	46.5
56	बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि	28

14	पुस्तकालय के कर्मचारियों का व्यवहार	7
37	कुछ भी पसंद नहीं	18.5
200	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

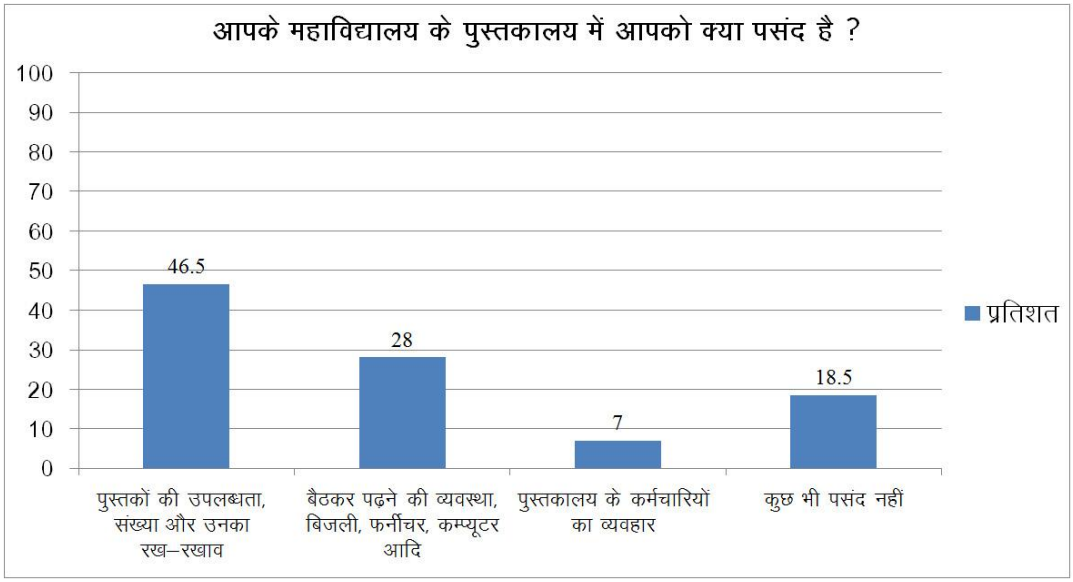

Figure 25 - पुस्तकालय में पसंद की जाने वाली व्यवस्था

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 200 ग्रामीण छात्राओं में से 93 अर्थात 46.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं ने कहा कि उनके महाविद्यालय के पुस्तकालय में उन्हें पुस्तकों की उपलब्धता, पुस्तकों की संख्या और उनका रख–रखाव सबसे अधिक पसंद है। दूसरी ओर 200 में से 56 अर्थात 28 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि उन्हें अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि सबसे अधिक पसंद है। 200 में से 14 अर्थात 7 प्रतिशत छात्राओं ने कहा कि उन्हें अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकालय के कर्मचारियों का व्यवहार पसंद है। जबकि 200 में 37 अर्थात 18.5 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि उन्हें अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में कुछ भी पसंद नहीं है। शोध छात्रा द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चला कि सर्वाधिक (46.5 प्रतिशत) ग्रामीण छात्राएं अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों की उलब्धता, पुस्तकों की संख्या और रख–रखाव

को पसंद करती हैं। दूसरे स्थान पर (28 प्रतिशत) ग्रामीण छात्राएं अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि को पसंद करती है। सबसे कम (मात्र 7 प्रतिशत) ग्रामीण छात्राओं द्वारा कर्मचारियों का व्यवहार पसंद किया जाता है। शोध छात्रा प्राप्त आंकड़ों में 5 प्रतिशत का परिवर्तन स्वीकार करती है।

4.6 ग्रामीण स्नातकोत्तर एवं स्नातक छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का पृथक चित्रमय प्रदर्शन एवं विश्लेषण :–

शोध छात्रा ने अपने अध्ययन में कुल आंकड़ों का विश्लेषण करने साथ ही स्नातकोत्तर एवं स्नातक ग्रामीण छात्राओं का पृथक रूप से भी विश्लेषण किया है। साथ ही आंकड़ों को चित्रमय प्रदर्शन भी किया है। शोध छात्रा ने आंकड़ों का संकलन करते समय पाया कि स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं के बीच वैचारिक एवं व्यवहारिक अंतर है। यह अंतर पाठ्यक्रम के अंतर के कारण भी हो सकता है। क्योंकि स्नातकोत्तर की छात्राएं स्नातक कर चुकी हैं, जबकि स्नातक की छात्राएं अभी स्नातकोत्तर स्तर पर नहीं पहुंची। ऐसे में वैचारिक रूप से अंतर स्पष्ट होता है। इसी तर्क को ध्यान में रखते हुए शोध छात्रा ने स्नातकोत्तर एवं स्नातक की छात्राओं से प्राप्त आंकड़ों का पृथक विश्लेषण किया है, ताकि अधिक से अधिक जानकारी मिल सके।

4.7 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन एवं विश्लेषण :–

शोध छात्रा ने कुल प्रश्नावली के 25 प्रश्नों में 10 प्रश्नों का विश्लेषण किया है जो, प्रत्यक्ष रूप से स्नातकोत्तर ग्रमीण छात्राओं को प्रभावित करते हैं। साथ ही इन 10 प्रश्नों का विश्लेषण करने से विशेषतः ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हुई। ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन एवं विश्लेषण इस प्रकार है–

4.7.1 घर में अध्ययन करने का प्रभाव :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के ग्याहरवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि क्या घर पर पढ़ाई करने से अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
79	हां	79
21	नहीं	21
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

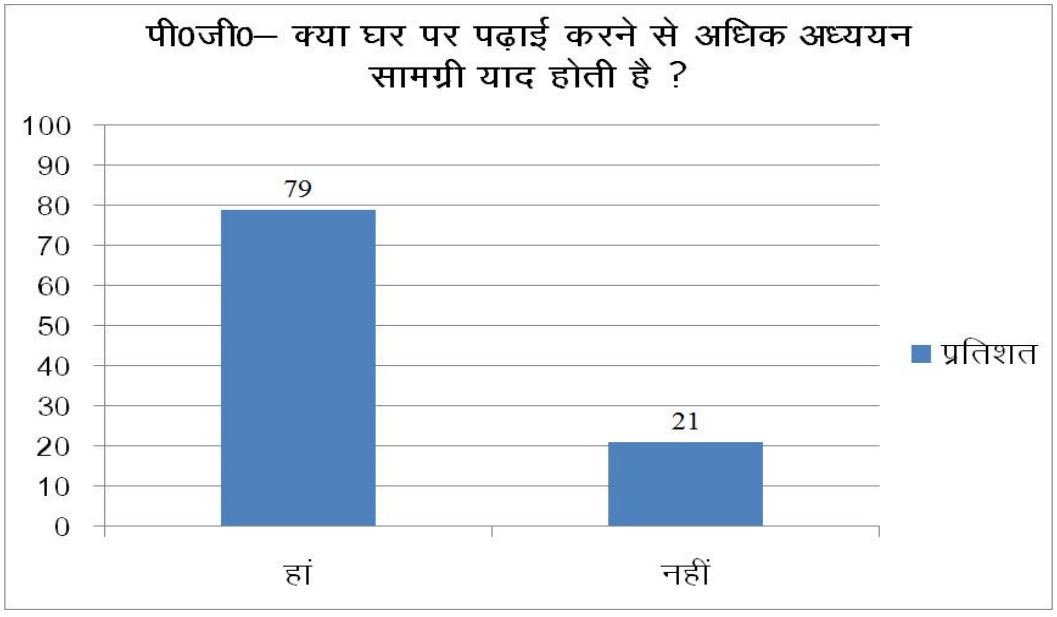

Figure 26 - घर में अध्ययन करने का प्रभाव

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं में 79 छात्राएं ऐसी हैं जो यह मानती हैं कि जब वे अपने घर में पढ़ाई करती हैं तो उन्हें अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है। विश्लेषण से पता चलता है कि स्नातकोत्तर छात्राएं ग्रामीण परिवेश की हैं। उनका अधिक समय घर के अंदर ही व्यतीत होती है, ऐसे

में उनका घर के प्रति अधिक लगाव होता है। ऐसे में कहा जा सकता है कि स्नातकोत्तर छात्राओं को घर पर अध्ययन करने से अधिक याद होता है। इसके विपरीत 21 स्नातकोत्तर छात्राओं अर्थात 21 प्रतिशत का मानना है कि घर पर अध्ययन करने से उन्हें याद नहीं होता। विश्लेषण में पता चलता है कि जिन स्नातकोत्तर छात्राओं को घर के कामों की वजह से अध्ययन में परेशानी होती है, उन छात्राओं को याद घर पर याद नहीं होता।

4.7.2 पुस्तकालय में अध्ययन करने का प्रभाव :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के बारहवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि क्या पुस्तकालय मे पढ़ाई करने से अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
23	हां	23
77	नहीं	77
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

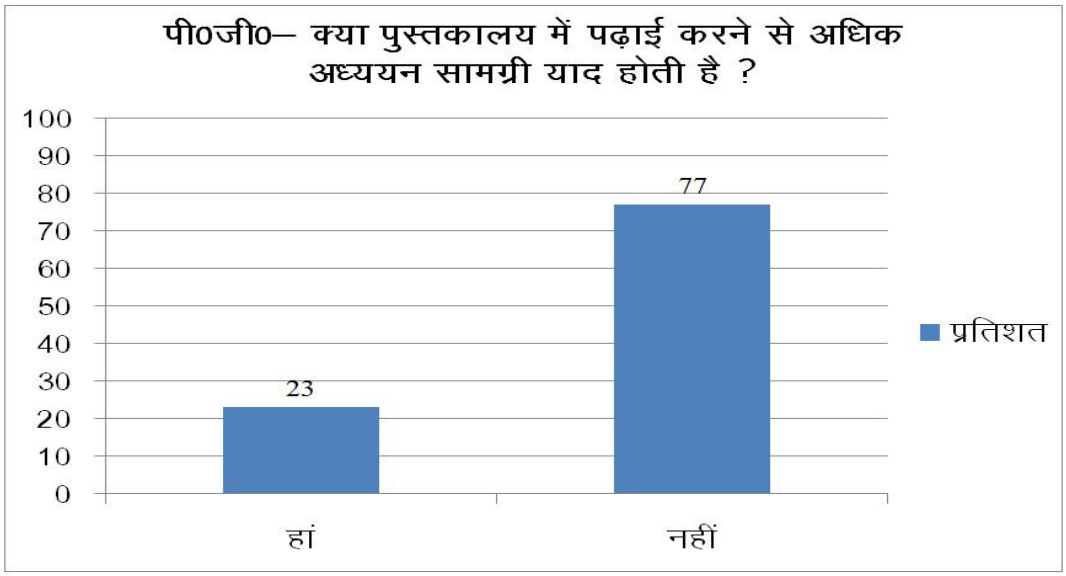

Figure 27 - पुस्तकालय में अध्ययन करने का प्रभाव

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं में से 23 अर्थात 23 प्रतिशत छात्राओं ने कहा कि जब वे पुस्तकालय में पढ़ाई करने से अध्ययन सामग्री याद हो जाती है। इसके विपरीत 77 प्रतिशत अर्थात 100 में से 77 स्नातकोत्तर छात्राओं का कहना है कि जब वे पुस्तकालय में पढ़ाई करती हैं तो उन्हें अध्ययन सामग्री याद नहीं होती। शोध छात्रा को अध्ययन से पता चलता है कि स्नातकोत्तर छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग तो करती हैं, लेकिन जैसा घर पर रहकर अध्ययन सामग्री याद कर लेती हैं, वैसा पुस्तकालय में रहकर याद नहीं कर पाती।

4.7.3 घर के पास पुस्तकालय के संबंध में विचार :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के तेरहवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि यदि कोई पुस्तकालय आपके घर/गावं के पास हो तो डिग्री लेने के बाद नौकरी के लिए वहां अध्ययन करेंगी ? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
94	हां	94
6	नहीं	6
100	कुल	100

शोध छात्रा ने इस प्रश्न में पुस्तकालय के महत्व को जानने की कोशिश की। शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं में से 94 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि यदि काई पुस्तकालय उनके घर/गांव के पास हो तो छात्राएं डिग्री लेने के बाद अपने कॅरियर को आगे बढ़ाने के लिए अथवा नौकरी के लिए उस पुस्तकालय में पढ़ने जरूर जाएंगी अथवा कह सकते हैं कि उस पुस्तकालय का उपयोग जरूर करेंगी। स्नातकोत्तर छात्राओं में ज्ञान के प्रति आकर्षण विकास की शैली को दर्शाता है।

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

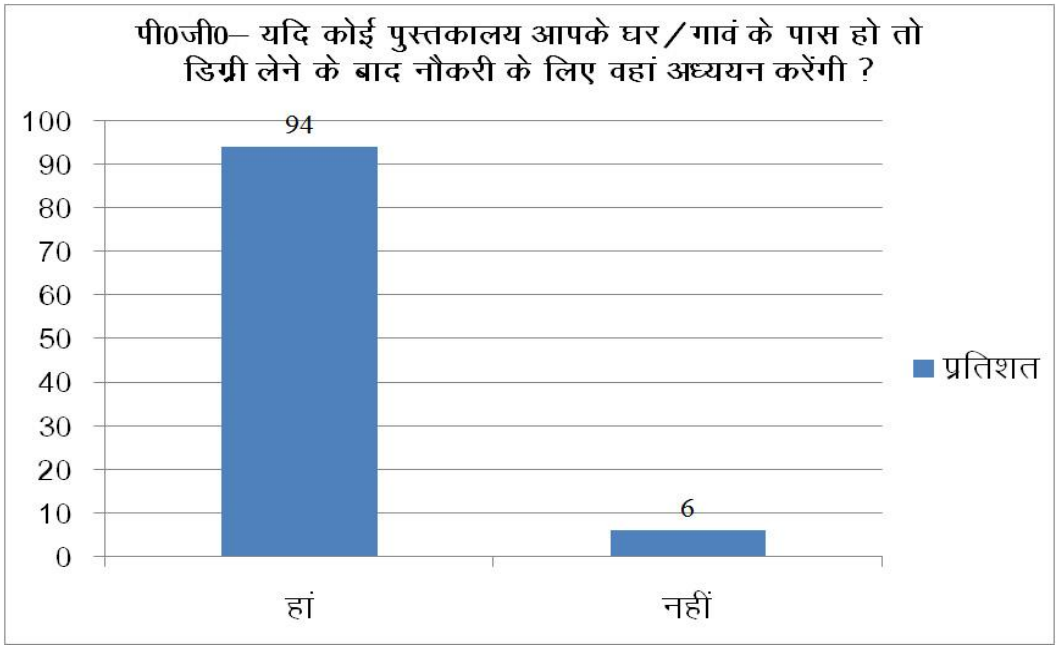

Figure 28- घर के पास पुस्तकालय के संबंध में विचार

ग्रामीण परिवेश में स्नातकोत्तर पास कर लेने के बाद अपने कॅरियर को आगे बढ़ाने की कोशिश यह बताता है कि ग्रामीण परिवेश के बावजूद उनके अंदर ज्ञान शहरी छात्राओं से कम प्रेरणा नहीं हैं। आंकड़ों के विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि पुस्तकालय का प्रभाव इन स्नातकोत्तर छात्राओं पर पड़ रहा है। दूसरी ओर 6 छात्राएं ऐसी हैं जिनका मानना है कि वे डिग्री लेने के बाद यदि घर/गांव के पास पुस्तकालय हो तो वे नौकरी के लिए अध्ययन नहीं करेंगी।

4.7.4 पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के सत्रहवें प्रश्न या द्वितीय भाग के दूसरे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि आप पुस्तकालय में कितना समय व्यतीत करती हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
33	30 मिनट या उससे कम	33

33	1 घंटा लगभग	33
21	2 घंटे या अधिक	21
0	पुस्तकालय नहीं जाते	0
13	अन्य	13
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

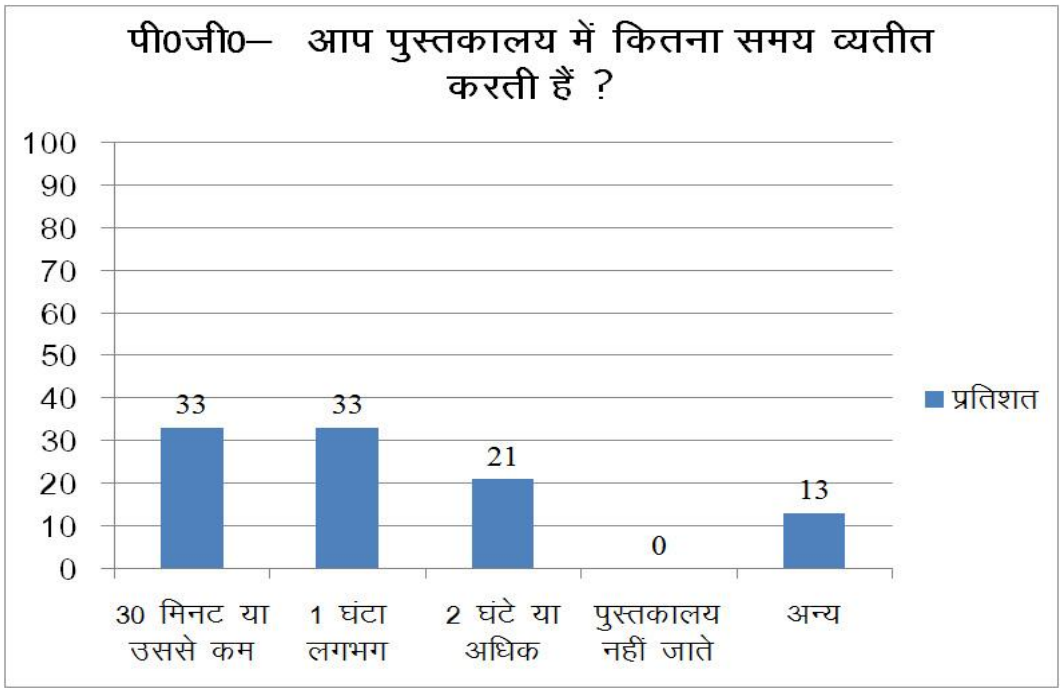

Figure 29 - पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं में से 33 अर्थात 33 प्रतिशत ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं का मानना है कि वे 30 मिनट या उससे कम समय के लिए पुस्तकालय का उपयोग करती हैं या ये कहें कि पुस्तकालय में समय व्यतीत करती हैं। इसके अलावा 100 में से 33 स्नातकोत्तर छात्राएं ऐसी हैं, जो 1 घंटा के आस पास पुस्तकालय में समय व्यतीत करती हैं। जबकि 21 स्नातकोत्तर छात्राएं 2 घंटे या उससे अधिक समय तक पुस्तकालय में समय व्यतीत करती हैं। जबकि किसी भी छात्रा ने यह नहीं कहा कि वह पुस्तकालय नहीं जाती। इसका अर्थ

यह हुआ कि प्रत्येक छात्रा पुस्तकालय का उपयोग करती है। हालांकि 100 में मात्र 13 स्नातकोत्तर छात्राएं ऐसी हैं जिनका मानना है कि वे पुस्तकालय जाती है और पुस्तक या पुस्तकें निर्गत करवा कर वापस आ जाती हैं। आंकड़ों का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि सर्वाधिक समय व्यतीत करने वाली मात्र 21 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राएं हैं। इनमें अधिकतर विज्ञान संकाय की भी।

4.7.5 पुस्तकालय में पढ़ी जाने वाली पाठ्य सामग्री :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के अठारहवें प्रश्न या द्वितीय भाग के तीसरे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि आप पुस्तकालय में किस प्रकार की पाठ्य सामग्री पढ़ती हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
1	मनोरंजन से संबंधित	1
86	शैक्षिक पाठ्यक्रम से संबंधित	86
4	रोजगार से संबंधित	4
9	अन्य	9
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

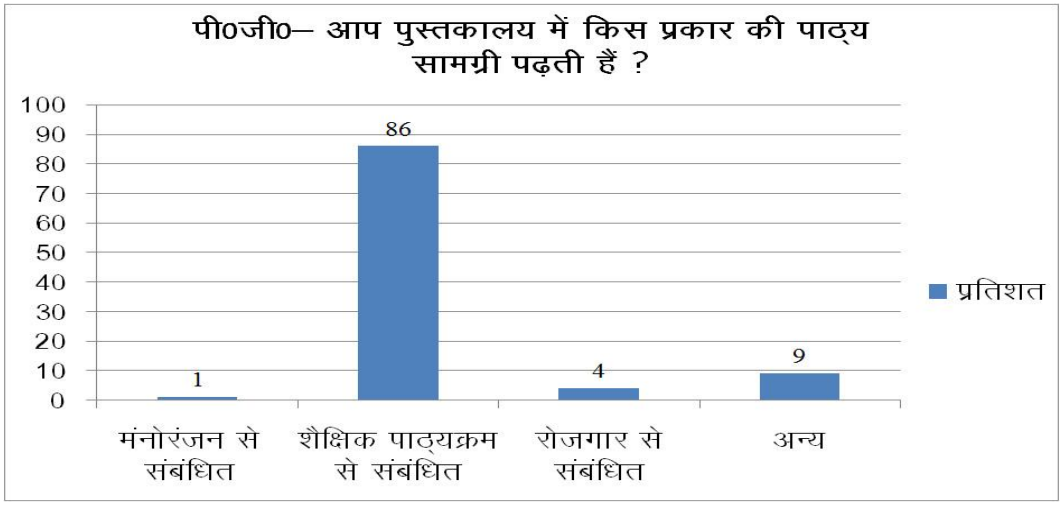

Figure 30 - पुस्तकालय में पढ़ी जाने वाली पाठ्य सामग्री

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं में से सिर्फ 1 छात्रा अर्थात 1 प्रतिशत ऐसी है जो मनोरंजन से संबंधित पाठन पुस्तकालय में करती है। जबकि दूसरी ओर 100 में 86 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राएं ऐसी हैं, जो पुस्तकालय में शैक्षिक पाठ्यक्रम से संबंधित अध्ययन करती हैं। स्नातकोत्तर छात्राएं पाठ्यक्रम संबंधी नोट्स बनाती हैं और साथ ही पुस्तकों को पढ़ना आदि शामिल है। दूसरी तरफ 4 स्नातकोत्तर छात्राएं ऐसी हैं जो पुस्तकालय में रोजगार से संबंधित अध्ययन करने जाती हैं। 9 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राएं ऐसी हैं जो पुस्तकालय में अन्य सामग्री जैसे पत्र, पत्रिकाएं, उपन्यास, कहानी आदि शैक्षिक सामग्री पढ़ती हैं। आंकड़ों का विश्लेषण करें तों सर्वाधिक स्नातकोत्तर छात्राओं द्वारा पुस्तकालय में शैक्षिक पाठ्यक्रम संबंधी अध्ययन किया जाता है।

4.7.6 स्वाध्याय के लिए पसंदीदा स्थान :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के इक्कीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के छठवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि स्वाध्याय के लिए आपको कहां पढ़ना अधिक पसंद है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
36	पुस्तकालय में	36
63	घर में	63
0	बगीचे में	0
1	अन्य किसी स्थान पर	1
100	कुल	100

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं में से 36 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं का कहना है कि स्वाध्याय के लिए वे पुस्तकालय में पढ़ना पसंद करती हैं।

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

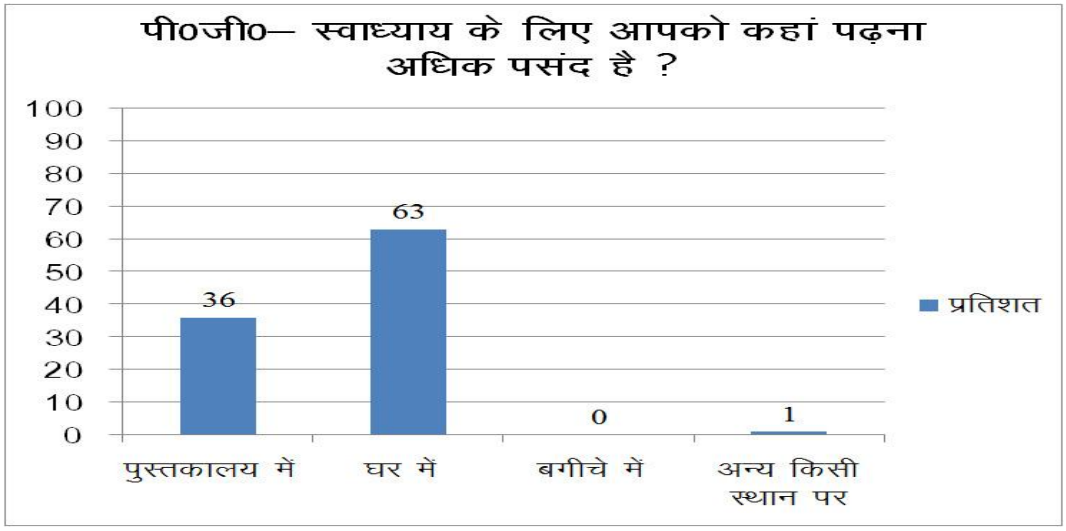

Figure 31- स्वाध्याय के लिए पसंदीदा स्थान

63 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि उन्हें स्वाध्याय के लिए घर पर पढ़ना पसंद है। कोई भी स्नातकोत्तर छात्रा को बगीचे में पढ़ना पसंद नहीं। अन्य स्थानों पर 1 छात्रा को पढ़ना पसंद है। आंकड़ों के अनुसार सर्वाधिक पसंद किया जाने वाला स्थान घर हैं, जहां स्नातकोत्तर छात्राएं स्वाध्याय करती हैं।

4.7.7 छात्राओं द्वारा किसी विशेष पुस्तक के संदर्भ में निर्णय :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के बाइसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के सातवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि यदि कोई विशेष पुस्तक लेनी हो तो आप क्या करते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
28	पुस्तकालयाध्यक्ष को बताते हैं	28
19	अपने शिक्षक को बताते हैं	19
1	अपने विभागाध्यक्ष को बताते हैं	1
52	बताते नहीं, स्वयं बाजार से खरीद लेते हैं	52
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

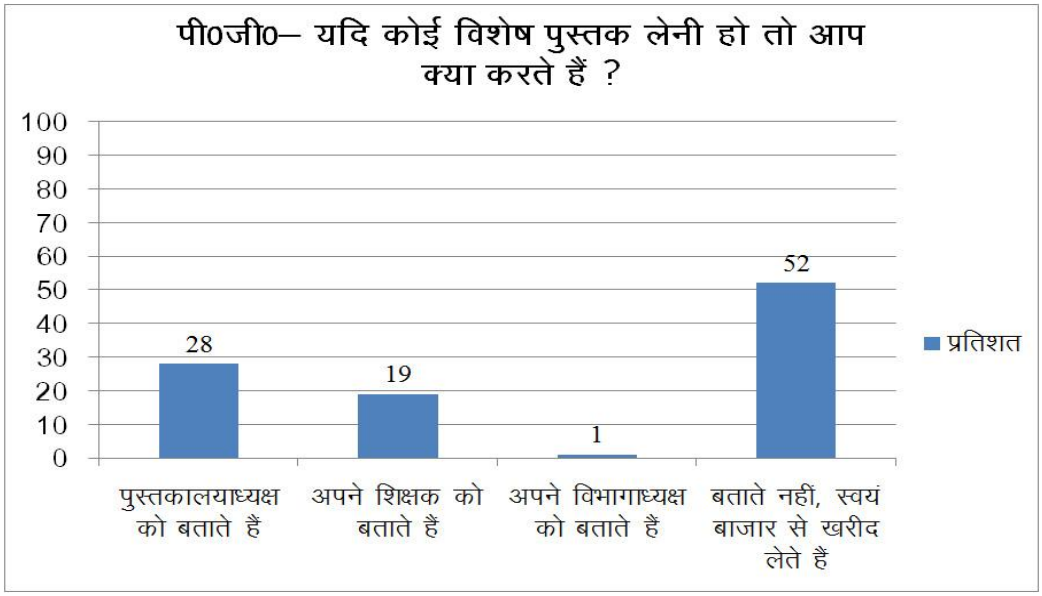

Figure 32- छात्राओं द्वारा किसी विशेष पुस्तक के संदर्भ में निर्णय

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं में से 28 अर्थात 28 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि यदि कोई विशेष पुस्तक लेनी हो तो वे पुस्तकालयाध्यक्ष को बताती हैं। जबकि 19 स्नातकोत्तर छात्राओं का कहना है कि वे विशेष पुस्तक लेने के लिए अपने शिक्षक को बताती हैं। 1 छात्रा का कहना है कि जब कोई विशेष पुस्तक लेनी होती है तो वे अपने विभागाध्यक्ष को बताती हैं। दूसरी ओर 100 में से 52 अर्थात 52 प्रतिशत ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं का कहना है कि जब कोई विशेष पुस्तक लेनी होती है तो वे किसी को कुछ नहीं बताती, न शिक्षक को और न ही पुस्तकालयाध्यक्ष को और न ही विभागाध्यक्ष को, बल्कि स्वयं बाजार से खरीद लेती हैं। ये वे छात्राएं हैं जिन्हें अपने विषय से संबंधित वह विशेष पुस्तक नहीं मिल पाती तो पुस्तकालय में आने के इंतजार में न रहकर बाजार से ले लेती हैं। ऐसी छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग तो करती हैं, लेकिन सभी सुविधाएं न मिल पाने के कारण पुस्तकों के संबंध में स्वयं निर्णय ले लेती हैं और बाजार से खरीद लेती हैं। शोध छात्रा ने बातचीत में पाया कि बाजार से खरीदी जाने वाली पुस्तक के बारे में वे अपने शिक्षकों एवं सहपाठियों से चर्चा जरूर करती हैं, ताकि अन्य साथी भी पुस्तक का लाभ ले सकें। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह भी पता चलता है कि अभी भी छात्राएं पूरी तरह से महाविद्यालयों के कर्मचारियों से बेझिझक नहीं मिल पाती या अपनी बात नहीं कह पाती।

यही कारण है कि 52 प्रतिशत ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राएं स्वयं बाजार जाकर संबंधित पुस्तक खरीद लेती हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष को भी सूचना देने वाली स्नातकोत्तर छात्राओं का प्रतिशत 50 से कम अर्थात मात्र 28 प्रतिशत है। शोध छात्रा आंकड़ों के विश्लेषण पर इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि छात्राएं पुस्तकालय की आवश्यकता के लिए सजग हैं और इसीलिए पुस्ताकालयाध्यक्ष को सूचना देती हैं ताकि यदि कोई पुस्तक विशेष है तो सभी को पढ़ने के लिए पुस्तकालय में हो और सबको लाभ मिल सके।

4.7.8 पुस्तकालय जाने के लिए मिलने वाली प्रेरणा :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के तैईसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के आठवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि पुस्तकालय जाने के लिए आपको कौन अधिक प्रेरित करते है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
7	पुस्तकालयाध्यक्ष	7
57	आपके विषय के शिक्षक	57
26	माता–पिता या रिश्तेदार	26
10	अन्य	10
100	कुल	100

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण छात्राओं में से 7 अर्थात 7 प्रतिशत ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं का कहना है कि उन्हें पुस्तकालयाध्यक्ष प्रेरित करते हैं। जबकि दूसरी ओर 57 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं का कहना है कि विषय के शिक्षक पुस्तकालय जाने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं। यह महत्वर्पूण आंकड़ा है कि शिक्षक छात्राओं को पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करते हैं। दूसरी ओर कुछ स्नातकोत्तर छात्राओं ने यह भी माना कि माता पिता या रिश्तेदार पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करते हैं, ऐसी छात्राओं का प्रतिशत 26 अर्थात 100 में से 26 हैं।

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

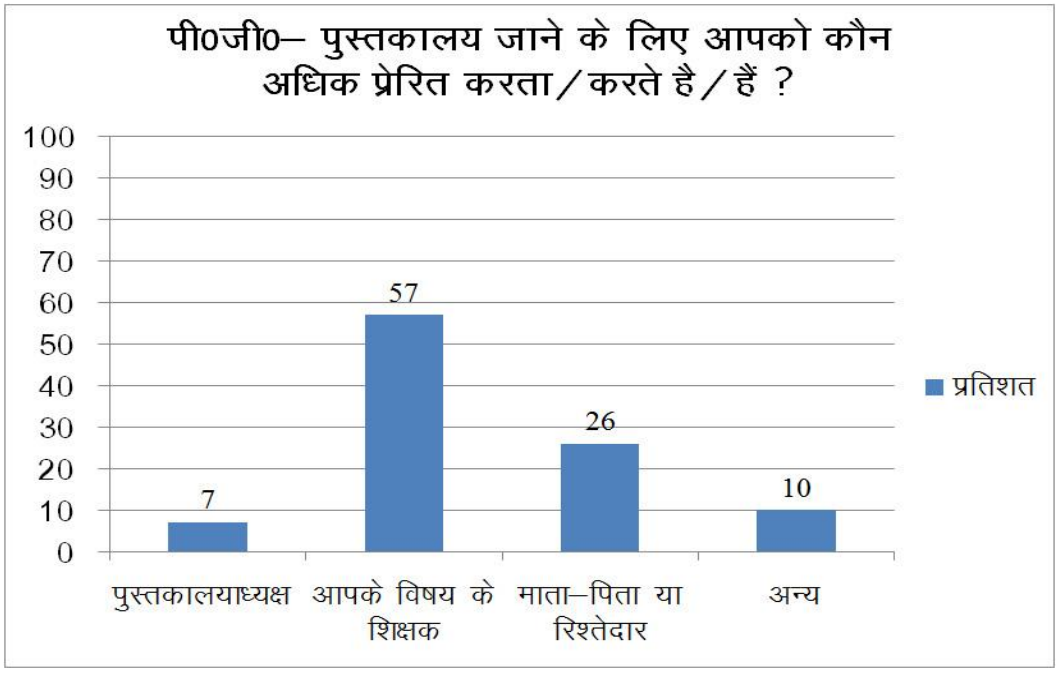

Figure 33 - पुस्तकालय जाने के लिए मिलने वाली प्रेरणा

इसके विपरीत 10 स्नातकोत्तर छात्राओं का मानना है कि उन्हें अन्य जैसे, सहपाठी, सहेली आदि प्रेरित करते हैं पुस्तकालय जाने के लिए। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पुस्तकालय जाने के लिए ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं को सर्वाधिक प्रेरणा उनके शिक्षकों के द्वारा दी जाती है। दूसरी स्थान पर माता–पिता या रिश्तेदार हैं जो छात्राओं को पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

4.7.9 पुस्तकालय जाने से सर्वाधिक मिलने वाला लाभ :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के चौबीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के नौवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि पुस्तकालय जाने से सबसे अधिक क्या लाभ मिला? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
22	पाठ्यक्रम सामग्री आसानी से मिलने लगी	22
30	पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक सामग्री जैसे	30

	पत्रिकाएं, उपन्यास, कॅरियर पुस्तकें आदि पढ़ने की भी इच्छा जागृत हुई	
21	पहले के मुकाबले अब अधिक पढ़ने का मन करता है	21
27	कोई लाभ नहीं मिला	27
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

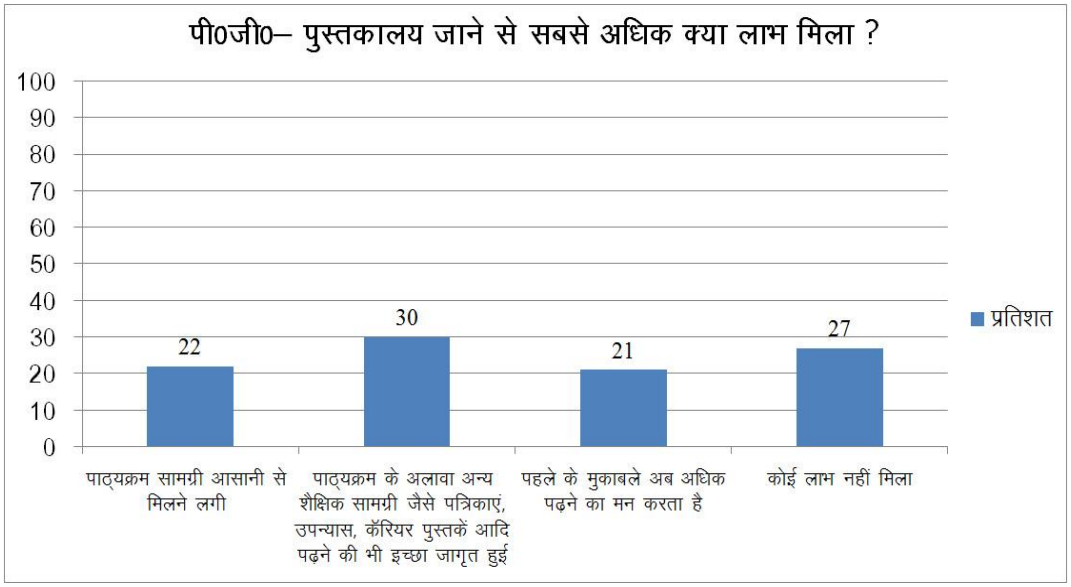

Figure 34- पुस्तकालय जाने से सर्वाधिक मिलने वाला लाभ

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं में से 22 अर्थात 22 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि पुस्तकालय जाने से उन्हें लाभ यह मिला कि पाठ्यक्रम संबंधी सामग्री आसानी से मिलने लगी। जबकि 100 में से 30 छात्राओं का मानना है कि पुस्तकालय जाने से उन्हें यह लाभ मिला कि वे पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक जैसे पत्रिकाएं, उपन्यास कॅरियर पुस्तकें आदि पढ़ने की भी इच्छा जागृत हुई। यह एक महत्वपूर्ण जानकारी है। दूसरी ओर 100 में से 21 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं का कहना है कि पुस्तकालय जाने से यह लाभ हुआ कि पहले जितना मन पढ़ने का करता था, पहले के मुकाबले अब अधिक पढ़ने का मन करता है। हालांकि 27 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं का कहना यह भी है कि उन्हें पुस्तकालय जाने

से कोई लाभ नहीं मिला। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पुस्तकालय जाने का सर्वाधिक लाभ यह हुआ कि स्नातकोत्तर छात्राओं को पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक सामग्री भी पढ़ने की इच्छा हुई। दूसरे स्थान पर 22 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि पाठ्यक्रम सामग्री मिलने लगी।

4.7.10 पुस्तकालय में पसंद की जाने वाली व्यवस्था :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के पच्चीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के अंतिम दसवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि आपके महाविद्यालय के पुस्तकालय में आपको क्या पसंद है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
41	पुस्तकों की उपलब्धता, संख्या और उनका रख–रखाव	41
28	बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि	28
6	पुस्तकालय के कर्मचारियों का व्यवहार	6
25	कुछ भी पसंद नहीं	25
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

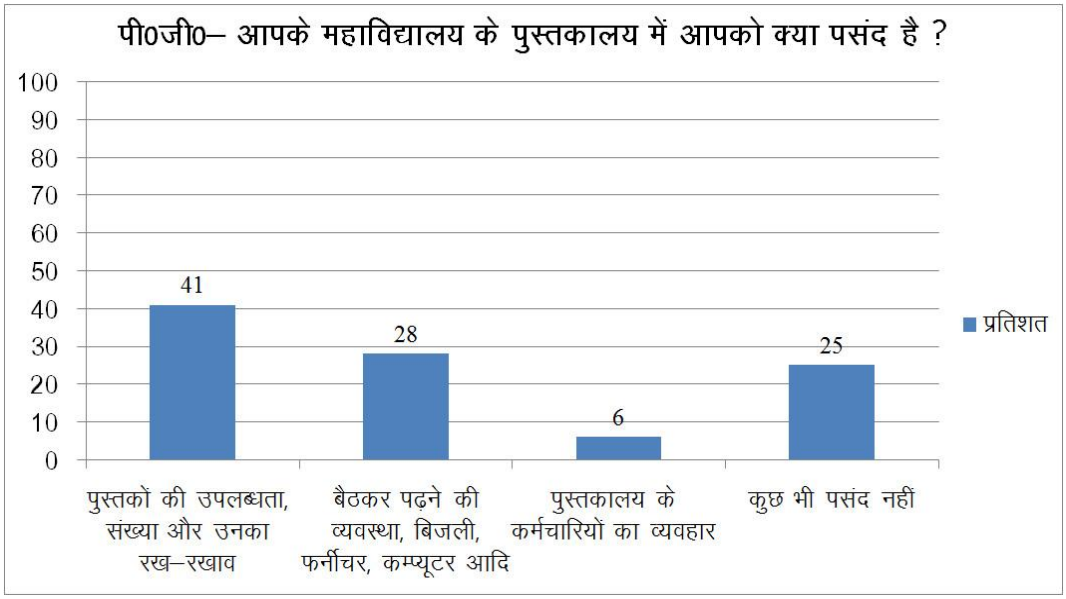

Figure 35 - पुस्तकालय में पसंद की जाने वाली व्यवस्था

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं में से 41 अर्थात 41 प्रतिशत ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं ने कहा कि उनके महाविद्यालय के पुस्तकालय में उन्हें पुस्तकों की उपलब्धता, पुस्तकों की संख्या और उनका रख–रखाव सबसे अधिक पसंद है। दूसरी ओर 100 में से 28 ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं का मानना है कि उन्हें अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि सबसे अधिक पसंद है। 6 स्नातकोत्तर छात्राओं ने कहा कि उन्हें अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकालय के कर्मचारियों का व्यवहार पसंद है। जबकि 100 में से 25 प्रतिशत ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राओं का कहना है कि उन्हें अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में कुछ भी पसंद नहीं है। शोध छात्रा द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चला कि सर्वाधिक (41 प्रतिशत) ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राएं अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों की उलब्धता, पुस्तकों की संख्या और रख–रखाव को पसंद करती हैं। दूसरे स्थान पर (28 प्रतिशत) ग्रामीण स्नातकोत्तर छात्राएं अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि को पसंद करती है। सबसे कम (मात्र 6 प्रतिशत) ग्रामीण छात्राओं द्वारा कर्मचारियों का व्यवहार पसंद किया जाता है।

4.8 ग्रामीण स्नातक छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन और विश्लेषण :–

शोध छात्रा ने कुल प्रश्नावली के 25 प्रश्नों में 10 प्रश्नों का विश्लेषण किया है जो, प्रत्यक्ष रूप से स्नातक ग्रमीण छात्राओं को प्रभावित करते हैं। साथ ही इन 10 प्रश्नों का विश्लेषण करने से विशेषतः ग्रामीण स्नातक छात्राओं के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हुई। ग्रामीण स्नातक छात्राओं द्वारा प्राप्त आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन एवं विश्लेषण इस प्रकार है–

4.8.1 घर में अध्ययन करने का प्रभाव :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के ग्याहरवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातक छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि क्या घर पर पढ़ाई करने से अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
63	हां	63
37	नहीं	37
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

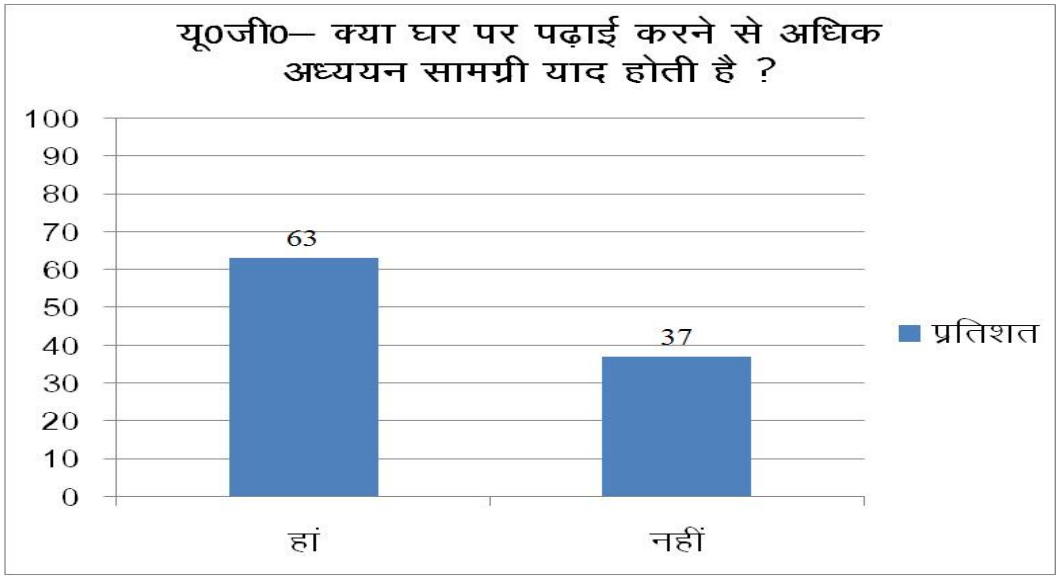

Figure 36 - घर में अध्ययन करने का प्रभाव

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातक छात्राओं में 63 छात्राएं ऐसी हैं जो यह मानती हैं कि जब वे अपने घर में पढ़ाई करती हैं तो उन्हें अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है। विश्लेषण से पता चलता है कि स्नातक छात्राएं ग्रामीण परिवेश की हैं। उनका अधिक समय घर के अंदर ही व्यतीत होती है, ऐसे में उनका घर के प्रति अधिक लगाव होता है। ऐसे में कहा जा सकता है कि स्नातक छात्राओं को घर पर अध्ययन करने से अधिक याद होता है। इसके विपरीत 37 स्नातक छात्राओं अर्थात 37 प्रतिशत का मानना है कि घर पर अध्ययन करने से उन्हें याद नहीं होता। विश्लेषण में पता चलता है कि जिन स्नातक छात्राओं को घर के कामों की वजह से अध्ययन में परेशानी होती है, उन छात्राओं को याद घर पर याद नहीं होता।

4.8.2 पुस्तकालय में अध्ययन करने का प्रभाव :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के बारहवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातक छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि क्या पुस्तकालय मे पढ़ाई करने से अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
46	हां	46
54	नहीं	54
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

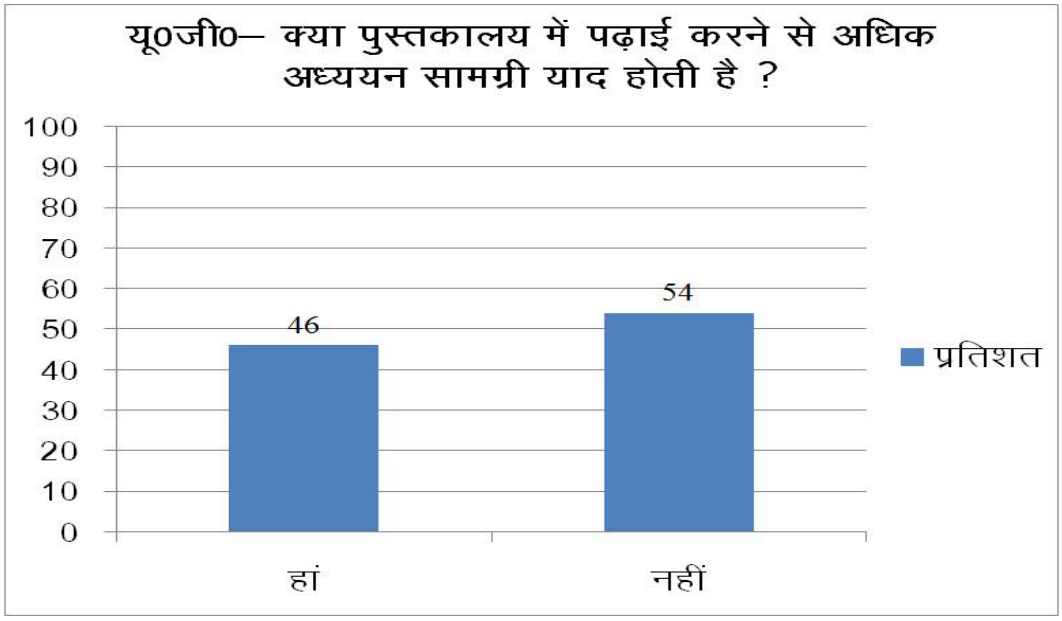

Figure 37 - पुस्तकालय में अध्ययन करने का प्रभाव

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातक छात्राओं में से 46 अर्थात 46 प्रतिशत ने कहा कि जब वे पुस्तकालय में पढ़ाई करने से अध्ययन सामग्री याद हो जाती है। इसके विपरीत 54 प्रतिशत अर्थात 100 में से 54 स्नातक छात्राओं का कहना है कि जब वे पुस्तकालय में पढ़ाई करती हैं तो उन्हें अध्ययन सामग्री

याद नहीं होती। शोध छात्रा को अध्ययन से पता चलता है कि स्नातक छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग तो करती हैं, लेकिन जैसा घर पर रहकर अध्ययन सामग्री याद कर लेती हैं, वैसा पुस्तकालय में रहकर याद नहीं कर पाती।

4.8.3 घर के पास पुस्तकालय के संबंध में विचार :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के प्रथम भाग के तेरहवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातक छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि यदि कोई पुस्तकालय आपके घर/गावं के पास हो तो डिग्री लेने के बाद नौकरी के लिए वहां अध्ययन करेंगी ? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
92	हां	92
8	नहीं	8
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

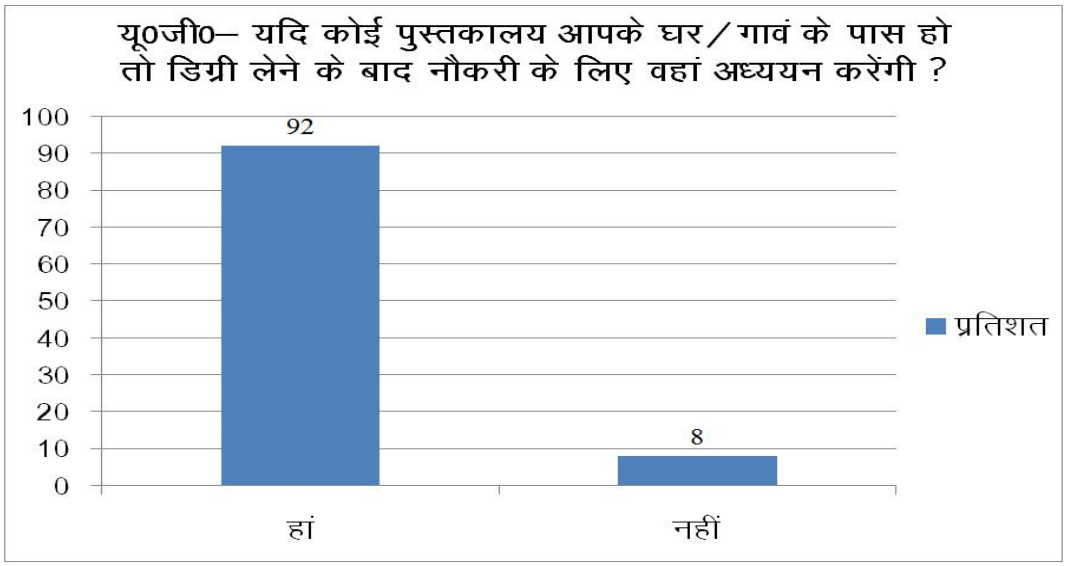

Figure 38 - घर के पास पुस्तकालय के संबंध में विचार

शोध छात्रा ने इस प्रश्न में पुस्तकालय के महत्व को जानने की कोशिश की। शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातक छात्राओं में से 92 प्रतिशत छात्राओं का मानना है कि यदि काई पुस्तकालय उनके घर/गांव के पास हो तो छात्राएं डिग्री लेने के बाद अपने कॅरियर को आगे बढ़ाने के लिए अथवा नौकरी के लिए उस पुस्तकालय में पढ़ने जरूर जाएंगी अथवा कह सकते हैं कि उस पुस्तकालय का उपयोग जरूर करेंगी। आंकड़ों के विश्लेषण से हम इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि पुस्तकालय का प्रभाव इन स्नातक छात्राओं पर पड़ रहा है। दूसरी ओर 8 छात्राएं ऐसी हैं जिनका मानना है कि वे डिग्री लेने के बाद यदि घर/गांव के पास पुस्तकालय हो तो वे नौकरी के लिए अध्ययन नहीं करेंगी।

4.8.4 पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के सत्रहवें प्रश्न या द्वितीय भाग के दूसरे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातक छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि आप पुस्तकालय में कितना समय व्यतीत करती हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
27	30 मिनट या उससे कम	27
37	1 घंटा लगभग	37
25	2 घंटे या अधिक	25
0	पुस्तकालय नहीं जाते	0
11	अन्य	11
100	कुल	100

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातक छात्राओं में से 27 अर्थात 27 प्रतिशत ग्रामीण स्नातक छात्राओं का मानना है कि वे 30 मिनट या उससे कम समय के लिए पुस्तकालय का उपयोग करती हैं या ये कहें कि पुस्तकालय में समय व्यतीत करती हैं।

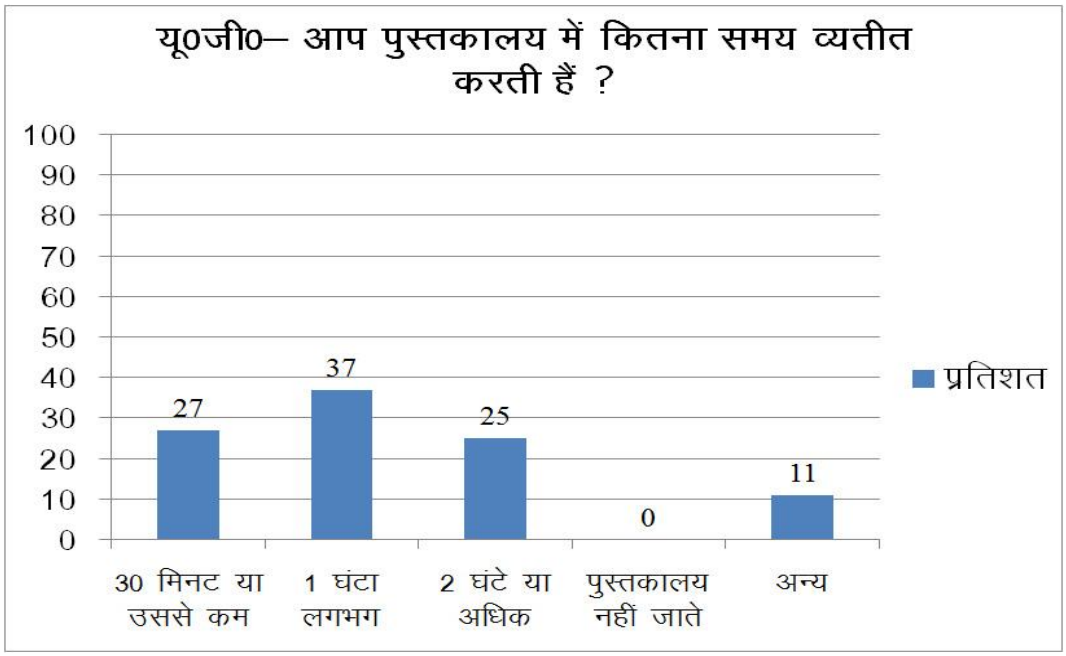

Figure 39 - पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय

इसके अलावा 100 में से 37 स्नातक छात्राएं ऐसी हैं, जो 1 घंटा के आस पास पुस्तकालय में समय व्यतीत करती हैं। जबकि 25 स्नातक छात्राएं 2 घंटे या उससे अधिक समय तक पुस्तकालय में समय व्यतीत करती हैं। जबकि किसी भी छात्रा ने यह नहीं कहा कि वह पुस्तकालय नहीं जाती। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्येक छात्रा पुस्तकालय का उपयोग करती है। हालांकि 100 में मात्र 11 स्नातक छात्राएं ऐसी हैं जिनका मानना है कि वे पुस्तकालय जाती है और पुस्तक या पुस्तकें निर्गत करवा कर वापस आ जाती हैं। आंकड़ों का विश्लेषण करें तो पता चलता है कि सर्वाधिक समय व्यतीत करने वाली मात्र 25 ग्रामीण स्नातक छात्राएं हैं।

4.8.5 पुस्तकालय में पढ़ी जाने वाली पाठ्य सामग्री :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के अठारहवें प्रश्न या द्वितीय भाग के तीसरे प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातक छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि आप पुस्तकालय में किस प्रकार की पाठ्य सामग्री पढ़ती हैं?

इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
0	मनोरंजन से संबंधित	0
94	शैक्षिक पाठ्यक्रम से संबंधित	94
1	रोजगार से संबंधित	1
5	अन्य	5
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

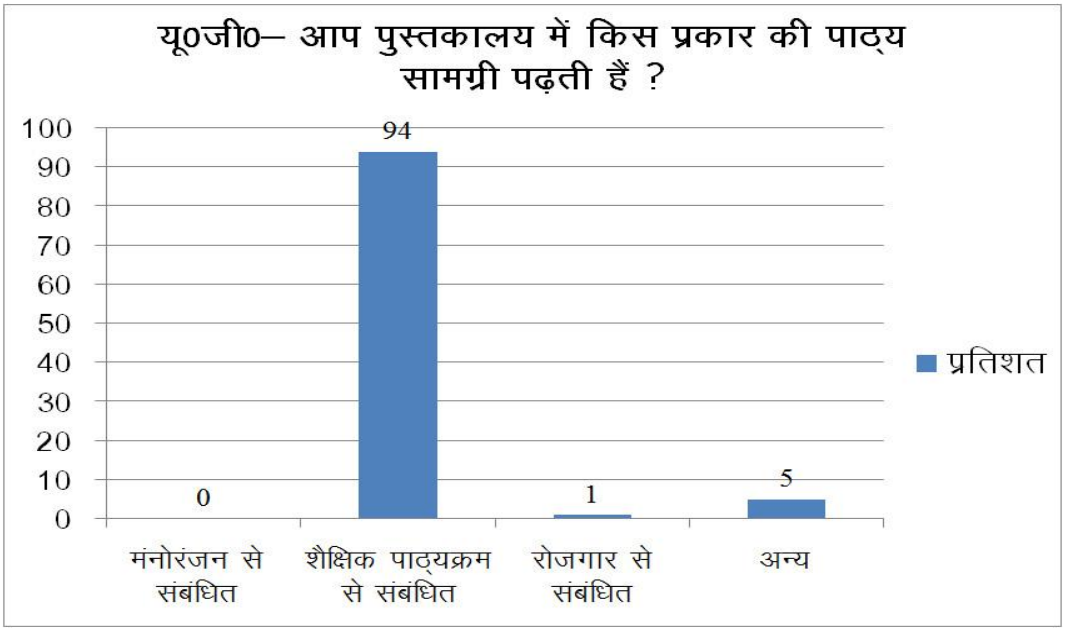

Figure 40 - पुस्तकालय में पढ़ी जाने वाली पाठ्य सामग्री

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातक छात्राओं में से कोई भी छात्रा मनोरंजन से संबंधित पाठन पुस्तकालय में नहीं करती। जबकि दूसरी ओर 100 में 94 ग्रामीण स्नातक छात्राएं ऐसी हैं, जो पुस्तकालय में शैक्षिक पाठ्यक्रम से संबंधित अध्ययन करती हैं। स्नातक छात्राएं पाठ्यक्रम संबंधी नोट्स बनाती हैं और साथ ही पुस्तकों को पढ़ना आदि शामिल है। दूसरी तरफ 1 स्नातक छात्रा ऐसी है जो पुस्तकालय में रोजगार से संबंधित अध्ययन करने जाती है। 5 ग्रामीण स्नातक छात्राएं ऐसी हैं जो पुस्तकालय में अन्य सामग्री जैसे पत्र, पत्रिकाएं, उपन्यास, कहानी आदि शैक्षिक सामग्री

पढ़ती हैं। आंकड़ों का विश्लेषण करें तों सर्वाधिक स्नातक छात्राओं द्वारा पुस्तकालय में शैक्षिक पाठ्यक्रम संबंधी अध्ययन किया जाता है।

4.8.6 स्वाध्याय के लिए पसंदीदा स्थान :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के इक्कीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के छठवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातक छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि स्वाध्याय के लिए आपको कहां पढ़ना अधिक पसंद है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं–

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
52	पुस्तकालय में	52
38	घर में	38
8	बगीचे में	8
2	अन्य किसी स्थान पर	2
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

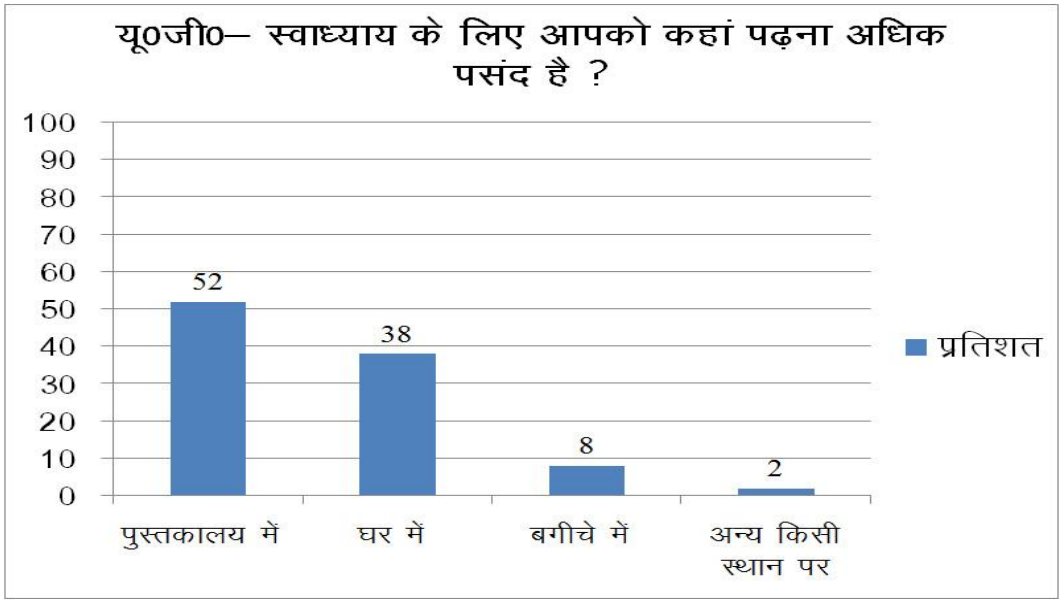

Figure 41 - स्वाध्याय के लिए पसंदीदा स्थान

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातक छात्राओं में से 52 ग्रामीण स्नातक छात्राओं का कहना है कि स्वाध्याय के लिए वे पुस्तकालय में पढ़ना पसंद करती हैं। जबकि 38 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि उन्हें स्वाध्याय के लिए घर पर पढ़ना पसंद है। 8 स्नातक छात्राएं बगीचे में पढ़ना पसंद करती हैं। अन्य स्थानों पर 2 छात्राओं को पढ़ना पसंद है। आंकड़ों के अनुसार सर्वाधिक पसंद किया जाने वाला स्थान पुस्तकालय है, जहां स्नातक छात्राएं स्वाध्याय करती हैं।

4.8.7 छात्राओं द्वारा किसी विशेष पुस्तक के संदर्भ में निर्णय :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के बाइसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के सातवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातक छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि यदि कोई विशेष पुस्तक लेनी हो तो आप क्या करते हैं? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
56	पुस्तकालयाध्यक्ष को बताते हैं	56
10	अपने शिक्षक को बताते हैं	10
4	अपने विभागाध्यक्ष को बताते हैं	4
30	बताते नहीं, स्वयं बाजार से खरीद लेते हैं	30
100	कुल	100

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातक छात्राओं में से 56 अर्थात 56 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का कहना है कि यदि कोई विशेष पुस्तक लेनी हो तो वे पुस्तकालयाध्यक्ष को बताती हैं। जबकि 10 स्नातक छात्राओं का कहना है कि वे विशेष पुस्तक लेने के लिए अपने शिक्षक को बताती हैं। 4 छात्राओं का कहना है कि जब कोई विशेष पुस्तक लेनी होती है तो वे अपने विभागाध्यक्ष को बताती है। दूसरी ओर 100 में से 30 अर्थात 30 प्रतिशत ग्रामीण स्नातक छात्राओं का कहना है कि जब कोई विशेष पुस्तक लेनी होती है तो वे किसी को कुछ नहीं बताती, न शिक्षक को और न ही पुस्तकालयाध्यक्ष को और न ही विभागाध्यक्ष को, बल्कि स्वयं बाजार से खरीद लेती हैं।

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

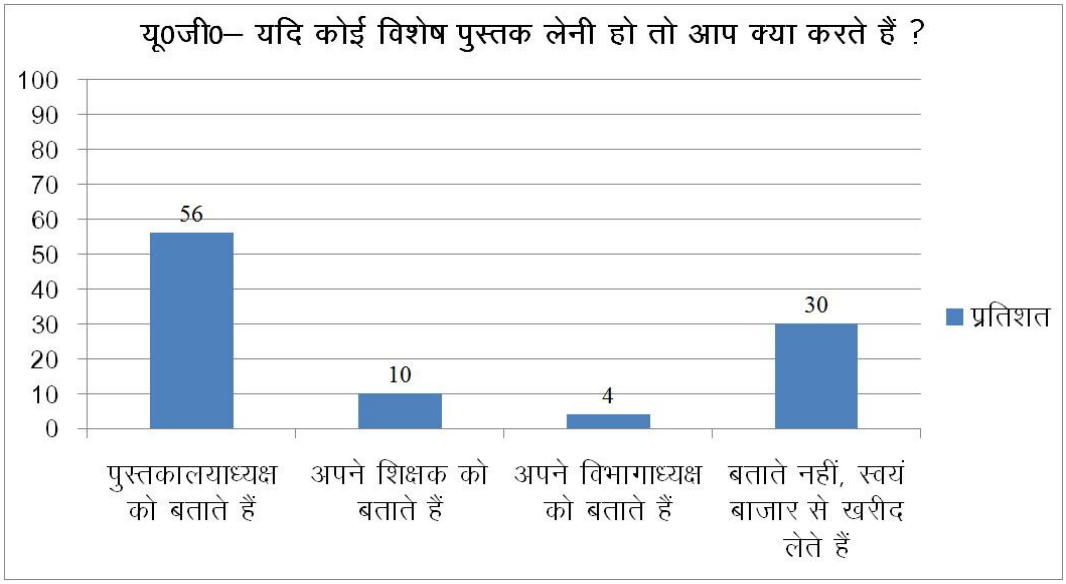

Figure 42 - छात्राओं द्वारा किसी विशेष पुस्तक के संदर्भ में निर्णय

ये वे छात्राएं हैं जिन्हें अपने विषय से संबंधित वह विशेष पुस्तक नहीं मिल पाती तो पुस्तकालय में आने के इंतजार में न रहकर बाजार से ले लेती हैं। ऐसी छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग तो करती हैं, लेकिन सभी सुविधाएं न मिल पाने के कारण पुस्तकों के संबंध में स्वयं निर्णय ले लेती हैं और बाजार से खरीद लेती हैं। शोध छात्रा ने बातचीत में पाया कि बाजार से खरीदी जाने वाली पुस्तक के बारे में वे अपने शिक्षकों एवं सहपाठियों से चर्चा जरूर करती हैं, ताकि अन्य साथी भी पुस्तक का लाभ ले सकें। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर यह भी पता चलता है कि स्नातक छात्राओं में झिझक कम है, इसलिए वे बेझिझक अपने पुस्तकालाध्यक्ष को विशेष पुस्तक/कों के बारे में बता देती हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष को सूचना देने वाली स्नातक छात्राओं का प्रतिशत 56 है। शोध छात्रा आंकड़ों के विश्लेषण पर इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि छात्राएं पुस्तकालय की आवश्यकता के लिए सजग हैं और इसीलिए पुस्ताकालयाध्यक्ष को सूचना देती हैं ताकि यदि कोई पुस्तक विशेष है तो सभी को पढ़ने के लिए पुस्तकालय में हो और सबको लाभ मिल सके।

4.8.8 पुस्तकालय जाने के लिए मिलने वाली प्रेरणा :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के तैईसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के आठवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातक छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि पुस्तकालय जाने के लिए आपको

कौन अधिक प्रेरित करते है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
7	पुस्तकालयाध्यक्ष	7
64	आपके विषय के शिक्षक	64
25	माता–पिता या रिश्तेदार	25
4	अन्य	4
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

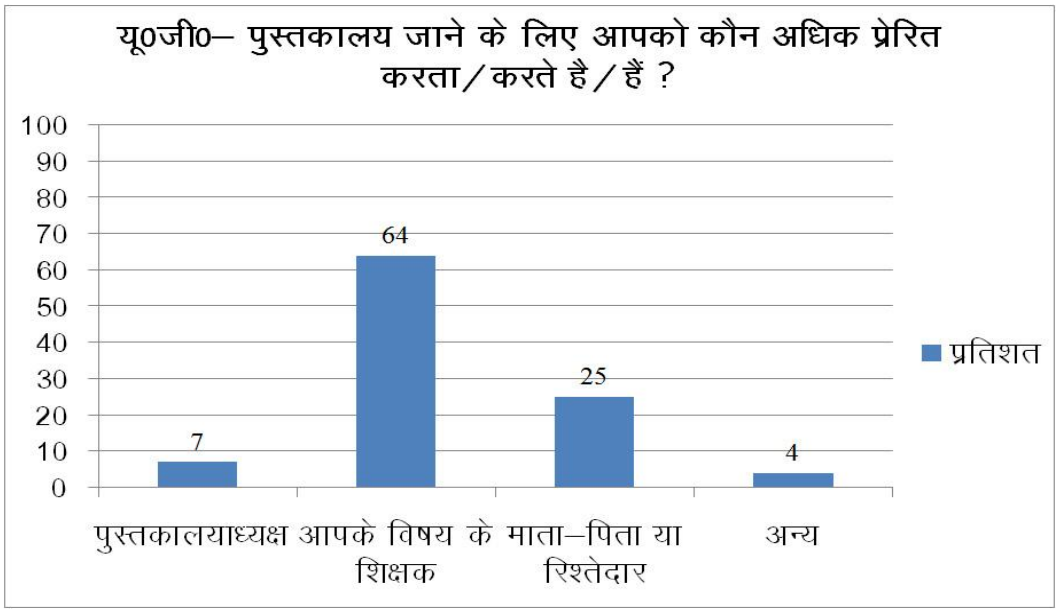

Figure 43 - पुस्तकालय जाने के लिए मिलने वाली प्रेरणा

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण छात्राओं में से 7 अर्थात 7 प्रतिशत ग्रामीण स्नातक छात्राओं का कहना है कि उन्हें पुस्तकालयाध्यक्ष प्रेरित करते हैं। जबकि दूसरी ओर 64 ग्रामीण स्नातक छात्राओं का कहना है कि विषय के शिक्षक पुस्तकालय जाने के लिए उन्हें प्रेरित करते हैं। यह महत्वर्पूण आंकड़ा है कि शिक्षक छात्राओं को पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करते हैं। दूसरी ओर कुछ स्नातक छात्राओं ने

यह भी माना कि माता पिता या रिश्तेदार पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करते हैं, ऐसी छात्राओं का प्रतिशत 25 अर्थात 100 में से 25 हैं। इसके विपरीत 4 स्नातक छात्राओं का मानना है कि उन्हें अन्य जैसे, सहपाठी, सहेली आदि प्रेरित करते हैं पुस्तकालय जाने के लिए। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पुस्तकालय जाने के लिए ग्रामीण स्नातक छात्राओं को सर्वाधिक प्रेरणा उनके शिक्षकों के द्वारा दी जाती है। दूसरी स्थान पर माता–पिता या रिश्तेदार हैं जो छात्राओं को पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

4.8.9 पुस्तकालय जाने से सर्वाधिक मिलने वाला लाभ :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के चौबीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के नौवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण स्नातक छात्राओं (कुल 100) से पूछा गया कि पुस्तकालय जाने से सबसे अधिक क्या लाभ मिला? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
17	पाठ्यक्रम सामग्री आसानी से मिलने लगी	17
58	पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक सामग्री जैसे पत्रिकाएं, उपन्यास, कॅरियर पुस्तकें आदि पढ़ने की भी इच्छा जागृत हुई	58
17	पहले के मुकाबले अब अधिक पढ़ने का मन करता है	17
8	कोई लाभ नहीं मिला	8
100	कुल	100

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातक छात्राओं में से 17 अर्थात 17 प्रतिशत ग्रामीण छात्राओं का मानना है कि पुस्तकालय जाने से उन्हें लाभ यह मिला कि पाठ्यक्रम संबंधी सामग्री आसानी से मिलने लगी। जबकि 100 में से 58 स्नातक छात्राओं का मानना है कि पुस्तकालय जाने से उन्हें यह लाभ मिला कि वे

पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक जैसे पत्रिकाएं, उपन्यास कॅरियर पुस्तकें आदि पढ़ने की भी इच्छा जागृत हुई।

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

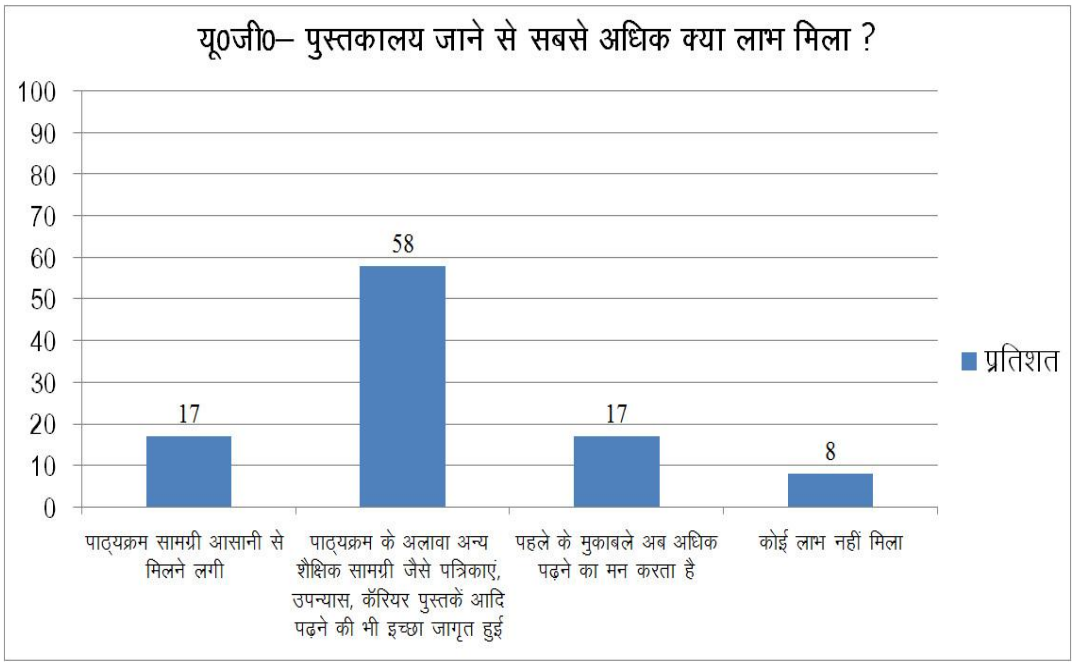

Figure 44 - पुस्तकालय जाने से सर्वाधिक मिलने वाला लाभ

यह एक महत्वपूर्ण जानकारी है। दूसरी ओर 100 में से 17 ग्रामीण स्नातक छात्राओं का कहना है कि पुस्तकालय जाने से यह लाभ हुआ कि पहले जितना मन पढ़ने का करता था, पहले के मुकाबले अब अधिक पढ़ने का मन करता है। हालांकि 8 ग्रामीण स्नातक छात्राओं का कहना यह भी है कि उन्हें पुस्तकालय जाने से कोई लाभ नहीं मिला। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि पुस्तकालय जाने का सर्वाधिक लाभ यह हुआ कि स्नातक छात्राओं को पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक सामग्री भी पढ़ने की इच्छा हुई।

4.8.10 पुस्तकालय में पसंद की जाने वाली व्यवस्था :–

शोध छात्रा द्वारा प्रश्नावली के पच्चीसवें प्रश्न या द्वितीय भाग के अंतिम दसवें प्रश्न में न्यादर्श ग्रामीण छात्राओं (कुल 200) से पूछा गया कि आपके महाविद्यालय के पुस्तकालय में आपको क्या पसंद है? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए, वे इस प्रकार हैं –

उत्तर	विकल्प	प्रतिशत
52	पुस्तकों की उपलब्धता, संख्या और उनका रख–रखाव	52
28	बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि	28
8	पुस्तकालय के कर्मचारियों का व्यवहार	8
12	कुछ भी पसंद नहीं	12
100	कुल	100

आंकड़ों का चित्रमय प्रदर्शन भी किया गया है, जो इस प्रकार है–

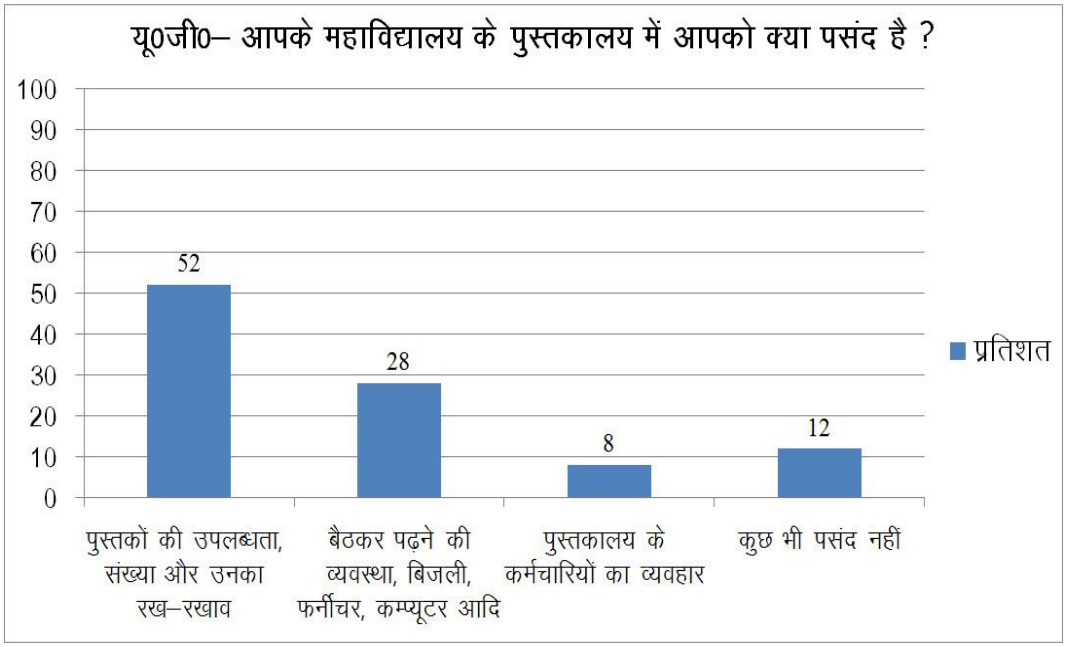

Figure 45 - पुस्तकालय में पसंद की जाने वाली व्यवस्था

शोध छात्रा द्वारा किए गए विश्लेषण में पता चला कि कुल 100 ग्रामीण स्नातक छात्राओं में से 52 अर्थात 52 प्रतिशत ग्रामीण स्नातक छात्राओं ने कहा कि उनके महाविद्यालय के पुस्तकालय में उन्हें पुस्तकों की उपलब्धता, पुस्तकों की संख्या और उनका रख–रखाव सबसे अधिक पसंद है। दूसरी ओर 100 में से 28 ग्रामीण स्नातक छात्राओं का मानना है

कि उन्हें अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि सबसे अधिक पसंद है। 8 स्नातक छात्राओं ने कहा कि उन्हें अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकालय के कर्मचारियों का व्यवहार पसंद है। जबकि 100 में से 12 प्रतिशत ग्रामीण स्नातक छात्राओं का कहना है कि उन्हें अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में कुछ भी पसंद नहीं है। शोध छात्रा द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चला कि सर्वाधिक (52 प्रतिशत) ग्रामीण स्नातक छात्राएं अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों की उलब्धता, पुस्तकों की संख्या और रख–रखाव को पसंद करती हैं। दूसरे स्थान पर (28 प्रतिशत) ग्रामीण स्नातक छात्राएं अपने महाविद्यालय के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि को पसंद करती है। सबसे कम (मात्र 8 प्रतिशत) ग्रामीण छात्राओं द्वारा कर्मचारियों का व्यवहार पसंद किया जाता है।

4.9 साक्षात्कार द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण

शोध एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। इसमें बहुत मेहनत होती है। आंकड़ों का संकलन करने के बाद किसी भी प्रकार की त्रुटि आती है तो पूरा अध्ययन ही बेकार हो जाता है और शोधार्थी अपनी समस्या का समाधान नहीं कर पाता। इसलिए जरूरी है कि आंकड़ों का संकलन बड़ी ही सावधानी के साथ किया जाए। प्रस्तुत अध्ययन में ग्रामीण छात्राओं द्वारा प्रश्नावली भरवाई गई, ताकि समस्या के समाधान के संबंध में आंकड़ों का संकलन किया जा सके। अध्ययन में किसी भी प्रकार की लापरवाही न हो इसके लिए शोध छात्रा ने महाविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्षों से भी आंकड़ों का संकलन किया।

इससे महाविद्यालयों में पढ़ रहीं छात्राओं से तो आंकड़ों का संकलन किया ही गया साथ ही उसी महाविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष से भी प्रश्न पूछे गए। इससे यह पता लगाया जा सकता है कि जो उत्तर मिले हैं, उनमें किसी प्रकार का बदलाव या विरोधाभास तो नहीं। प्रस्तुत अध्ययन में 5 चयनित महाविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों से साक्षात्कार किया गया। उनसे प्रश्नों के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

शोध छात्रा ने साक्षात्कार उपकरण के माध्यम से जो आंकड़े एकत्रित किए उनका विश्लेषण इस प्रकार है–

4.9.1 पुस्तकालय के खुलने एवं बंद होने का समय :–

पुस्तकालयाध्यक्षों से हुए साक्षात्कार में पता चला कि तीन पुस्तकालयों के खुलने का समय सुबह 9 बजे से है, जबकि अन्य दो पुस्तकालयों का समय सुबह 10 बजे से है। पुस्तकालयों के बंद होने का समय लगभग समान है और शाम 4 से 4.30 बजे के बीच सभी पुस्तकालय बंद हो जाते हैं।

4.9.2 पुस्तकालय का निर्माण :–

आंकड़ों से पता चलता है कि जनता कॉलेज के पुस्तकालय का निर्माण 1959 में हुआ, पंचायतराज महाविद्यालय के पुस्तकलाय का निर्माण 1991 में और के0के0डी0सी के पुस्तकालय का निर्माण 1959 में और ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय का निर्माण 2012 में हुआ। चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय का निर्माण 1983 में हुआ। साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे पुराना महाविद्यालय जनता महाविद्यालय है और इसीके साथ कर्म क्षेत्र महाविद्यालय भी पुराना है।

4.9.3 पुस्तकालय में स्टाफ :–

जनता महाविद्यालय में पुस्तकालय में 7 कर्मचारियों का स्टाफ है, जिसमें पुस्तकालय प्रभारी भी शामिल हैं। दूसरी ओर कर्म क्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पुस्तकालय में भी 7 कर्मचारियों का स्टाफ है, जिसमें एक पुस्तकालय प्रभारी भी शामिल हैं। पंचायत राज महाविद्यालय के पुस्तकालय में स्थिति ठीक नहीं है, यहां दो कर्मचारियों का स्टाफ है। ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय में भी दो कर्मचारियों का स्टाफ है। चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय में 5 कर्मचारियों का स्टाफ है।

4.9.4 पुस्तकालयों में पुस्तकों की उपलब्धता :–

साक्षात्कार द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि जनता कॉलेज में छियालीस हजार पुस्तकें हैं। कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय में चालीस हजार से अधिक पुस्तकें हैं। पंचायतराज राजकीय महाविद्यालय में लगभग सात हजार पुस्तकें है। ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय में तीन हजार के लगभग पुस्तकें हैं। चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय में छत्तीस हजार पुस्तकें उपलब्ध हैं।

4.9.5 पुस्कालय में प्रभाग :–

शोध छात्रा ने साक्षात्कार के दौरान पुस्तकालय प्रभारियों से प्रभाग के बारे में प्रश्न किया था। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि सबसे अधिक प्रभाग कर्मक्षेत्र महाविद्यालय में मौजूद हैं। यहां 6 सेक्शन हैं। जनता महाविद्यालय के पुस्तकालय में 4 सेक्शन हैं। पंचायत राज महाविद्यालय के पुस्तकालय में दो सेक्शन हैं, ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय में दो सेक्शन हैं। चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय में 5 सेक्शन हैं।

4.9.6 ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय प्रभारियों को दिए जाने वाले सुझाव :–

शोध छात्रा ने साक्षात्कार के दौरान प्रश्न किया था कि क्या ग्रामीण छात्राएं पुस्तकों के संबंध में आपको सुझाव देती हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में अलग अलग जानकारी मिली। प्रभारियों के अनुासार छात्राएं बहुत कम ही सुझाव देने आती हैं। हालांकि इस बात को नकारा नहीं जा सकता कि सुझाव देने नहीं आतीं।

आंकड़ों के विश्लेषण से यह भी पता चलता है कि पुस्तकालय में आने वाली छात्रा ग्रामीण परिवेश की है या नहीं इसका पता लगाना मुश्किल होता है। लेकिन छात्राओं को सुझावों को हम महत्व देते हैं और कोशिश करते हैं कि जो पुस्तकों की आवश्यकता है, उन्हें पूरा किया जा सके। पंचायत राज महाविद्यालय या ठा.राजेश सिंह महाविद्यालयों में छात्राएं सुझाव कम ही देती हैं। एडेड महाविद्यालयों के पुस्तकालयों की स्थिति अच्छी है, इसलिए यहां की छात्राएं अधिक सक्रिय हैं।

4.9.7 पुस्तकों के अलावा अन्य पाठ्य सामग्री की उपलब्धता :–

साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों का शोध छात्रा द्वारा विश्लेषण किया गया, जिसमें पता चला कि जनता महाविद्यालय और कर्म क्षेत्र महाविद्यालय के पुस्तकालय में समाचार पत्र, मासिक एवं साप्ताहिक पत्रिकाएं, शोध पत्रिकाएं, रोजगार संबंधी सूचनाएं, राजकीय गजट उपलब्ध हैं। ठाकुर रोजश सिंह महाविद्यालय में सिर्फ पुस्तकों के अलावा समाचार पत्र ही आते हैं। पंचायत राज राजकीय महाविद्यालय के पुस्तकालय में समाचार पत्र एवं साप्ताहिक पत्रिकाएं आती हैं। चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय में पुस्तकों के अलावा, समाचार पत्र, मासिक एवं साप्ताहि पत्रिकाएं, शोध पत्रिकाएं, रोजगार संबंधी सूचनाएं उपलब्ध रहती हैं।

4.9.8– पुस्तकालय में उपलब्ध सेवाएं :–

शोध छात्रा द्वारा प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण किया गया, जिसके अनुसार पता चलता है कि जनता महाविद्यालय, कर्मक्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय और चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय में सूचना सेवा, पुस्तकों का आदान–प्रदान, पुस्तकों को निर्गत कराना, बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, तकनीकी सेवा उपलब्ध है। पंचायतराज महाविद्यालय और ठाकुर राजेश सिंह में सूचना सेवा, पुस्तकों को निर्गत कराने जैसी सेवा उपलब्ध है। पुस्तकों के अधिक निर्गत होने पर सेवा बंद कर दी जाती है।

4.9.9 ग्रामीण छात्राओं को मिलने वाली प्रेरणा :–

शोध छात्रा ने साक्षात्कार के दौरान प्रश्न किया कि क्या आप विशेषकर ग्रामीण छात्राओं को पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं ? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े प्राप्त हुए उनका विश्लेषण करने पर पता चलता है कि जनता महाविद्यालय, कर्मक्षेत्र महाविद्यालय और चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय प्रभारी छात्राओं को पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसमें ग्रामीण और शहरी छात्राएं शामिल हैं। आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि तीन महाविद्यालयों के प्रभारी ग्रामीण छात्राओं को पुस्तकालय उपयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं। दूसरी ओर ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय और पंचायत राज राजकीय महाविद्यालय के पुस्तकालय की स्थिति अच्छी न होने के कारण छात्राओं को पुस्तकालय आने के लिए प्रेरणा नही मिल

पाती। क्योंकि जो अधिकतर छात्राएं पस्तकालय आती हैं, उन्हें भी कभी कभी सेवा का लाभ नहीं मिल पाता।

4.9.10 ग्रामीण छात्राओं की झिझक दूर करने के लिए स्टाफ के द्वारा उठाए जाने वाले कदम :–

शोध छात्रा ने साक्षात्कार के दौरान पुस्तकालय प्रभारियों से पूछा कि ग्रामीण छात्राएं बात करने में झिझकती हैं, उनकी झिझक दूर करने के लिए आप और आप का स्टाफ किस प्रकार के कदम उठाता है ? इस प्रश्न के उत्तर में जो आंकड़े मिले उनके अनुसार, जनता महाविद्यालय, कर्मक्षेत्र महाविद्यालय और चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय में जब कभी भी ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय आती हैं, और पुस्तकें नहीं ढूंढ पाती, ऐसे में पुस्तकालय स्टाफ स्वयं पुस्तक ढूंढ कर छात्राओं की मदद करते हैं। ऐसे में छात्राओं की झिझक भी दूर होती है और ग्रामीण छात्राओं में एक आत्मविश्वास जागता है और वे पुस्तकालय के लाभ को पाने के लिए अधिक अग्रसर होती हैं। दूसरी ओर पंचायत राज राजकीय महाविद्यालय के पुस्तकालय में भी स्टाफ छात्राओं को प्रेरित करते हैं, उनसे पुस्तकालय संबंधी बात कर उनकी ममद करते हैं। ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय में स्टाफ की कमी है, इसलिए इस प्रकार के कोई प्रयास नहीं कर पाते।

संदर्भ सूची –

1. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ. सामाजिक शोध व सांख्यिकी. दिल्लीः विवेक प्रकाशन. पृ0– 366.
2. कपिल, एच0 के0. (2012). अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में. आगराः राखी प्रकाशन आगरा. पृ0– 397.
3. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 333.
4. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ. सामाजिक शोध व सांख्यिकी. दिल्लीः विवेक प्रकाशन. पृ0– 341.
5. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल. पृ0– 333.
6. कपिल, एच0 के0. (2012). अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में. आगराः राखी प्रकाशन आगरा. पृ0– 399.
7. Kumar, Dr. C. Rajendra. (2010). Research Methodology. New Delhi: APH Publishing. pp- 113.
8. Walliman, Nicholas. (2006). Social Research Methods. New Delhi: SAGE Publication. pp- 110.
9. Kumar, Dr. C. Rajendra. (2010). Research Methodology. New Delhi: APH Publishing. pp- 115.

पंचम अध्याय

निष्कर्ष
(Conclusion)

5.1 प्रस्तावना

किसी भी अध्ययन में निष्कर्ष उसका अंतिम रूप होती है, जिसमें शोधकर्ता के अध्ययन की समस्या का हल छुपा होता है। पूरे अध्ययन में निष्कर्ष अंतिम अध्याय या अंतिम खण्ड के रूप में विद्यमान होता है। निष्कर्ष में शोधकर्ता अपनी समस्या से जुड़े सभी प्रश्नों के संबंध में मिले प्रश्नों के हल बताता है और जानकारी देता है कि उसकी समस्या का हल उसे मिला या नहीं। साथ ही अपनी समस्या के हल के रूप में मिली जानकारी से वह कितना संतुष्ट है।

5.2 उद्देश्य की पूर्ति

शोध छात्रा ने समस्या का हल ढूंढने के लिए कुछ उद्देश्यों का निर्धारण किया था। अध्ययन के दौरान प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों का विश्लेषण किया गया, जिसमें उद्देश्यों की पूर्ति हुई। इनका विवरण इस प्रकार है –

1– अध्ययन में शोधार्थी का पहला उद्देश्य, 'ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय से एकत्रित किए जाने वाली शैक्षिक सामग्री का अध्ययन' था। चित्र संख्या 2, 3, 4, 5, 6, 18, 19 और 20 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से शोधार्थी के प्रथम उद्देश्य की पूर्ति होती है।

2– अध्ययन में शोधार्थी का दूसरा उद्देश्य, 'ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय उपयोग करने वाले समय का पता लगाना' था। चित्र संख्या 3, 4, 16, 17, 18 और 20 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से इस उद्देश्य की पूर्ति होती है।

3– अध्ययन में शोधार्थी का तीसरा उद्देश्य, 'ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालयों में कुल समय व्यतीत करने का अध्ययन' था। चित्र संख्या 17 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से इस उद्देश्य की पूर्ति होती है।

4– अध्ययन में शोधार्थी का चौथा उद्देश्य, 'ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय तक पहुंचने वाले यातायात संसाधनों का अध्ययन' था। चित्र संख्या 16 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से इस उद्देश्य की पूर्ति होती है।

5.3 परिकल्पनाओं का परिक्षण –

शोध छात्रा ने समस्या का हल ढूंढने के लिए कुछ परिकल्पनाओं का निर्धारण किया था। अध्ययन के दौरान प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण कु अनुसार परिकल्पनाओं की जांच की गई कि वे सिद्ध हुए या नहीं। परिकल्पनाओं की जांच निम्मलिखित है–

1– अध्ययन में शोध छात्रा की पहली परिकल्पना, '' ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली छात्राएं के शैक्षिक विकास में पुस्तकालय की भूमिका है।'' थी। विश्लेषण संख्या 4.5.1, 4.5.2, 4.5.3, 4. 5.4, 4.5.5, 4.5.6, 4.5.7, 4.5.8, 4.5.16, 4.5.17, 4.5.18, 4.5.19, 4.5.20 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से परिकल्पना सही सिद्ध होती है।

2– अध्ययन में शोध छात्रा की दूसरी परिकल्पना, ''पुस्तकालय, छात्राओं की अकादमिक शिक्षा को प्रभावित कर रहा है।'' थी। विश्लेष्ण संख्या 4.5.3, 4.5.4, 4.5.5, 4.5.7, 4.5.10, 4.5.13, 4.5.14, 4.5.15, 4.5.18, 4.5.21 4.5.23 4.5.24 में किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से यह परिकल्पना सही सिद्ध होती है।

3– अध्ययन में शोध छात्रा की तीसरी परिकल्पना, '' ग्रामीण स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्राओं पर पुस्तकालय का समान प्रभाव पड़ रहा है।'' विश्लेषण संख्या 4.7.6 एवं 4.8.6 में किए गए विश्लेषण में यह परिकल्पना असफल सिद्ध होती है।

5.4 निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में शोध छात्रा की भी अध्ययन समस्या थी, जिसका हल ढूंढने के लिए शोध छात्रा प्रेरित हुई। इसके साथ ही अपनी समस्या के हल के लिए प्राथमिक आंकड़ों का संकलन भी किया और उनका विश्लेषण भी किया। प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से शोध छात्रा अपनी अध्ययन के निष्कर्ष पर पहुंची है, जो इस प्रकार है–

5.4.1– पुस्तकालय कर रहा ग्रामीण छात्राओं को प्रभावित–

शहरी क्षेत्र के अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की छात्राएं कम हैं जो महाविद्यालयों में जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली छात्राओं की संख्या शहरी के अपेक्षा कम है, लेकिन फिर भी आंकड़ों पर ध्यान दें तो पता चलता है कि छात्राएं दूर दराज स्थित महाविद्यालयों में जाती हैं और अध्ययन करती हैं। पुस्तकालय के संबंध में आंकड़ों का संकलन किया गया था, जिनका विश्लेषण किया गया। चित्र संख्या 13, 14, और 15 का विश्लेषण करने से जो जानकारी मिलती है, उसके अनुसार शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली छात्राओं पर पुस्तकालय का सीधा प्रभाव पड़ रहा है। छात्राओं ने यह माना कि पुस्तकालय महत्वपूर्ण है और पुस्तकालय का लाभ उन्हें मिल रहा है।

5.4.2– ग्रामीण छात्राएं समझ रही पुस्तकालय का महत्व–

जनपद इटावा वर्तमान में शिक्षा के क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ रहा है। यही कारण है कि ग्रामीण छात्राएं भी महाविद्यालयों तक पहुंच रही हैं और पुस्तकालय का महत्व भी समझ रही हैं। चित्र संख्या 2, 3, 4, 5, 6, 18 और 19 का विश्लेषण करने पर शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि छात्राएं पुस्तकालय में जाकर पढ़ रही हैं, पुस्तकें प्राप्त कर रही हैं।

5.4.3– पुस्तकालय से ग्रामीण छात्राओं का हो रहा शैक्षिक विकास–

जब विकास की बात की जाती है तो, वहां पुस्तकालय का योगदान बहुत पीछे रखा जाता है। तमाम विकास की पुस्तकों में पुस्तकालय को स्थान तक नहीं दिया जाता। लेकिन जब शैक्षिक विकास पर बात की जाती है, तो पुस्तकालय स्वतः ही स्थान प्राप्त करता है। शोध छात्रा भी यह जानना चाहती थी कि पुस्तकालय ग्रामीण छात्राओं के शैक्षिक विकास में योगदान दे रहा है या नहीं। चित्र संख्या 2, 3, 4, 8, 13, 14, 15 और 20 के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि पुस्तकालय ग्रामीण छात्राओं के शैक्षिक विकास में योगदान दे रहा है। शहर में रहने वाली छात्राओं के पास अधिक संसाधन होते हैं, जैसे व्यक्तिगत रूप से वाहन (स्कूटर, कार आदि), मोबाइल फोन, कम्प्यूटर और इंटरनेट की उपलब्धता, बिजली की उपलब्धता, घर के पास ही पुस्तकों या शैक्षिक सामग्री की दुकान आदि। जबकि ग्रामीण क्षेत्र में ऐसा नहीं होता। आर्थिक रूप से

परिवार कमजोर होने के कारण छात्राओं के पास व्यक्तिगत रूप से वाहन (स्कूटर, कार आदि) नहीं होते, मोबाइल फोन, कम्प्यूटर और इंटरनेट की उपलब्धता भी नहीं होती। गांव–देहात में बिजली भी शहर के अपेक्षाकृत कम पूर्ति होती है। पुस्तकों या शैक्षिक सामग्री के लिए शहर जाना पड़ता है। इतनी संसाधनों की कमी होने के बाद भी ग्रामीण छात्राएं पढ़ रही हैं। इसके साथ ही पुस्तकालय का उपयोग कर रही हैं। ऐसे में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पुस्तकालय से ग्रामीण छात्राओं का शैक्षिक विकास हो रहा है।

5.4.4– ग्रामीण छात्राओं की झिझक कम हो रही है–

सामान्यतः माना जाता है कि ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली छात्राएं बात करने में झिझकती हैं। महाविद्यालयों में पढ़ने से छात्राएं बहुत सीखती हैं और झिझक कम होती है। चित्र संख्या 3, 7, 23 के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि छात्राएं महाविद्यालयों में आकर और पुस्तकालय का उपयोग कर उनकी झिझक समाप्त हो रही है। पुस्तकालय के कर्मचारी उनकी मदद करते हैं इससे ग्रामीण छात्राएं सहज महसूस करती हैं और उनकी झिझक खत्म होती है। यह उनके शैक्षिक विकास में भी लाभप्रद है।

5.4.5– पुस्तकालय के प्रति ग्रामीण छात्राओं में जागरूकता–

ग्रामीण क्षेत्र हमेशा से ही शहर के मुकाबले पिछड़ा रहा है। शहरी छात्राओं के अपेक्षा ग्रामीण छात्राएं बहुत ही कम संसाधनों के साथ शिक्षा ग्रहण करते हैं। इस संबंध में भी जानकारी प्राप्त की गई और उनका विश्लेषण किया गया। अध्ययन में चित्र संख्या 16 के आंकड़ों का विश्लेषण से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि छात्राओं के पास अच्छे संसाधन नहीं है फिर भी छात्राएं पुस्तकालय आती हैं। कोई बस से तो कोई ऑटो से लेकिन फिर भी छात्राएं पुस्तकालय आ रही हैं।

ये सब पुस्तकालय का प्रभाव ही है, कि ग्रामीण छात्राओं के पास स्वयं के संसाधन जैसे स्कूटर, कार आदि नहीं हैं, फिर भी ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय एवं महाविद्यालय जाने के लिए प्रेरित हैं। अधिकतर ग्रामीण छात्राएं ऑटो या बस का उपयोग कर पुस्तकालय एवं महाविद्यालय तक पहुंच रही हैं।

5.4.6– पुस्तकालय से ग्रामीण छात्राएं लाभांवित हो रही हैं–

ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी पुस्तकालयों संख्या शहरी क्षेत्रों में स्थित पुस्तकालयों की संख्या के अपेक्षा बहुत कम या कहें न के बराबर है। ग्रामीण छात्राओं को पुस्तकालय केवल महाविद्यालयों में ही उपयोग करने को मिलता है। इसके बावजूद ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय का उपयोग भी कर रही हैं और यह मानती है कि पुस्तकालय उनके लिए लाभप्रद भी है। ग्रामीण छात्राएं दूसरी छात्राओं को भी पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करती हैं। शोध छात्रा चित्र संख्या 13, 14, और 15 का विश्लेषण करने पर इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि पुस्तकालय से ग्रामीण छात्राओं को लाभ मिल रहा है।

5.4.7– एडेड महाविद्यालयों के पुस्तकालयों की स्थिति अच्छी–

आंकड़ों के विश्लेषण से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंचती है कि अन्य महाविद्यालयों के अपेक्षा एडेड महाविद्यालयों के पुस्तकालयों की स्थिति निजी महाविद्यालयों के पुस्तकालय से ज्यादा अच्छी है। जबकि अन्य पुस्तकालयों की स्थिति अच्छी नहीं है। इसमें पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की संख्या, वहां उपस्थित स्टाफ आदि का विश्लेषण कर निष्कर्ष निकाला।

5.4.8– पंचायतराज महाविद्यालय के पुस्तकालय और ठाकुर राजेश सिंह महाविद्यालय के पुस्तकालय से छात्राएं अधिक अपेक्षा नहीं रखतीं। यहां पुस्तकें बहुत कम हैं और यहां के रखरखाव भी संतुष्टिपूर्ण नहीं है। कई बार पुस्तकाल बंद रहता है, जिसकी वजह से छात्राओं को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है।

5.4.9– एडेड महाविद्यालयों की छात्राएं बेहतर–

एडेड महाविद्यालयों की छात्राएं निजी महाविद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं से बेहतर हैं। क्योंकि यहां की व्यवस्था अन्य से बेहतर है। पुस्तकालयों में उपलब्ध पुस्तकें, स्टाफ, महाविद्ययालयों में शिक्षकों की संख्या आदि छात्राओं को प्रेरित करती हैं।

5.4.10– सर्वाधिक स्नातकोत्तर छात्राए घर पर करती हैं स्वाध्याय–

आंकड़ों के विश्लेषण से शोध छात्रा इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि ग्रामीण क्षेत्र की स्नातक छात्राओं की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की स्नातकोत्तर छात्राएं अधिक स्वाध्याय के लिए घर पर

पढ़ती हैं। स्नातकोत्तर छात्राओं में 63 प्रतिशत घर में स्वाध्याय करती हैं, जबकि 52 प्रतिशत स्नातक की छात्राएं पुस्तकालय में स्वाध्याय करती हैं।

5.5 समस्याएं एवं बाधाएं–

जब भी अध्ययन किया जाता है, तो शोधार्थी कुछ न कुछ समस्याओं या बाधाओं से जूझता है। जब आंकड़ों के संकलन के समय, कहीं साक्षात्कार के लिए जाते समय यात्रा में, अध्ययन क्षेत्र में अवलोकन करते समय, न्यादर्शों की तरफ से उपेक्षा आदि कई तरह से बाधाएं आती हैं, जिससे शोधकर्ता को जूझना पड़ता था। प्रस्तुत अध्ययन में भी कुछ न कुछ समस्याएं, बाधाएं आईं जो इस प्रकार हैं–

1– जब भी आंकड़ों को एकत्रित करने गए, महाविद्यालयों में छात्राएं बहुत ही कम मिल पाती थी। इसलिए बार–बार महाविद्यालय जाना पड़ता था।

2– अध्ययन के लिए सर्वप्रथम छात्राओं को ढूंढना एवं संपर्क कर उनसे सूचना एकत्रित करना एक कठिन कार्य था।

3– आंकड़ों के संकलन के समय जब छात्राओं से प्रश्नावली भरवाने के लिए कहते थे तो थोड़ा झिझक होने के कारण वे तैयार नहीं होती थी। कुछ तो बिल्कुल मना ही कर देती थी और प्रश्नावली भरने से मना कर देती थीं।

4– एक महाविद्यालय की दूरी दूसरे महाविद्यालय से काफी दूर होती थी। ऐसे में यदि दो महाविद्यालयों में जाना हो तो दूसरे महाविद्यालय की छात्राएं घर चली जाती थीं।

5– चूंकि अध्ययन ग्रामीण छात्राओं पर निर्भर था, तो ऐसे में प्रश्नावली भरवाने से पहले यह पूछना पड़ता था कि वे ग्रामीण क्षेत्र में रहती हैं या नहीं। कई बार तो ग्रामीण क्षेत्र की छात्रा प्रश्नावली भरती थी तो उनकी सहेली जो शहर में रह रही हैं, वे भी भरने लगती थी। उनसे पूछने के बाद प्रश्नावली को निरस्त कर हटाना पड़ता था, जिससे कई प्रश्नावली के पत्र खराब हो गए।

6– लखनऊ से इटावा लगभग 225 किलोमीटर दूर है। ऐसे में वहां जाने के लिए ट्रैन या बस का सहारा लेना पड़ता था। कई बार ट्रैन जाते समय या वापस लखनऊ आते समय लेट हो जाती थी।

7– कई बार महाविद्यालयों पुस्तकालय प्रभारी मिल ही नहीं पाते थे। उनसे फोन से संपर्क करना पड़ता था।

5.6 सुझाव

सामाजिक शोध की अपनी सीमाएं होती है। कुछ सामाजिक शोध समाज के छोटे क्षेत्र तक सीमित होते हैं तो कुछ बड़े। इसके बावजूद हर शोध समाज के हर पहलू के लिए परिपूर्ण नहीं हो पाता, इसीलिए नित नए शोध होते हैं। हम हर शोध से कुछ न कुछ सुझाव प्राप्त कर सकते हैं और अन्य शोध कर सकते हैं। इसी प्रकार शोध छात्रा ने भी अपने अध्ययन से संबंधित सुझाव प्रस्तुत किए हैं, जो इस प्रकार हैं–

1. प्रस्तुत अध्ययन सिर्फ इटावा जनपद में किया गया, जो अन्य जनपदों में भी किया जा सकता है।
2. शोध छात्रा के द्वारा किए गए आंकड़ों के विश्लेषण से सिद्ध हुआ है कि पुस्तकालय का प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं पर पड़ रहा है। ऐसे में यदि ग्रामीण क्षेत्रों में और भी पुस्तकालय खोले जाएं तो ग्रामीण छात्राओं को शैक्षिक विकास और अधिक तेजी से हो सकता है।
3. ग्रामीण छात्राओं के लिए पुस्तकालय उपयोग के लिए अलग से समय निर्धारित किया जाए तो सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकता है।
4. ग्रामीण छात्राओं के लिये पुस्तकालय से शहरी छात्राओं की अपेक्षा अधिक पुस्तकें निर्गत होनी चाहिये।
5. पुस्तकालय में सभी पाठ्यक्रम से से संबंधित पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए।
6. पुस्तकालयों में कम्प्यूटर की व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि छात्राओं को पुस्तकें ढूंढने में अधिक समय व्यतीत न करन पड़े।
7. पुस्तकालय में बैठने एवं पढ़ने की साफ–सुधरी व्यवस्था होनी चाहिए, ताकि ग्रामीण छात्राओं का पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की और अधिक इच्छा जागृत हो सके।
8. पुस्तकालयों खुलने का समय महाविद्यालयों के समय सारिणी के अनुसार न होकर छात्राओं के हित के अनुसार होना चाहिए।
9. ग्रामीण पुस्तकालयों में महिला कर्मचारी भी होनी चाहिए, ताकि ग्रामीण छात्राएं पुस्तकालय आने में झिझक महसूस न करें।
10. ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण छात्राओं के विकास हेतु विशेष महिला पुस्तकालय होना चाहिए, जहां सिर्फ महिलाएं पढ़ सकें। इससे उनके परिवार वालों को भी पुस्तकालय भेजने में आपत्ति नहीं होगी और महिलाओं को अध्ययन में आसानी होगी।

ग्रंथ सूची –

पुस्तकें –

1. राय, पारसनाथ (2012–13). अनुसंधान परिचय. आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल.
2. मुकर्जी, रवीन्द्र नाथ. सामाजिक शोध व सांख्यिकी. दिल्लीः विवेक प्रकाशन.
3. कपिल, एच0 के0. (2012). अनुसंधान विधियां, व्यवहारपरक विज्ञानों में. आगराः राखी प्रकाशन आगरा.
4. शर्मा, डा0 बी0 के0., ठाकुर, डा0 यू0 एस0. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान एम0 लिब0 आई0 एस0 सी0 ज्ञान दर्शिका. आगराः वाई0 के0 प्रकाशन, संजय प्लेस.
5. बोरा, मुकेश. एवं अन्य. यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेटः पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान प्रश्न पत्र 2 एवं 3. नई दिल्ली. अरिहन्त प्रकाशन.
6. त्रिवेदी, डा0 आर0एन0. शुक्ला, डा0 डी0पी0. रिसर्च मैथ्डोलॉजी. नई दिल्लीः रिलेर्ल्स शॉप.
7. कुमार, रंजीत. (2017). शोध कार्यप्रणालीः आरंभिक शोधकर्ताओं के लिए चरणबद्ध गाइड, चौथा संस्करण, नई दिल्लीः सेज प्रकाशन.
8. सिंह, अरूण कुमार., मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियां, नई दिल्लीः मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन.
9. गोस्वामी, सुरेन्द्र. पुस्तकालय सामग्री परीक्षण एवं संरक्षण. जयपुरः रावत प्रकाशन.
10. मिश्र, गंगा सागर. (2011). शैक्षिक पुस्तकालय, नई दिल्लीः डिस्कवरी प्रकाशन हाउस.
11. शर्मा, एस0के0. (1999). पुस्तकालय प्रशासन एवं सूचना प्रबंध. नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन.
12. चक्रवर्ती, हरिक्रांति., चंदेल, सुनील सिंह. पुस्तकालय एवं सूचना प्रबंधन, दिल्लीः एस0एस0डी0एन0 पब्लिशर्स एण्ड एएमपी, डिस्ट्रीब्यूटर्स.
13. कुमार, प्रवीण., शर्मा, रेनू. पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, नई दिल्लीः एटलांटिक प्रकाशन.
14. पचौरी, एन0के0. पुस्तकालय सूचना विज्ञान दिग्दर्शन. आगराः उमा प्रकाशन.
15. Walliman, Nicholas. (2006). Social Research Methods. New Delhi: SAGE Publication.
16. Kumar, Dr. C. Rajendra. (2010). Research Methodology. New Delhi: APH Publishing.
17. Murad, Anatol. (1964). What Keynes Means. New Haven: USA, United Printing Services.
18. Sharma, C.K., Singh, Kiran, Library Management, Atlantic Publisher, New Delhi. 2005.
19. Lal, C., Kumar, K. (2005). Understanding Basics of Library and Information Science. Ess Ess Publication.
20. Raju, A.A.N. (2014). A Birds Eye View of Library and Information Science. Ess Ess Publication.
21. Kothari, C.R., Garg, Gaurav. (2014). Research Methodology: Methods and Techniques, 3rd edition. New Delhi: New Age International pvt. Limited.
22. Gupta, K. R. (2008). Poverty in India, New Delhi: Atlantic Publishers & Distributors (P) Ltd.
23. Narula, Uma. (2013). Communication models, New Delhi: Atlantic Publishers & Distributors (P) Ltd.
24. Prasad, Kiran. Communication for Development Reinventing Theory and Action, vol-2. New Delhi: B.R. Publishing Corporation.
25. Prasad, Kiran., Communication for Development Reinventing Theory and Action, Vol-1. New Delhi: B.R. Publishing Corporation.

26. Raghavan, G.N.S. (2005). Development and Communication in India: Elitist Growth and Mass Deprivation, New Delhi: Gian Publishing House.
27. Sinha, Tushar K. (2009). Education for Rural Development, Authorspress, Jawahar Park, Laxmi Nagar, New Delhi.
28. Nayar, D.P. (2014). Education for Rural Development, Shipra Publication, Patparganj.
29. Census of India, Uttar Pradesh, Series-10, part XII-B, Dist Census Handbook, Etawah Village and Town wise, Primary Census Abstract (PCA).
30. NFHS- 2, 1998-99 (2000). National Family Health Survey, India.
31. To Be or Not To Be: Problems in Location Women in Public Policy, Economic and Political Weekly. 42(8).
32. Pareek., Udai and Rao. Behavioural Sciences: A Status Study on Population Research in India, Vol-1. New Delhi: Tata McGrow Hill.

पत्रिकाएं–

1. योजना, नवम्बर 2011, हिन्दी मासिक, 538, योजना भवन, संसद मार्ग,नयी दिल्ली।
2. योजना, दिसम्बर 2011, हिन्दी मासिक, 538, योजना भवन, संसद मार्ग,नयी दिल्ली।
3. योजना, जनवरी 2012 (विशेषांक), हिन्दी मासिक, 538, योजना भवन, संसद मार्ग,नयी दिल्ली।
4. योजना, अप्रैल 2013, हिन्दी मासिक, 538, योजना भवन, संसद मार्ग,नयी दिल्ली।
5. योजना, सितम्बर 2013, हिन्दी मासिक, 538, योजना भवन, संसद मार्ग,नयी दिल्ली।
6. योजना, अप्रैल 2014, हिन्दी मासिक, 538, योजना भवन, संसद मार्ग,नयी दिल्ली।
7. कुरुक्षेत्र, अप्रैल 2013, कमरा न0 655, 'ए' विंग, गेट न0 5, निर्माण भवन, ग्रामीण विकास मंत्रालय, नई दिल्ली।
8. कुरुक्षेत्र, दिसम्बर 2015, कमरा न0 655, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रायल, सूचना भवन, सी0जी0ओ0 काम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली।

इंटरनेट वेबसाइट –

1. https://hi.wikipedia.org/wiki/ब्रज भाषा
2. http://censusindia.gov.in/
3. http://www.kanpuruniversity.org
4. https://www.mapsofindia.com/maps/uttarpradesh/tehsil/etawah.html
5. www.census2011.co.in/census/district/532-etawah.html
6. http://www.kanpuruniversity.org
7. http://mp.gov.in/web/guest/tourism11#5
8. http://hdl.handle.net/10603/9463
9. http://hdl.handle.net/10603/50433
10. http://hdl.handle.net/10603/85645
11. http://hdl.handle.net/10603/79884
12. http://hdl.handle.net/10603/24241
13. http://hdl.handle.net/10603/69885

14. http://hdl.handle.net/10603/12665
15. http://hdl.handle.net/10603/165971
16. http://hdl.handle.net/10603/85006
17. http://hdl.handle.net/10603/50816
18. http://hdl.handle.net/10603/5104
19. http://hdl.handle.net/10603/13924
20. http://hdl.handle.net/10603/127594
21. http://hdl.handle.net/10603/96448
22. http://hdl.handle.net/10603/20961
23. http://shodhganga.inflibnet.ac.in/
24. http://swd.up.nic.in
25. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%201.pdf
26. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%2011.pdf
27. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%2013.pdf
28. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%208.pdf
29. http://swd.up.nic.in/120809/SWD%20Budget%20Schemes/Schemes/point%207.pdf
30. https://en.wikipedia.org/wiki/Etawah
31. http://www.trsgroup.co.in/index.php
32. https://www.prokerala.com/education/th-rajesh-singh-mahavidhayalya-etawah-49743.html
33. https://en.wikipedia.org/wiki/Karm_Kshetra_Post_Graduate_College
34. https://en.wikipedia.org/wiki/Chaudhary_Charan_Singh_Post_Graduate_College
35. https://en.wikipedia.org/wiki/Panchayat_Raj_Government_Mahila_College,_Etawah
36. http://www.icbse.com/colleges/p-r-govt-mahila-college/6536/2
37. https://en.wikipedia.org/wiki/Janta_College_Bakewar,_Etawah

महाविद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं द्वारा भरवाई गई प्रश्नावली का प्रारूप –

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ, उ0 प्र0

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

विषयः ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं द्वारा उपयोग किये जाने वाले पुस्तकालय के प्रभावों का अध्ययनः इटावा जनपद के महाविद्यालयों के परिप्रेक्ष्य में

अनुसंधानकर्ती द्वारा चयनित न्यादर्श (ग्रामीण छात्राओं) द्वारा दी जाने वाली सूचनाओं के लिये

प्रश्नावली

प्रश्नों के उत्तर देने वाली छात्रा का सामान्य विवरण –

नामः– ..... पाठ्यक्रमः– .....वर्ष.....

आयुः–..... वैवाहिक स्थितिः– विवाहित ☐ अविवाहित ☐

पताः– ..... महाविद्यालय का नामः–.....

....

शोध पर्यवेक्षक

डॉ0 शिल्पी वर्मा,
प्रोफेसर, पुस्तकालय एवं सूचना
विज्ञान विभाग, बी.बी.ए.यू., लखनऊ।

शोधकर्ती

प्रीती, छात्रा–एम0फिल0 (2016–18)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान
विभाग, बी.बी.ए.यू., लखनऊ।

✦ सामान्य निर्देश ✦

1 इस प्रश्नावली में पूछे प्रश्न के उत्तर के लिये दिए गए विकल्प पर सही ☑ का चिह्न लगाना है।
2 इस प्रश्नावली का मुख्य उद्देश्य आपके द्वारा उपयोग किए जाने वाले पुस्तकालय का अध्ययन करना है ।
3 इस प्रश्नावली मे कोइ भी प्रश्न 'सही' या 'गलत' नहीं है, सभी का अपना दृष्टिकोण होता है, इसलिए आप बेझिझक उत्तर दें।
4 हो सकता है कि कुछ प्रश्न आप पर लागू न हो, पर फिर भी स्वयं को उस परिस्थिति में रख कर उत्तर दें।
5 प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न में विकल्प है, परंतु अगर आप प्रश्न के किसी विकल्प से सहमत नहीं हैं तो अपना स्वयं का विकल्प दे सकते हैं।

भाग – I

प्रश्नों के उत्तर के लिए विकल्प के सामने सही ☑ का चिह्न लगाएं –

1. क्या आप पुस्तकालय का उपयोग करती हैं ?
   (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
2. क्या आपको पुस्तकालय से पाठ्यक्रम सम्बंधी पुस्तक/कें प्राप्त होती है/हैं ?
   (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
3. क्या पुस्तकालय कर्मचारी आपकी पुस्तक/कें ढूंढने में मदद या अन्य सहयोग करते हैं ?
   (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
4. क्या आपके पुस्तकालय में आपकी भाषा से सम्बन्धित पुस्तक/कें मिलती है/हैं
   (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
5. क्या आप पुस्तकालय में शैक्षिक पाठ्यक्रम से अलग पुस्तक/कें भी पढ़ती हैं ?
   (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
6. क्या आपको पुस्तकालय में पुस्तक आसानी से मिल (निर्गत हो) जाती हैं ?
   (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
7. क्या आपके पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था है ?
   (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
8. आपके नजरिये से क्या हर महाविद्यालय में पुस्तकालय होना चाहिए?
   (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
9. जब आप घर पर अध्ययन करती हैं, तो घर के कामों की वजह से अध्ययन में परेशानी आती है ?
   (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
10. जब आप पुस्तकालय में अध्ययन करती हैं, तो अध्ययन में कोई परेशानी आती है ?
    (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
11. क्या घर पर पढ़ाई करने से अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है ?
    (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
12. क्या पुस्तकालय में पढ़ाई करने से अधिक अध्ययन सामग्री याद होती है ?
    (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
13. यदि कोई पुस्तकालय आपके घर/गावं के पास हो तो डिग्री लेने के बाद नौकरी के लिए वहां अध्ययन करेंगी ?
    (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
14. क्या आपको लगता है कि पुस्तकालय लाभदायक है ?
    (A) हां ☐ (B) नहीं ☐
15. जो छात्राएं पुस्तकालय नहीं जाती, उन्हें आप पुस्तकालय जाने के लिए प्रेरित करती हैं ?
    (A) हां ☐ (B) नहीं ☐

========== भाग – II ==========

प्रश्नों के उत्तर के लिए विकल्प के सामने सही ☑ का चिह्न लगाएं –

1. आप पुस्तकालय कैसे जाती हैं ?
   (A) साइकिल से ☐ (B) ओटो/बस से ☐
   (C) पैदल ☐ (D) अन्य ☐

2. आप पुस्तकालय में कितना समय व्यतीत करती हैं ? 3

(A) 30 मिनट या उससे कम ☐ (B) 1 घंटा लगभग ☐

(C) 2 घंटे या अधिक ☐ (D) पुस्तकालय नहीं जाते ☐

3. आप पुस्तकालय में किस प्रकार की पाठ्य सामग्री पढ़ती हैं ?

(A) मंनोरंजन से संबंधित ☐ (B) शैक्षिक पाठ्यक्रम से संबंधित ☐

(C) रोजगार से संबंधित ☐ (D) अन्य ☐

4. आपको पुस्तकालय से कितने दिन के लिये पाठ्य सामग्री मिलती है

(A) 1 सप्ताह के कम ☐ (B) 1 सप्ताह के लिए ☐

(C) 2 सप्ताह के लिए ☐ (D) 1 महीना या उससे अधिक ☐

5. आप पुस्तकालय से सप्ताह में कितनी पुस्तक/कें निर्गत करा सकते हैं ?

(A) केवल एक पुस्तक ☐ (B) केवल दो पुस्तकें ☐

(C) तीन पुस्तकें ☐ (D) चार या उससे अधिक ☐

6. स्वाध्याय के लिए आपको कहां पढ़ना अधिक पसंद है ?

(A) पुस्तकालय में ☐ (B) घर में ☐

(C) बगीचे में ☐ (D) अन्य किसी स्थान पर ☐

7. यदि कोई विशेष पुस्तक लेनी हो तो आप क्या करते हैं ?

(A) पुस्तकालयाध्यक्ष को बताते हैं ☐ (B) अपने शिक्षक को बताते हैं ☐

(C) अपने विभागाध्यक्ष को बताते हैं ☐ (D) बताते नहीं, स्वयं बाजार से खरीद लेते हैं ☐

8. पुस्तकालय जाने के लिए आपको कौन अधिक प्रेरित करते है ?

(A) पुस्तकालयाध्यक्ष ☐ (B) आपके विषय के शिक्षक ☐

(C) माता–पिता या रिश्तेदार ☐ (D) अन्य ☐

9. पुस्तकालय जाने से सबसे अधिक क्या लाभ मिला ?

(A) पाठ्यक्रम सामग्री आसानी से मिलने लगी ☐

(B) पाठ्यक्रम के अलावा अन्य शैक्षिक सामग्री जैसे पत्रिकाएं, उपन्यास, कॅरियर पुस्तकें आदि पढ़ने की भी इच्छा जागृत हुई ☐

(C) पहले के मुकाबले अब अधिक पढ़ने का मन करता है ☐

(D) कोई लाभ नहीं मिला ☐

10. आपके महाविद्यालय के पुस्तकालय में आपको क्या पसंद है ?

(A) पुस्तकों की उपलब्धता, संख्या और उनका रख–रखाव ☐

(B) बैठकर पढ़ने की व्यवस्था, बिजली, फर्नीचर, कम्प्यूटर आदि ☐

(C) पुस्तकालय के कर्मचारियों का व्यवहार ☐

(D) कुछ भी पसंद नहीं ☐

साक्षात्कार के लिए तैयार की गई प्रश्नावली का प्रारूप –

बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ, उ0 प्र0

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

विषयः ग्रामीण क्षेत्रों की छात्राओं द्वारा उपयोग किये जाने वाले पुस्तकालय के प्रभावों का अध्ययनः इटावा जनपद के महाविद्यालयों के परिप्रेक्ष्य में

चयनित महाविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष अथवा प्रभारी द्वारा दी जाने वाली सूचनाओं के लिये

साक्षात्कार प्रश्नावली

साक्षात्कार प्रश्नावली के उत्तर देने वाले पुस्तकालयाध्यक्ष का विवरण –

नामः– ..... पदः– .....

योग्यताः– ..... फोन न0/ई–मेलः– .....

महाविद्यालय का नामः–.....

.....

शोध पर्यवेक्षक

प्रो0 शिल्पी वर्मा,
प्रोफेसर, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, बी.बी.ए.यू., लखनऊ।

शोधकर्ती

प्रीती, छात्रा–एम0फिल0 (2016–18)
पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, बी.बी.ए.यू., लखनऊ।

✦ सामान्य निर्देश ✦

1. इस साक्षात्कार प्रश्नावाली में कुल 10 प्रश्न हैं, जिनके माध्यम से आपसे ऐसी जानकारी एकत्रित करना है जो शोध से संबंधित है।
2. इस साक्षात्कार अनुसूची का मुख्य उद्देश्य आपसे प्राप्त हो सकने वाली विषयानुरूपी जानकारियां हैं, जो शोध के अध्ययन के लिए लाभकारी हो सकती हैं एवं आकड़ों का काम कर सकती हैं।
3. यदि कोई प्रश्न आपके पद की सीमा से बाहर हो, फिर भी उत्तर देने की कृपा करें ताकि अध्ययन को स्पष्ट रखा जा सके।
4. शोध छात्रा आपके पद की गरिमा और कीमती समय को समझती है, इसलिए आपका अधिक समय नहीं लिया जाएगा।

:: साक्षात्कार के लिए निर्धारित प्रश्नावली ::

प्रश्न 1 :– आपके महाविद्यालय के पुस्तकालय का खुलने एवं बंद होने का समय क्या है ?

.....

.....

.....

प्रश्न 2 :– आपके पुस्तकालय का निर्माण कब हुआ ?

.....

.....

.....

प्रश्न 3 :– आपके पुस्तकालय में आपके अलावा कितने सहयोगी कार्यरत हैं ?

.....

.....

.....

प्रश्न 4 :– आपके पुस्तकालय में कितनी पुस्तकें उपलब्ध हैं ?

.....

.....

.....

प्रश्न 5 :– आपके पुस्तकालय में कितने सेक्शन हैं ?

.....

.....

.....

प्रश्न 6 :– क्या ग्रामीण छात्राएं पुस्तकों के संबंध में आपको सुझाव देती हैं ?

.....

.....

.....

प्रश्न 7 :– आपके पुस्तकालय में पुस्तकों के अलावा और क्या पाठ्य सामग्री उपलब्ध है ?

.....

.....

.....

प्रश्न 8 :– आपके पुस्तकालय में कौन–कौन सी सेवाएं हैं ?

.....

.....

.....

प्रश्न 9 :– क्या आप विशेषकर ग्रामीण छात्राओं को पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं ?

.....

.....

.....

प्रश्न 10 :– ग्रामीण छात्राएं बात करने में झिझकती हैं, उनकी झिझक दूर करने के लिए आप और आप का स्टाफ किस प्रकार के कदम उठाता है ?

.....

.....

.....

शोध छात्रा द्वारा एकत्रित किए आंकड़ों का सारणीयन –

	सभी प्रश्नों के उत्तर						
	भाग – 1						
चार्ट संख्या	प्रश्न संख्या / विकल्प	A	B	C	D	E	TOTAL
1	Q1	200	0				200
2	Q2	154	46				200
3	Q3	123	77				200
4	Q4	125	75				200
5	Q5	79	121				200
6	Q6	131	69				200
7	Q7	148	52				200
8	Q8	197	3				200
9	Q9	121	79				200
10	Q10	45	155				200
11	Q11	142	58				200
12	Q12	69	131				200
13	Q13	186	14				200
14	Q14	200	0				200
15	Q15	184	16				200
	भाग – 2						
चार्ट संख्या	प्रश्न संख्या	A	B	C	D	E	TOTAL
16	Q16	32	104	49	15		200
17	Q17	60	70	46	0	24	200
18	Q18	1	180	5	14		200
19	Q19	46	93	28	22	11	200
20	Q20	69	115	1	4	11	200
21	Q21	88	101	8	3		200
22	Q22	84	29	5	82		200
23	Q23	14	121	51	14		200
24	Q24	39	88	38	35		200
25	Q25	93	56	14	37		200

	स्नातकोत्तर छात्राओं द्वारा दिए उत्तर						
चार्ट संख्या	प्रश्न संख्या	**A**	**B**	**C**	**D**	**E**	**TOTAL**
26	Q11	79	21				100
27	Q12	23	77				100
28	Q13	94	6				100
29	Q17	33	33	21	0	13	100
30	Q18	1	86	4	9		100
31	Q21	36	63	0	1		100
32	Q22	28	19	1	52		100
33	Q23	7	57	26	10		100
34	Q24	22	30	21	27		100
35	Q25	41	28	6	25		100
	स्नातक छात्राओं द्वारा दिए उत्तर						
चार्ट संख्या	प्रश्न संख्या	**A**	**B**	**C**	**D**	**E**	**TOTAL**
36	Q11	63	37				100
37	Q12	46	54				100
38	Q13	92	8				100
39	Q17	27	37	25	0	11	100
40	Q18	0	94	1	5		100
41	Q21	52	38	8	2		100
42	Q22	56	10	4	30		100
43	Q23	7	64	25	4		100
44	Q24	17	58	17	8		100
45	Q25	52	28	8	12		100

चित्र तालिका –

– इटावा का मानचित्र

– इटावा में ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र में रहने वाले निवासियों का अनुपात।

– जनता महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

– कर्म क्षेत्र महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

– पंचायत राज राजकीय महिला महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

– ठा0 राजेश सिंह महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

– चौधरी चरण सिंह महाविद्यालय, इटावा, उत्तर प्रदेश।

Figure 1- ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय का उपयोग

Figure 2- पुस्तकालय से मिलने वाली पाठ्य सामग्री

Figure 3- पुस्तकालय कर्मचारियों द्वारा की जाने वाली मदद एवं सहयोग

Figure 4- पुस्तकालय में भाषा संबंधी पुस्तकों की उपलब्धता

Figure 5 – शैक्षिक पाठ्यक्रम से अलग पुस्तकों का अध्ययन

Figure 6 - पुस्तकालय से ग्रामीण छात्राओं को पुस्तकें प्राप्त होना

Figure 7 - ग्रामीण छात्राओं के पुस्तकालय में बैठकर पढ़ने की व्यवस्था

Figure 8 - महाविद्यालय में पुस्तकालय के प्रति दृष्टिकोण

Figure 9 - घरेलू कार्यों के साथ ग्रामीण छात्राओं का अध्ययन

Figure 10 - पुस्तकालय में अध्ययन के दौरान होने वाली परेशानी

Figure 11 - घर में अध्ययन करने का प्रभाव

Figure 12 - पुस्तकालय में अध्ययन करने का प्रभाव

Figure 13 - घर के पास पुस्तकालय के संबंध में विचार

Figure 14 - पुस्तकालय के लाभदायक होने पर विचार

Figure 15 - ग्रामीण छात्राओं द्वारा पुस्तकालय के प्रति प्रेरित करना

Figure 16 - महाविद्यालय या पुस्तकालय जाने का संसाधन

Figure 17 - पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय

Figure 18 - पुस्तकालय में पढ़ी जाने वाली पाठ्य सामग्री

Figure 19 - पुस्तकालय से मिलने वाली पाठ्य सामग्री की समयसीमा

Figure 20 - पुस्तकालय से मिलने वाली पाठ्य सामग्री की संख्या

Figure 21 - स्वाध्याय के लिए पसंदीदा स्थान

Figure 22 - छात्राओं द्वारा किसी विशेष पुस्तक के संदर्भ में निर्णय

Figure 23 - पुस्तकालय जाने के लिए मिलने वाली प्रेरणा

Figure 24 - पुस्तकालय जाने से सर्वाधिक मिलने वाला लाभ

Figure 25 - पुस्तकालय में पसंद की जाने वाली व्यवस्था

Figure 26 - घर में अध्ययन करने का प्रभाव

Figure 27 - पुस्तकालय में अध्ययन करने का प्रभाव

Figure 28- घर के पास पुस्तकालय के संबंध में विचार

Figure 29 - पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय

Figure 30 - पुस्तकालय में पढ़ी जाने वाली पाठ्य सामग्री

Figure 31- स्वाध्याय के लिए पसंदीदा स्थान

Figure 32- छात्राओं द्वारा किसी विशेष पुस्तक के संदर्भ में निर्णय

Figure 33 - पुस्तकालय जाने के लिए मिलने वाली प्रेरणा

Figure 34- पुस्तकालय जाने से सर्वाधिक मिलने वाला लाभ

Figure 35 - पुस्तकालय में पसंद की जाने वाली व्यवस्था

Figure 36 - घर में अध्ययन करने का प्रभाव

Figure 37 - पुस्तकालय में अध्ययन करने का प्रभाव

Figure 38 - घर के पास पुस्तकालय के संबंध में विचार

Figure 39 - पुस्तकालय में व्यतीत किया जाने वाला समय

Figure 40 - पुस्तकालय में पढ़ी जाने वाली पाठ्य सामग्री

Figure 41 - स्वाध्याय के लिए पसंदीदा स्थान

Figure 42 - छात्राओं द्वारा किसी विशेष पुस्तक के संदर्भ में निर्णय

Figure 43 - पुस्तकालय जाने के लिए मिलने वाली प्रेरणा

Figure 44 - पुस्तकालय जाने से सर्वाधिक मिलने वाला लाभ

Figure 45 - पुस्तकालय में पसंद की जाने वाली व्यवस्था

आंकड़ों के संकलन के दौरान ली गई तस्वीरें –

राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय

जनता कालेज बकेवर इटावा
डा. रामेश सिंह महाविद्यालय

——— + ——— + ———